

# Inter Disciplinary International Conference

on  
Academic Research and Innovation in Teaching  
&  
Arising Inclination in Professional Education

(ARIT – AIPE 2019)

27<sup>th</sup> - 28<sup>th</sup> December, 2019

Conference Proceeding Editors

## EDITOR

Prof. R. D. Chandak

Dr. J. M. Chatur

## CO-EDITORS

Prof. Y. M. Patil

Prof. S. S. Kane

Prof. U. R. Kantode

Prof. A. S. Kalekar

Prof. H. A. Bharmal

Prof. S. R. Batulwar

Prof. M. P. Shende

Prof. K. S. Panpaliya

Prof. S. S. Malani

  
Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera



  
Librarian  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera

No part of this Special Issue shall be copied, reproduced or transmitted in any form or any means, such as Printed material, CD – DVD / Audio / Video Cassettes or Electronic / Mechanical, including photo, copying, recording or by any information storage and retrieval system, at any portal, website etc; Without prior permission.

## **Aayushi International Interdisciplinary Research Journal**


Peer Review and Indexed Journal (IMPACT FACTOR 5.707)

ISSN 2349-638x

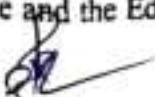
Special Issue No.61

### **Disclaimer**

Research papers published in this Special Issue are the intellectual contribution done by the authors. Authors are solely responsible for their published work in this special Issue and the Editor of this special Issue are not responsible in any form.

  
Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera



  
Librarian  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera

## CHIEF PATRONS

Hon'ble Shri. Prakash Jajoo

President, Harikisan Jajoo Education Sanstha, Yavatmal

Hon'ble Shri. Jagdishji Wadhvani

President, Yavatmal Zilha Vikas Samiti, Yavatmal

## PATRONS

Prof. R. D. Chandak

Principal, College Of Management And Computer Science, Yavatmal

Dr. J. M. Chatur

Principal, Smt. Nankibai Wadhvani Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

## MENTORS

Hon'ble Shri. Aashish P. Jajoo

Secretary, Harikisan Jajoo Education Sanstha, Yavatmal

## CONVENER

Prof. A. K. Shingarwade (IQAC Coordinator),


Dr. N. D. Nalode

## CO-CONVENER

Prof. S. N. Velurkar

Prof. A. B. Payghan

Prof. N. D. Autkar

  
Principal  
Narayanrao Mahavidyalaya  
Yavatmal



  
Principal  
Narayanrao Mahavidyalaya  
Yavatmal

Sr. No.	Name of the Researcher	Title of the Paper	Page No.
1.	Shri Arvind Sambhajl Pazare	The Library's Role in Teaching and Learning	1
2	Mr. Yogesh Marotrao Patil Mr. Umesh R.Kantode	Analysis Of 2D Geometric Transformation In Computer Graphics	4
3.	Mr. Husaln Anwarali Bharmal	A Study Of Impact Of Demonetisation On Small Medium Entreprize (SME)	9
4.	Mr. Ritesh D. Chandak	A Need Of Financial Literacy For The Success Of Financial Inclusion	12
5.	Uday N. Manjre Vijay V. Pande	Technology Enhance High Performance And Mass Participation In Sports	16
6.	A.K. Shingarwade Dr. P.N. Mulkalwar P. R. Garudi	Product Recommender Systems For E-Commerce And Their Limitations	18
7.	Mrs. Shital Yogesh Patil Mr. Yogesh Marotrao Patil	Need Of Digital Learning In Rural Areas	25
8.	Anurag Mohod Dr. Mahek Iram Qureshi	CSR Initiatives Of Business Enterprises With Special Reference To Amravati City	29
9.	Dr.Prashant.P.Karekar	Critical Evaluation Of Medical Tourism In India. Opportunity And Threats	35
10.	Prof. Pratiksha D. Kawalkar	A Review On Study Of E-Commerce And Its Impact On Market And Retailers' In Yavatmal	41
11.	Komal S. Panpaliya	A Review On Consumer Attitude And Perception Towards Green Product	45
12.	Surbhi M. Darda	A Review On Formulation Of Strategies For Developing E-Enterprises In Today's Era With Reference To Small Town.	49
13.	प्रा. डॉ. सुनिल एन. देरे	विपणनामध्ये ई-वाणिज्य व ई-व्यापाराचे फायदे	52
14.	Prof. Sudhir N. Velukar	Some Applications Of Boolean Algebra In Switching Circuits	55
15.	Dr.G.P.Urkunde	Role Of Libraries In Higher Education In India	61
16.	Dr. Milind B. Ghangare	Information Use Pattern Of Undergraduate Students Of Aniket College Of Social Work Wardha, Maharashtra	64



268.	डॉ. ज्योति जुनगरे डॉ. आशीष बिल्लौरे	क्रीडा चिकित्सा : उपचार व शोध का नया क्षेत्र	882
269.	डॉ. सारीका एन.दांडगे (बोदडे)	स्वयंरोजगार : वाढत्या बेरोजगारीवरील एक उपाय	885
270.	Dr. F. N. Mahajan	E-Commerce, E-Business and Recent Trends in Communication Sector	887
271.	Dr. V. K. Mahulkar	Corporate Social Responsibility And Sustainable Development	893
272.	डॉ. अश्रु जाधव	बालकाव्दारे मोबाईल फोनचा गैरवापर	899
273.	Dr.T. K. Kanthale	New Trends In English Language and Literature	902
274.	प्रा. स्वाती सरकटे	ग्रामीण विभाग में शिक्षा एवं सहकारिता का अभाव	905
275.	Dr. Rajesh G. Maske	ESL Teacher's Role In Teaching Of English Language In Rural Area	907
276.	डॉ. दीपक द. कोदुरवार	पर्यावरणाच्या जाणीव जागृतीबाबत विद्यार्थी व शिक्षक यांच्यात रुजवावयाची मूल्य एक अभ्यास	909
277.	Prof. Ms. Deepa Sathe	A Review On Effect Of Online Games On School Students	912
278.	Dr. Nikhilesh Nalode	New Trends In Music	916
279.	Dr. S. P. Nimbhorkar	Usage of Information and Communication Technology In Teaching and Learning and it's Barriers	920
280.	Dr. Rahul R. Dhuldhule	International & National Standard Open Source Digital Library Software's: An Overview	923
281.	Nilesh Digamber Autkar	Recent trends in English Language Teaching and Learning	928
282.	Dr.Dipak Ulemale	Peter Handke's linguistic Ingenuity	932
283.	प्रा. डॉ. संतोष बनसोड	रासायनिक और जैविक युद्ध और उसका विश्व की राजनीति, अर्थव्यवस्था एवं समाजव्यवस्था पर परिणाम : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	934
284.	Bhavna Wasnik	Scope In Food Science and Nutrition: Innovations and Emerging Technologies	940
285.	Dr.Anjali Chandrakant Pande	Need and Scope of Innovation in Home Economics	942
286.	Ravindra D. Kene Dr. P. N. Mulkarwar	Bank and ATM (Automatic Teller Machine) Security: An overview	944

Librarian

Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera



रासायनिक और जैविक युद्ध और उसका विश्व की राजनीति, अर्थव्यवस्था एवं समाजव्यवस्था पर परिणाम : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रा. डॉ. संतोष बनसोड

विभाग प्रमुख, इतिहास विभाग

श्री. नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा (रित्ये), अमरावती.

विश्वयुद्ध के दौरान साम्राज्यवादी, पूँजीवादी, शोषक ताकतों ने बड़े व्यापक पैमाने पर रासायनिक एवं जैविक हथियारों का इस्तेमाल किया। जैविक हथियार किसी भी मुल्क की अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था को बहुत बड़ी घोट पहुँचा सकते हैं। और इसका विश्व की राजनीति, अर्थव्यवस्था एवं समाजव्यवस्था पर जो अत्यंत गहरा प्रभाव पडा। और यह आज तक जारी है। जिससे साम्राज्यवाद एवं पूँजीवाद का आतंकवादी चरित्र उजागर होता है। उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन करना प्रस्तुत शोध निबंध का मूल उद्देश है।

दुनियाँ के सभी जंग पूँजीवादी लूट-खसोट के लिये हुए थे। शोषकों ने ही किया रासायनिक हथियारों का इस्तेमाल!

जर्मन वैज्ञानिक फिट्ज़ हेबर (Fritz Haber) ने प्रथम विश्वयुद्ध के समय रासायनिक हथियारों की तरफ़ी में अहम किरदार निभाया। 22 अप्रैल 1915 को बेल्जियम में उसके साथ लड़ रही फ्रेंच और अल्जिरियन सेना पर जर्मन सेना ने 5730 क्लोरिन गैस के सिलेंडरों के वॉल्व खोल दिये जिससे 180 टन क्लोरिन गैस फैली। पहले दो दिनों में 5000 दोस्त मुल्कों की सेना के जवान मारे गए, 10,000 अपाहिज हुए जवानों में से आधे हमेशा के लिए अपाहिज हुए। 31 मई 1915 को हेबर ने पूर्वी मोर्चे पर रूसियों के खिलाफ क्लोरिन हमला करवाया। ब्रिटिश सेना ने बेल्जियम के लुस नामक जगह पर क्लोरिन गैस का हमला किया जिसमें 5500 सिलेंडरों का इस्तेमाल किया गया। 14 अक्तूबर 1918 को ब्रिटिश सेना ने मस्टर्ड गैस का इस्तेमाल जर्मन सेना के वरविक नाम के बेल्जियम के गाँव पर किया। इसमें एक लाख लोग मारे गये और दस लाख जख्मी हुए। अल्लॉफ हिटलर इस गैस के असर में आया और जर्मनी ने फौरन युद्धबंदी लागू कर दी। सन 1919 में जर्मनी ने हेबर को उसके रसायनशास्त्र में योगदान के लिये नोबेल प्राईज का ऐलान किया।

युद्धों में गैसों की तीन किस्मों का इस्तेमाल हुआ है। (1) Asphyxiants क्लोरिन और फोसजिन (धिवेहमदम) फेफड़ों पर असर करती है, (2) Blistering agent इनमें अलग अलग तरह की मस्टर्ड गैस शामिल है, (3) Blood agents इनमें हायड्रोजन सायनाईड शामिल है जिसे 'प्रुसिक एसिड' या हायड्रो सायनिक एसिड भी कहा जाता है। यह रक्त में ऑक्सिजन को रूकावट करता है। ब्रिटेन ने आरसेनिक पर आधारित गैस "बी" बनाई। यह गैस गैसमास्क से भी छनकर जिस्म में पहुंचकर इन्सान को भयानक दर्द पहुंचाती थी। जर्मनी ने 'वेरफर 1918' नामक गैस बनाई। अमेरिका ने चमड़ी पर छाले लाने वाली गैस "लेविसाईट" बनाई। जर्मनी के हेबर ने 'पेस्ट कंट्रोल' के प्रयोगों के नाम पर जहरीली गैसों की खोज जारी रखी। हेबर ने एक ऐसा पदार्थ बनाया जो प्रुसिक अॅसिड गैस छोडता था। इस पदार्थ को 'झिकलॉन बी' (zyklon B) नाम दिया गया।

जर्मन नाजीयों ने इसका इस्तेमाल 20 साल बाद अपने 'एक्सटरमिनेशन कॅम्पस' में कल्लेआम के लिये किया। रूस के गृहयुद्ध में जहरीली गैसों का इस्तेमाल किया गया। ब्रिटेन ने अफगानिस्तान और अपने दिगर उपनिवेशों की जनजातियों की बगावत दबाने के लिये इसका इस्तेमाल किया। जपानियों ने भारी तादाद में मस्टर्ड गैस और लेविसाईट, रासायनिक बम, सायनाईड गैस छोडने वाले टैंक विरोधी बम, दिगर हथियार और आदमियों के लिये ही नहीं बल्कि जंग में उनके घोडों, उंटों और कुत्तों के बचाव के उपकरण बनाये।

जर्मन केमिस्ट गेरहार्ड स्त्रााडर (ळमतींतक "बीतंकमत) ने दिसंबर 1938 में घातक 'ऑरगॅनो फॉस्फेट कम्पाउंड' (Organo Phosphate Compound) बनाया जिसका नाम उसने 'टॅब्युन' (Tabun) रखा। जब इसकी एक बुँद नीचे गिर गई और उसकी पुतलियाँ सिकुडकर सुई की नोक बराबर रह गई और उसे सांस लेने में बेहद दिक्कत हुई। अगर कुछ और बुँदे गिर गई होती तो उसका बचना मुश्किल था। टॅब्युन को 'नर्क गैस' कहा गया क्योंकि ये 'नर्क सायनेप्सेस' पर असर करती थी। इसकी बेहद कम तादाद इन्सान की जान लेने के लिये काफी है। गैस मास्क भी इससे बचाव नहीं कर पाता क्योंकि यह गैस चमड़ी से सोख ली जाती है। सन 1938 में स्त्रााडर ने इससे भी खतरनाक गैस की खोज की जिसे 'सॅरिन' (Sarin) के नाम से जाना गया।

Principal

Principal



इस दौरान इटली ने अपने अंबिसिनिग्या (अभी का नाम इथोपिया) की मुहिम में 'सरस्टर्ज' गैस को हवाई जहाजों से गैस बमों के रूप में इस्तेमाल किया। सन 1937 में जपानियों ने जाहरीली गैसों का चीनियों के खिलाफ इस्तेमाल किया। द्वितीय विश्व युद्ध में चर्चिल ने बड़े ही बेमन से रासायनिक हमले की योजना की कुर्बानी दी क्योंकि इसके लिये जरूरी हवाई जहाज उसके पास नहीं थे। हिटलर ने इस डर से रासायनिक हथियारों को इस्तेमाल नहीं किया कि दोस्त मुल्क उससे भी बड़ा रासायनिक हमला कर सकते थे।

अमेरिका ने इतने गैस हथियार पैदा किये जितनों का सभी मुल्कों ने मिलकर प्रथम विश्वयुद्ध में इस्तेमाल तक नहीं किया था। जर्मनी ने अपने टैंब्युन, सैरीन और सोमन गैस के सांकेतिक नाम GA, GB व GD रखे थे। ब्रिटिश सेना ने सन 1940 के आखिर में और 1950 की शुरुवात में अमेरिका ने बनाई '245टी' नामक फसल को खत्म करने वाले रसायन का इस्तेमाल मलाया के कम्युनिस्ट विद्रोहियों के खिलाफ किया। ब्रिटिश सेना ने कम्युनिस्ट विद्रोहियों के इलाकों की सभी वनस्पतियों पर '245टी' का विमानों से छिड़काव किया। सन 1960 के दशक में अमेरिका ने ब्रिटेन की मलाया में मिली कामयाबी को देखकर कम्युनिस्टों के खिलाफ बड़े पैमाने पर 245टी का इस्तेमाल किया जिससे व्हेतकांगो को जंगल में घूपना, जंगल में फसल उगाना नामुमकिन हुआ। इन रसायनों के इमों पर हरा, गुलाबी, सफेद, जामुनी, निला और औरिज रंग के संकेत शब्द दिये गये थे। गुलाबी रसायन 245टी और कम तादाद में डायऑक्सिन (dioxin) का मिश्रण था। व्हेतनाम में सन 1968 में इतना ज्यादा वनस्पती विरोधी रसायन (herbicide) इस्तेमाल किया गया कि अमेरिका में खेती के लिये ओर बेकार पौधों के खात्मे के लिये रसायन कम पड गए। बड़े पैमाने पर औरिज रसायन के इस्तेमाल से व्हेतनामी बच्चों में जन्म से खराबियाँ पैदा हुई। इस रसायन की जद में आये लोगों में कॅन्सर पैदा हुआ। अमेरिका ने चमडी पर भयानक जलन पैदा करने वाले \*CS\* नामक रसायन का इस्तेमाल व्हेतकांगो को उनके घूपने के ठिकानों से बाहर निकालने के लिये किया।

अमेरिका ने व्हेतनाम के देहाती इलाके में सन 1961-71 के दौरान 42 मिलियन लीटर जैवरासायनिक पदार्थ छिड़के जिसकी वजह से 50 मिलियन व्हेतनामी नागरिक आज तक प्रभावित है। उनमें से 6 लाख लोग संगीन बिमारियों के शिकार है। अमेरिकी जैविक और रासायनिक कार्यक्रम के मुताबिक दक्षिण अफ्रिका के काले अवाग के खिलाफ अमेरिका ने जैविक और रासायनिक हमले किये।

केन्ट की इनवायरनमेंटल फाउंडेशन और एज्युकेशनल फाउंडेशन ऑफ अमेरिका के डॉ. सुजेन मार्शल के अध्ययन के मुताबिक अमेरिका के पास चार अहम रासायनिक हथियारों के भंडार है

- (1) मस्टर्ड गैस या एजन्ट एच जिससे दम घुट जात है और इससे बच गए लोगों को कॅन्सर हो सकता है।
- (2) जीबी या सॉरिन गैस जिससे आँखों में तेज जलन, डायरिया, सांस रुकना और फिर अघानक मीत हो जाती है।
- (3) बी.एक्स गैस जो सूंघने पर जी.बी. गैस से दो गुना, मुँह के भीतर जाने पर दस गुना, और त्वचा के छिद्रों से जिस्म में जाने पर 170 गुना ज्यादा जाहरीली साबित होती है।
- (4) बी.जेड गैस से याददास्त गुम होने और पागलपन से लेकर दिल का दौरा तक पड सकता है।

अमेरिका ने दिये रासायनिक हथियारों का इराक ने इरान के खिलाफ अपने 1980 के दशक की जंग में इस्तेमाल किया। इरान की 1988 में हार की वजह इराक ने रासायनिक हथियारों का इस्तेमाल करना था। इरान जंग के बाद सद्दाम हुसैन ने इसका इस्तेमाल कुर्द बागियों के खिलाफ किया जिसमें हजारों कुर्द मारे गए। खुद अमेरिकी सिनेट की 1994 की रिपोर्ट के मुताबिक कम से कम सन 1985 से 1989 तक अमेरिकी कंपनियों ने इराक को अमेरिका ने ही सद्दाम हुसैन को हर तरह के रासायनिक और जैविक हथियार मुहैया कराये थे। धीरे धीरे भयानक मीत देने वाले सामूहिक विनाश के इन हथियारों में (1) बैसिलस एन्थ्रसिस (Bacillus anthracis) जिससे एन्थेक्स होता है। (2) हिस्टोप्लाजमा कैप्सुलाटम (Histoplasma Capsulatum) जो फेफड़ों, मशिनधक, स्पाईनल कार्ड (रीड के मज्जादंड) और दिल पर असर करता है, (3) क्लोस्ट्रिडियम बोटुलिनम (Clostridium botulinum) जो एक टॉक्सिन है। (4) ब्रुसेला मेलिटेंसिस (Brucella Melitensis) ऐसा जीवाणू है जो जिस्म के अहम अंगों को तबाह करता है, (5) क्लोस्ट्रिडियम परफ्रिंगेंस (Clostridium Perfringens) बेहद घातक टॉक्सिन है जो खास बिमारी को पैदा करता है, (6) क्लोस्ट्रिडियम टिटैनी (Clostridium tetani) बेहद घातक टॉक्सिक है, भेजे गए। इसके अलावा इस्चेरिधिया कोली (Escherichia Coli - (E.Coli)), अनुवांशिक पदार्थ (Genetic materials), इन्सानी और जीवाणू डिएनए (Human and Bacterial DNA) और दिगर दर्जनों विषाणू और जीवाणू इराक भेजे गए। सिनेट रिपोर्ट के मुताबिक इन सभी से इनकी दोबारा पैदावार की जा सकती थी। इन जैव-रासायनिक हथियारों की पैदावार और इराक जंग में इस्तेमाल के लिये जरूरी उपकरण भी भेजे गए।



अमेरिकी हिमायत से दक्षिण अफ्रिका की वंशवादी रंगभेद हिमायती सरकार को जैव रासायनिक हथियार बनाकर इसका इस्तेमाल अफ्रिका के काले अराम के खिलाफ किया। काले सैनिकों पर प्रयोग किये गये। इससे काले सैनिकों में स्वाभाविक लगने वाला हार्ट अटैक पैदा होता था। पानी में विषाणु और जीवाणु को मिलाया गया। तरह तरह की ऐसी गैसों का इस्तेमाल किया गया जो दक्षिण अफ्रिका और उसके करीब के मुल्कों के दूश्मनों को लकवे का शिकार बनाकर मार डालती है।

शोधकों ने ही किया जैविक हथियारों का इस्तेमाल!

वंशवादी अमेरिका अन्धों से भी नए-नए जैविक हथियार खरिदने की कोशिशें करता रहा है। नस्लभेद विरोधी कार्यकर्ताओं और उनके हिमायतीयों ने काले लोगों को ठिकाने लगाने के लिए जैविक हथियार जमा किए थे। दक्षिण अफ्रिका की नस्लभेदी सरकार ने जैविक हथियारों को पैदा करने की गुप्त परियोजना 'प्रोजेक्ट कोस्ट' शुरू की थी, जो 1990 के दशक में उजागर हुई थी। डॉन गुसेन को 1981 में प्रोजेक्ट कोस्ट की रूडप्लान लेबोरेटरी का डायरेक्टर बनाया गया। इस प्रोजेक्ट के मिलिट्री कमांडर वाटर बेसन थे। अक्टूबर 2001 में गुसेन की मुलाकात सीआईए के एक पूर्व एजेंट डॉन मायस से हुई। उसने गुसेन से कहा कि वह चाहे तो जैविक हथियार और उसके प्रतिरोधक अमेरिका को बेचकर अच्छा पैसा कमा सकता है। गुसेन की शर्त थी कि एफबीआई उसे 50 लाख डॉलर नगद, उसे और उसके 20 साथियों के परिवारों के लिए अमेरिका में बसने की इजाजत दिलाए। एफबीआई को यह कबूल था। मई 2002 में गुसेन ने मायस के हाथों दूधपेस्ट के ट्यूब में रखकर घातक ड्राई बैक्टेरिया के नमूने अमेरिकी गुप्तचर संस्था एफबीआई को भेजे। योजना के मुताबिक डरबन से 600 कि.मी. दूर एक एअर पोर्ट पर अमेरिका का एक प्राइवेट विमान उतरना था, जिसके एक ट्रेलर पर दो कंटेनर लाद दिये जाने थे। इन कंटेनरों में 20 लिटर एंटीसिरम और कांच की 200 बोतलों में ऐसे बैक्टेरिया थे, जिन्हे मनुष्य और पर्यावरण के लिए बेहद खतरनाक बताया गया था। इसमें इन्टेस्टाइनल बैक्टेरियम ऐस्कैरिकीया कोली की टॉक्सिन प्रोड्यूसिंग जीन क्लास्ट्रीडियम परन्फिन्जेन्स से संकरित किया गया था। इसकी वजह से खतरनाक गैस गैंगरेन नामक बيمारी हो जाती है। लेकिन एक गलतफहमी की वजह से एफबीआई के अफसरों ने यह बात दक्षिण अफ्रिका के अफसरों को बता दी जिससे सौदा नहीं हो सका।

ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने अपने उपनिवेशों को बढ़ाने के लिये इलाकाई जनजातियों में जिवाणुओं से संक्रमित ब्लैकट और कपडे बाँटे थे। इन जनजातियों में इन रोगों का मुकाबला करने की कुव्वत नहीं थी इसलिये बड़े भारी पैमाने पर उनकी मौतें हुईं।

माना जाता है कि सन 1944 में जर्मनी में आलू की पैदावार को जो भारी नुकसान पहुंचा था वह इन जैविक हमलों की वजह से था। उसी तरह सन 1945 में जापान में चावल की पैदावार की भारी बर्बादी हुई थी।

जापानियों ने औरों के बराबर आने के लिये और चीन के जिन इलाकों को वे अपनी कॉलनी बनाना चाहते थे वहां के चिनियों का खात्मा करने के लिये जैविक हथियार बनाये। इशिई (Ishii) नामक जापानी वैज्ञानिक ने पिगर्फेन इन्स्टिट्यूट में "जल शुद्धीकरण प्रकल्प 731" की आड में जैविक हथियारों की पैदावार की। इस इन्स्टिट्यूट का इलाका तीन स्वेअर किलोमीटर फैला था जिसमें हवाईपट्टी, बैंकें और प्रयोगशालाएं थीं।

एन्थ्रैक्स (Anthrax) के जीवाणु बेहद विपरीत हालत में भी जीवा रह सकते हैं और बेहद घातक होते हैं जिससे शहर की पूरी आबादी को खत्म किया जा सकता है और उस इलाके को पीढीयों तक रहने के लिये नाकाबिल बनाया जा सकता है। प्लेग Yersinia Pestis नामक जीवाणु से फैलता है। इसके जीवाणु तीन तरह के होते हैं - 1) ब्युबोनिक प्लेग (Bubonic Plague) जो मच्छर इ. उड़ने परजीवी कीटों के काटने से फैलते हैं। 2) न्युमोनिक प्लेग (Pneumonic Plague) के जीवाणु में सांस के जरीये से इन्सान के फेफड़ों में जाते हैं। 3) सेप्टिसमिक प्लेग Septicemic Plague जीवाणु के ताल्लुकात से फैलता है। गैस गैंग्रीन (Gas gangren) में जीवाणु Clostridium Perfringens bacterium से जखम सड़ने लगते हैं। तेजी से फैलने वाली हुसेलोसिस (Brucellosis) बीमारी का शिकार इन्सान हफ्तों तक नाकाम हो जाता है। ग्लैंडर्स (Glanders) बीमारी Bacterium Pseudomonas Mallei नामक जीवाणु से होती है। इसमें नाक और सांस की नली की म्युकस त्वचा को यह जीवाणु खा जाता है और इन्सान की लिम्फैटिक सिस्टिम (Lymphatic System) पर हमला करता है। Salmonella and Clostridium botulinum bacteri यह दो जीवाणु खाने में बेहद घातक बायोटॉक्सिन छोड़ते हैं। बोटुलिज्म टॉक्सिन की बेहद कम दादादा भी बेहद घातक होती है।

Tularemia खरगोशों और इन्सानों पर असर करता है। इन्सानों को यह कई हफ्तों के लिये बीमार बनाता है। प्रोडक्शन युनिट 722 सांस से या मांस के सुप (broth) से भरी ट्रे में इन जीवाणु की पैदावार करते थे। सड़े



मांस की बदबू नाकाबिले बर्दाश्त होती थी। माना जाता है की पिगफॉन प्रयोगशाला में हर महीने कई टन जीवाणु पैदा किये जाते थे।

जापानी अपने प्रयोगों की जांच के लिये चीनी इलाकों में जाकर अमूक महामारी फैली होने का प्रचार करते थे। फिर जापानी सैनिकों की टोलियाँ चीनी इलाकों के कुँओं में और दिगर जलाशयों में जीवाणु डालती थी। बिमारी फैलने के बाद वे मरिजों को बेहोश कर उनके जिस्म से नमूनों के तौर पर जरा सा मांस निकालकर जिस्म को फिर से सी देते थे। मरे लोगो को कुएं में डाल देते थे। जापानी सिपाही संक्रमित गँवो को जला भी देते थे। ये प्रयोग पूरी गोपनीयता से चीनी कैदियों पर किये गए। जापानियों ने चीनी कैदियों के जिस्म पर ही इन रोगों के जीवाणु की पैदावार करनी शुरू की। जापानीयों का सोचना था कि जो जीवाणु जीन्दा धिनियों के जिस्म की प्रतिरोधी कुव्वत का मुकाबला करते हुए पैदा होंगे वे और भी ज्यादा खतरनाक साबित होंगे। 3000 कैदियों का कोटा पूरा करने के लिये कईयों को सड़कों पर चलते हुए ही कैद कर लिया गया था। चीनियों को खुले में खंबे से बांधा जाता था। विमान से उनपर जीवाणु छिड़के जाते वक्त उन्हें अपनी निगाहें आकाश की ओर करने पर मजबूर किया जाता था। लगातार अध्ययन किया जाता था कि वे किस तरह बिमारी से मर रहे है। कुछ कैदियों को Stakes or panels से बांधकर उसके पास Clostridium Perfringens bacteria को छोड़ने वाले बमों का विस्फोट किया जाता था। इन कैदियों के घाव ओर जिस्म गॅन्ग्रीन से कैसे सड़ रहे है इसका बाकायदा रिकॉर्ड रखा जाता था। जब उनके जिस्म में इन जीवाणुओं की पैदावार हो जाती तो इन कैदियों की क्लोरोफॉर्म से बेहोश कर उनके जिस्म का सारा खून निकाल लिया जाता था। जब जिस्म से रक्त का प्रवाह धिमा पड जाता तो जापानी सैनिक कैदियों के छाती पर कुदते थे ताकि जिस्म का एक एक कतरा खून भी निकल आए। इस दौरान शोकडों जापानी सैनिक भी जीवाणुओं के असर से मर गए। इसके बावजूद ये प्रयोग जारी रहे। ईशीई ने 18 और नए केन्द्र कायम कर लिये। जापानी आत्मसमर्पण के बाद ईशीई ने अपने जैव हथियारों की रिपोर्ट अमेरिकी सरकार के हवाले की। उसे और उसके साथियों को जंग अपराधों के इल्जामों से आजाद किया गया और 'युनिट 371' के काले कारनामों पर पर्दा डाल दिया गया।

लंदन के 'इम्पैक्ट इंटरनेशनल जर्नल' में यह इल्जाम लगाया गया है कि पश्चिमी गोरे वंशवादियों ने एड्स की महामारी को जैविक हथियार की शकल में काले अफ्रिकी लोगों के खिलाफ इस्तेमाल किया है। केन्या के नोबेल शांति पुरस्कार विजेता वांगारी मथाई ने भी इल्जाम लगाया है कि गोरे वंशवादियों ने कालों का जनसंहार करने के लिये एड्स महामारी पैदा की है। एड्स के विषाणुओं को पश्चिम की किसी प्रयोगशाला में पैदा किया गया। पश्चिमी देशों ने यह दलील दी की एड्स का विषाणु सबसे पहले अफ्रिकी मुल्कों में बंदरों से लोगो में फैला जबकि काले लोग हजारो सालों से बंदरो के बीच रहते आये है। काले लोगो को एड्स के उपचार के नाम पर जो विषाणु दिये गए उनका असर भी किसी महामारी से कम नहीं है।

सन 1993 के वसंत में इटली में hoof - and - mouth नामक बीमारी से 4000 जानवरों की मौत हुई। बाद में पता चला कि युगोस्लाविया से जो जानवर मंगाये गये थे उनमें इस रोग से ग्रस्त जानवर की वजह से बिमारी फैली थी। युरोपियन कम्युनिटी के बीच "गाय-युद्ध" शुरू हुआ जब उन्होंने पूर्वी युरोप के 18 मुल्कों और सोवियत युनियन से गाय जैसे सभी जानवरों से बनी पैदावार पर पाबंदी लगा दी। जैविक हथियार किसी भी मुल्क की अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था को बहुत बड़ी चोट पहुंचा सकते है। सन 1951 में अमेरिकी वायू सेना के लिये फसल विरोधी जैव हथियारों की पैदावार की गई। अमेरिका ने 30 टन Wheat rusts की पैदावार की जो सारी धरती के गेहूँ को तबाह करने के लिये काफी थी। इसका अहम निशाना सोवियत संघ के उर्केन की फसलें थी। अमेरिका ने एक टन Rice blast disease के जीवाणुओं की पैदावार की। इसका मकसद चीन की धौवल की फसलों को बर्बाद करना था।

**विश्वयुद्ध के समय इस्तेमाल किये गये हथियार एवं उसका परिणाम :**

1) क्लस्टर बम - हर क्लस्टर बम 200-700 छोटे बमों से बना होता है। छोटे बमों का विस्फोट होने पर लगभग 300 फौलादी तुकड़े उड़ते है जिसकी जद में आनेवाला खून के लोथडे में तब्दिल हो जाता है। इन्हे लडाकू हवाई पोत से छोड़ते ही तयशुदा समय पर उसके छोटे बम बाहर फँके जाते है। हर छोटे बम के साथ एक पैराशुट लगा होता है जिससे उसके नीचे आने की रफ्तार कम हो जाती है जिससे वे दूर दूर तक फैल जाते है और उनके विस्फोट से ज्यादा से ज्यादा इलाके में तबाही होती है। उनके विस्फोट के समय को टाला भी जा सकता है ताकि वे टाईम बम का बमों की खातों के रूप में तब्दिल हो जाए। ऐसे बमों की तादाद लगभग 5-30 फीसदी तक रखी जाती है। मिट्टी, पीधे, मा लताएं उगकर इन्हे अपने में छीपा सकती है। कोई बच्चा, इन्सान, जानवर या वाहन उससे टकराते ही उसका जबरदस्त विस्फोट होखता है। जैसे जैसे समय बितता है वे कभी भी फट पडते है। इससे हजारो बच्चे, पुरुष अपनी जान गवा चुके है। लोक डर के मारे उस इलाके में काम नहीं



करना चाहते जहाँ ये क्लस्टर बम छोड़े गये थे। इस तरह क्लस्टर बम फसल और जमीन के इस्तेमाल को अगले कई सालों तक के लिये रोक देते हैं। अमेरिकी गठबंधन सेना ने युगोस्लाविया, अफगानीस्तान, विएतनाम, लाओस, कंबोडिया आदी मुल्कों में लाखों की तादाद में क्लस्टर बमों का इस्तेमाल किया गया। अमेरिकी सरकार बमों की सफाई के आंतर्राष्ट्रीय समझौते पर दस्तखत नहीं करना चाहती क्योंकि ऐसा करने के बाद अमेरिका क्लस्टर बमों का इस्तेमाल नहीं कर पाएगा।

2) CBU - 72 Fuel - Air Explosive – इस क्लस्टर बम के विस्फोट के बाद भयानक आग फैलती है। घेरे में आये हुए लोग, जानवर और पेड़-पौधे जलकर राख हो जाते हैं और बंकरों में छुपे लोग दम घूटने से मर जाते हैं। फटते ही वह हवा में ज्वलनशील पदार्थ के बादल को बडी तेजी से फैला देता है। जैसे ही ये धुँए के बादल जमीन पर उतरते हैं इस बम की प्रणाली उसे "इग्नाईट" कर देती है। जिससे बड़ा विस्फोट होता है। नागरिक जीन्दा जल जाते हैं। उनके जिस्म एक बड़े इलाके तक कुचले जाते हैं। जब इसकी चपेट में स्कुटर, मोटर, गाडियों आती है तो उनके इंधन का भी विस्फोट होता है।

3) MOAB Massive Ordnance Airburst Bomb – मोआब यह CBU-72 Fuel-Air Explosive बम है। इस बम का असर एक छोटे परमाणु बम जैसा ही है लेकिन इससे रेडिएशन पैदा नहीं होता। इन क्लस्टर बमों में तीन बडी बॅरलों में ethylene g मरी होती है। हर बॅरल में 100 पाउंड गॅस होती है। हर बॅरल में 75 पाउंड ethylene oxide होता है जिसका व्यावसायिक इस्तेमाल glycol ethylene जैसे बेहद जहरिले पदार्थों को बनाने में होता है। इसका पयुज 30 फिट की उँचाई पर इसे इग्नाईट कर देता है जिससे बॅरल खुल जाती है और हवा के साथ जहरिले विस्फोटक धुँए के बादल पैदा होते हैं। बिना इग्नाईट किये भी यह खतरनाक है क्योंकि इसका जहरिला धुँआ अंडरग्राउंड बंकरों के अंदर तक पहुंच सकता है। इस धुँए से फेफडों को नुकसान होता है, सिरदर्द और उल्टीयों होती हैं, सांस लेने में तकलीफ होती है, कॅन्सर और जन्म संबंधी विकृतियाँ भी पैदा हो सकती हैं। यह बेहद विस्फोटक गॅस है और इसके विस्फोट से हवा के बस्ट होने से जो दबाव पैदा होता है वह 30 किलो प्रति स्केअर सेंटीमीटर यानि परंपरागत बमों से 30 गुना ज्यादा है। इससे 2700 डिग्री सेल्सियस गर्मी पैदा होती है जो तीन किलोमीटर प्रति सेकंड की रफ्तार से यानि आवाज की रफ्तार से भी तेजी से फैलती है। इससे ताकतवर हवारहित इलाका (Vacum) पैदा हो जाता है जो हवा और खुली पडी धिजे अपनी ओर खींच लेता है। नतीजे में मशितष्क हिलने लगता है जिससे अंधापन और फेफडों का काम करना बंद हो जाता है, कान के इअरड्रम और जिस्म के अंदरूनी हिस्से फट जाते हैं। इसके तुफान में उडती धिजों से इन्सान को घोट पहुंचते रहती हैं। इसके अलावा ethylene oxide फेफडों में जाने के नतीजे अलग हैं। इस बम का इस्तेमाल अमेरिका ने सन 2003 में इराकी नागरिकों के खिलाफ किया।

ब्रिटिश सैनिकों के डेपलेटिड युरेनियम (डिः) बमों से पैदा हुई रेडियो एक्टिविटी से कॅन्सर का खतरा पैदा हो गया है। अध्ययन में बसरा के अबु खासिब में रेडियो एक्टिविटी का स्तर सबसे ज्यादा पाया गया। रेडियो एक्टिव धूल से कॅन्सर और नवजात शिशुओं में विकृतियाँ पैदा हो गई हैं।

समग्र रूप से देखा जाए तो विश्वयुद्ध के दौरान विश्व के कई देशों ने लाखों की संख्या में जनबल को खोया। इसके अतिरिक्त विश्व की सामाजिक, राजनीतिक एवं अर्थव्यवस्था पर व्यापक परिणाम देखे गए। इसका प्रभाव भारत पर भी हुआ। संक्षेप में कहा जा सकता है कि युद्ध के दौरान अर्थव्यवस्था ने कई मायनों में भारत में पूँजीवाद को बढ़ावा दिया। उपरोक्त शोध निबंध साम्राज्यवाद के आतंकवादी चारित्र को उजागर करता है।

### Consolidated Bibliography :

1. The History of Chemical and Biological Warfare by Greg Goebel.totse.com
2. News From China : Human Rights Record of The United States in 1999.
3. American Corporations Sold Chemical and Biological Weapons Material to Iraq : From Rogue State by William Blum.
4. दैनिक भास्कर, अप्रैल 21, 2003.
5. Dalit Voice, April, 16-30, 2005.
6. The History of Chemical and Biological Warfare by Greg Goebel.totse.com, Robert P. Kablec : Battlefield of Future; : Biological Weapons For Waging Economic Warfare, [www.totse.com](http://www.totse.com)
7. नवभारत, दिसंबर 16, 2003.
8. र. F. Haber, The Poisonous Cloud : Chemical Warfare in the First World War Oxford University Press : 1986.
9. Hersh S (1968). Chemical and biological warfare ; America's hidden arsenal. Librarian Narayanrao Rana Mahavidyalaya



10. WHO : Health Aspects of Biological and Chemical Weapons.
11. Miller J (2001) – Biological Weapons and America's Secret War. New York ; Simon & Schuster. ISBN : 978-0-684-87158-5.
12. "Vietnam's war against Agent Orange", BBC News, June 14, 2004. on January 11, 2009. Retrieved April 17, 2010.
13. Orent W (2004). Plague, The Mysterious Past and Terrifying Future of the World's Most Dangerous Disease. New York, NY : Simon & Schuster, Inc. ISBN : 978-0-7432-3685-0.
14. Verdourt B, Trump EC, Church ME (1969), "Common poisonous plants of East Africa", London Collins : 254.
15. Biological Warfare – National Library of Medicine. Retrieved May 28, 2013.
16. USAMRIID U.S. Army Medical Research Institute of Infectious Diseases.
17. CBWInfo.com (2001) – A Brief History of Chemical and Biological Weapons: Ancient Times to the 19<sup>th</sup> Century. Retrieved November 24, 2004.
18. Cordette, Jessica, MPH (c) (2003). Chemical Weapons of Mass Destruction. Retrieved November 29, 2004.
19. Croddy. Eric (2001). Chemical and Biological Warfare, Copernicus, ISBN 978-0-387-95076-1.
20. Smart, Jeffery K., M.A. (1997), History of Biological and Chemical Warfare. Retrieved November 24, 2004.
21. United States Senate, 103d Congress, 2d Session. (May 25, 1994). The Riegle Report. Retrieved November 6, 2004.
22. Gerard J Fitzgerald. American Journal of Public Health. Washington : April 2008. Vol. 98, ISS. 4.
23. Official website of the Organisation for the Prohibition of Chemical Weapons (OPCW).
24. Medical Aspects of Biological Warfare. Government Printing Office, 2007, P. 3, ISBN : 978-0-16-087238-9.
25. Croddy E, Wirtz J J (2005), Weapons of Mass Destruction, ABC-CLIO. P.171, ISBN : 978-1-85109-490-5.
26. Franz D. "The U. S. Biological Warfare and Biological Defense Programs" (PDF), Arizona University, Archived (PDF) from the 19 February 2018, Retrieved June 14, 2018.
27. Leitenberg, Milton; Zilinskas, Raymond A. (2012). "The Soviet Biological Weapons Program" : A History. Harvard University Press.
28. Mangold T, Goldberg J (1999). "Plague Wars : a true story of biological warfare". Macmillan, London. ISBN : 978-0-333-71614-4.
29. Rule 74. The use of chemical weapons is prohibited. – section on chemical weapons from Customary IHL Database, an "updated version of the Study on customary international humanitarian law conducted by the International Committee of the Red Cross (ICRC) and originally published by Cambridge University Press."
30. Jirj Janta, Role of Analytical Chemistry in Defense Strategies Against Chemical and Biological Attack, Annual Review of Analytical Chemistry, 2009.

  
Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera



  
Librarian  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera



Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSUE No- (CCCXVIII) 318 (A)

ISSN-2278-9308

September-2021

# B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

Thoughts and Works of Dr. Babasaheb Ambedkar



Chief Editor  
Prof. Virag S. Gawande  
Director

Editor  
Dr. Pramod S. Meshram  
I/c Principal,



This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)



For Details Visit To: [www.aadharsojnl.com](http://www.aadharsojnl.com)

Aadhar PUBLICATIONS



**INDEX-A**

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता आणि सद्यस्थिती	प्रा. डॉ. संतोष पां. बनसोड	1
2	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची सिध्दांतवादी सामाजिक चळवळ	डॉ. प्रमोद एस. मेथ्राम	7
3	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि दलित साहित्य	डॉ.विकास शंकर पाटील	12
4	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची राष्ट्रवाद संकल्पना	प्रा.श्री. अमोल अरूण कुंभार	16
5	बाबासाहेब आणि वर्तमान काळात धर्मातराची आवश्यकता	डॉ. अनंता सूर	21
6	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शेतीविषयक विचार व कार्य	अनिल मधुकर केदारे / प्रा.डॉ. सोंडगे तात्याराम परमेश्वर	28
7	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या चळवळीतील स्त्रीयांचे योगदान	प्रा. डॉ. अनिल आय. धूल	33
8	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा शिक्षण विषयक दृष्टीकोन— एक नवा दृष्टीक्षेप	डॉ.अनिता शिंदे	38
9	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे कृषीविषयक विचार आणि सामाजिक न्याय	प्रा.डॉ.गव्हाळे बी.व्ही.	42
10	स्वातंत्र्योत्तर कालखंडातील मराठी साहित्यावर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा प्रभाव आणि परिणाम	डॉ. बालाजी विठ्ठलराव डिगोळे	47
11	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शेतीविषयक विचार	भिमराव परमेश्वर वाघमारे	53
12	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे राष्ट्रवादविषयक विचार	प्रा. डॉ. चांगुणा विठ्ठल कदम	56
13	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर — एक असामान्य अर्थतज्ज्ञ	चार्वाक आनंदराव खैरे	61
14	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शिक्षणविषयक विचार व कार्य	प्रा.चिन्नना एम. चालूरकर	66
15	डॉ. आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार	प्रा.डॉ.डी डी.जोषळे	70
16	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे महिलांविषयक विचार व कार्य	प्रा. दिलीप यशवंत बर्वे	76
17	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचा शैक्षणिक दृष्टिकोन	प्रा.डॉ.जाधव दिलीप रामचंद्रराव	82
18	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे धम्मविषयक विचार	प्रा. ज्ञानेश्वर भोसले	85



डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता आणि सद्यस्थिती

प्रा. डॉ. संतोष पां. बनसोड

नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा (रेल्वे), अमरावती.

मो. नं. ८२७५४१८९८६

ई-मेल : bansodsantosh73@gmail-com

पत्रकारिता हा लोकशाहीचा चौथा स्तंभ आहे. लोकशाही चार महत्त्वपूर्ण स्तंभावर उभारलेली आहे. कायदेविभाग, कार्यकारीविभाग, न्यायविभाग आणि पत्रकारिता हे लोकशाहीचे चार आधारस्तंभ मानले जाते. त्या आधारावरच लोकशाही उभी असते. परंतु आज जर देशाची परिस्थिती पाहिल्यास हे तीनही विभाग एकाच ठिकाणी केंद्रित झालेले दिसतात. म्हणजेच ज्या पद्धतीने आपण स्वातंत्र्यपूर्व काळातील म्हणजेच दुसऱ्या महायुद्धापूर्वीची स्थिती पाहिली तर दुसऱ्या महायुद्धाला कारणीभूत ठरलेली परिस्थिती हि तिन्ही विभाग हातात धरून काम करणारे सत्ताधिश जगाच्या पाठीवर उदयास आलेत आणि पर्यायाने त्यांना रोखण्यासाठी अनेक देशांनी आपले आपसी मतभेद, वाद – विवाद विसरून एकत्र येऊन त्यांचा पराभव केलेला दिसून येतो. द्वितीय महायुद्धानंतर जगाचे चित्र बदललेले दिसते आणि त्याच पद्धतीने आज जर भारतासंदर्भात बघितलं तर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता यावर लिहीत असताना आजच्या वर्तमान स्थितीचा थोडक्यात आढावा घेणे गरजेचे आहे.

आज आपण भारतातील चित्र पाहिले तर कायदेविभाग, कार्यकारीविभाग आणि न्यायविभाग हे तिन्ही विभाग एकाच ठिकाणी केंद्रित झालेले दिसतात. कारण लोकशाहीमध्ये आपण बघतोय की, लोकशाही बद्दल डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी तेव्हा विचार व्यक्त केला होता की "जर लोकशाही टिकवायची असेल, ती यशस्वी करायची असेल तर ती एबविणारे सत्ताधिश मंडळी कशी आहेत त्यांच्यावरच अवलंबून आसते." म्हणून जर आजचे चित्र बघितलं तर ज्यांची सत्ता आहे तेच कायदे बनवितात, तेच अधिकाऱ्यांची नियुक्ती करतात आणि अधिकारी हे कायदे अमलात आणतात. एवढेच नाही तर त्या पदावर आरूढ झालेली मंडळी आपल्या मर्जीतील न्यायाधीशांची नेमणूक करतात. हे चित्र सध्या भारतातील आहे. आणि त्यामुळेच कायदेविभाग कार्यकारी विभाग आणि न्यायविभाग हे तीनही लोकशाहीचे स्तंभ यांचे चित्र कसे आहेत हे आपल्याला दिसते. म्हणून, पत्रकार बंधूकडे आणि मीडियाकडे हा संपूर्ण भारत देश आशेने बघत आहे. मात्र या पत्रकारितेची स्थिती अतिशय वाईट आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी दि. १८ जानेवारी १९४३ तत्कालीन पत्रकारितेच्या संदर्भात अतिशय उत्तम विवेचन केले होते, त्याला आज ७१ वर्ष पूर्ण झालेली आहे. तरीही आज ७१ वर्षां नंतरही १८ जानेवारी १९४३ चे विधान तंतोतंत लागू होत आहे. हे विधान पुढील प्रमाणे आहेत, "भारतीय पत्रकारिता म्हणजे एखाद्या बंडबाल्यांनी विदागी घेऊन आपल्या नायकाचा गाजावाजा करण्यासाठी ढोल बजविणे होय" आणि आज तशीच परिस्थिती आपल्याला दिसून येत आहे. परंतु सर्वच पत्रकारासंदर्भात हे विधान सत्य नाही. या परिस्थितीला अपवादही आहेत. काही पत्रकार आपले, लोकशाहीचे मूल्य जपून या ठिकाणी अतिशय उत्तम काम करीत आहेत. परंतु हे अल्पप्रमाणात आहे आणि म्हणूनच आज डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात त्या प्रमाणे, "भारत नायक पूजकांच्या कौफानी आंधळ झालेला आहे" आणि त्याच ही विधान आजच्या भारतातील परिस्थितीला तंतोतंत लागू आहे.





डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणायचे, पत्रकाराने कधीही वक्रीलपत्र घेऊ नये, खोटारडेपणा करू नये, पत्रकारितेच्या निमित्ताने भेदे, वसुली, जातीयतेचे विषय पेरू नये, आपापसात भेदभाव पेरू नये एवढेच नाही तर नायक पूजा केली जाऊ नये, अशा प्रकारचे विधान डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी १८ जानेवारी १९४३ रोजी केले होते. ते भारतीय स्थितीला सद्यस्थितीत ही लागू होत आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या पत्रकारितेला तोंड देणारा मसीहा आजपर्यंत तरी निर्माण झालेला नाही. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी पत्रकारिता ज्यांनी सखोलपणे अभ्यासली असेल, त्यांचे अप्रलेख वाचलेले असेल त्यांचे स्फुटलेखन वाचलेले असेल, त्यांच्या वृत्ताची मांडणी असेल, त्यांचा निर्भीडपणा असेल, त्यांचा अभ्यास आणि कोणतेही वृत्त आणि अप्रलेख लिहिण्यापूर्वी त्यांनी केलेले सखोल अध्ययन, संशोधन याचा विचार केल्यास त्यांच्या अध्ययनपूर्ण आणि संशोधनपूर्ण पत्रकारितेला आजही तोंड नाही. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या पूर्वी मुद्दा अस्पृश्यांच्या संदर्भामध्ये काही अस्पृश्य सुधारक मंडळी कार्यरत होती. ज्यामध्ये विदर्भातील विशेषता कालीचरण नंदागवळी, किसन फागुजी बनसोडे, गणेश आकाश गवई, यवतमाळचे विठ्ठल दसरथ मकेसर, गोपाळबाबा वलंगकर, शिवराम जानबा कांबळे या सर्व मंडळींनी पत्रकारितेच्या संदर्भामध्ये विचार करून काही तत्कालीन काळात वृत्तपत्र सुरू केले होते. ते म्हणजे सोमवंशीय मित्र, हिंदू नागरिक, विटाळ विध्वंस, मजूर पत्रिका आणि अमरावतीचे गणेश आकाजी गवई यांनी सुरू केलेले बहिष्कृत भारत अशा पद्धतीने तत्कालीन काळातील काही वृत्तपत्र अस्पृश्य चळवळी संदर्भात अस्पृश्यांचा उद्धार करण्यासाठी कसोशीने त्यांनी उभे केले होते. जेणेकरून चळवळीला गती देता येईल. मात्र डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा पत्रकारितेचा उगमच काही वेगळा आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची तल्लक बुद्धिमत्ता ज्यामुळे आपण बघतोय जगातल्या १०० विद्वानांमध्ये त्यांची गणना होते. त्यामध्ये डॉ. बाबासाहेब हे एक व्यक्तीमत्त्व आहे. डॉ. बाबासाहेबांच्या बुद्धीची गणना आजही करता येत नाही. अशा या डॉ. बाबासाहेबांच्या बुद्धीला पत्रकारितेने स्पर्श कुठे केला हे बघणे महत्त्वाचे आहे. त्यांच्या पत्रकारितेचा उगम कोठे आहे हे जावून घेणे गरजेचे आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कोलंबिया विद्यापीठामध्ये अमेरिकेला उच्च शिक्षणासाठी गेले होते. त्या ठिकाणी गेले असताना ९ मे १९१६ कोलंबिया विद्यापीठामध्ये मानववंश शास्त्रावर एक परिषद भरली होती. या राष्ट्रीय स्तरावरील परिषदेमध्ये डॉ. बाबासाहेबांनी संशोधक म्हणून सहभाग घेतला. ९ मे १९१६ च्या या परिषदेत डॉ. बाबासाहेबांनी एक पेपर सादर केला. "भारतीय जाती घडण, उत्पत्ती आणि विकास" हा विषय घेऊन त्यांनी उत्तम असा पेपर सादर केला आणि या पेपरमध्ये त्यांनी भारतीय जातीव्यवस्था ही ईश्वरनिर्मित नसून मानवनिर्मित आहे. धर्माच्या आधारावर उभी झालेली आहे. वेदाचे संदर्भ देऊन डॉ. बाबासाहेबांनी ब्राह्मणी घटकाचे जाती व्यवस्थेची लक्ष्मरे लटकविलेले दिसतात. अतिशय उत्तम असा हा पेपर होता. भारतीय मानववंशशास्त्राच्या संदर्भात कोलंबिया विद्यापीठामध्ये अनेक संशोधक होते, ते परिषदेमध्ये सहभागी झालेले विद्वान होते या सर्वांनी डॉ. बाबासाहेबांचे कौतुक केले. त्याचवेळी अमेरिकेमध्ये निग्रोची चळवळ सुरू होती. तेथील एका विद्याध्यनि पेपर सादर केला तो मूळचा निग्रो होता. डॉ. बाबासाहेब त्या पेपरकडे आकर्षित झाले. त्यानंतर त्यांनी अमेरिकेच्या निग्रोची चळवळ नेमकी काय आहे. त्यासंदर्भातील माहिती मिळवून अध्ययन केले. त्याच वेळी अमेरिकेमध्ये हार्लेम रिनायसन्स ही निग्रोची नागरी स्वातंत्र्याची चळवळ मोठ्या प्रमाणात गतिमान झाली होती. ही चळवळ गतिमान करण्यासाठी अमेरिकेमध्ये ज्यांनी फार मोठा आधार दिला, गती दिली, प्रेरणा दिली ती तेथील बुद्धीजीवी वर्गाने, बुद्धिजीवी वर्गाला आकलन आणि मांडणी अवगत असते. अशा दोन्ही वर्गांनी ही चळवळ गतिमान केली होती. नागरी चळवळीच्या या हार्लेम रिनायसन्स या लढ्याला न्याय मिळवून देण्याचे काम तेथील काही वृत्तपत्रांनी केले. ते वृत्तपत्र होते 'द क्रामसेसिस, द शिकागो डिफेन्स, निग्रो वर्ल्ड' हे अमेरिकेतील





तत्कालीन काळातील अतिशय महत्त्वपूर्ण वृत्तपत्र होते. या वृत्तपत्रानेच या सर्वांनी कैफियत मांडली त्यामुळेच येथील निघोची चळवळ गतिमान झाली. अशा प्रकारे डॉ. बाबासाहेबांनी वृत्तपत्राने महत्त्व जाणले आणि भारतामध्ये परत आल्यानंतर भारतामध्ये मूकनायक वृत्तपत्र स्थापन केले. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी आपल्या सामाजिक कार्याचा प्रारंभ साऊथवरो कमिशनला साश्र देऊन १९१९ ला केला. साऊथवरो कमिशनमध्ये अस्पृश्यांची कैफियत मांडण्याचे कार्य डॉ. बाबासाहेबांनी प्रामाणिकपणे केले. मात्र या बातमीचा गवगवा, चर्चा झालेली दिसून येत नव्हती. तत्कालीन काळामध्ये आजच्या सारखे तंत्रज्ञान विकसित नसल्याने माहितीच्या आदान प्रदानासाठी वृत्तपत्र हे एकच प्रभावी माध्यम होते. परंतु डॉ. बाबासाहेबांनी दिलेल्या साऊथवरो कमिशनमध्ये दिलेली साश्र बऱ्याचश्या वृत्तपत्रांमध्ये प्रकाशित झालेली नव्हती. म्हणून डॉ. बाबासाहेबांची पत्रकारिता ही एक वैचारिक चळवळ, आंदोलन होते. माणगाव परिषदेपासून डॉ. बाबासाहेबांच्या सामाजिक जीवनाला सुरुवात झाली. परंतु मूकनायक वृत्तपत्र मात्र हे या वैचारिक चळवळीचा आरंभ बिंदू उरले. डॉ. बाबासाहेबांची पत्रकारिता मूकनायकपासून सुरु झाली ते प्रबुद्ध भारतापर्यंत राहिली. मूकनायक, बहिष्कृत भारत, समता, जनता, प्रबुद्ध भारत या सर्व वृत्तपत्रातून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे ध्येयनिष्ठ पत्रकार बनून समोर आलेत.

डॉ. बाबासाहेबांच्या पत्रकारितेचे एक विशिष्ट आणि निश्चित असे ध्येय होते. त्यांच्या समोर असलेल्या ध्येयाला अनुसरून त्यांची पत्रकारिता होती. मूकनायक, बहिष्कृत भारत, समता, जनता, प्रबुद्ध भारत ही बाबासाहेबांनी आपल्या वृत्तपत्राची ठेवलेली नावे सुद्धा मोठी मार्मिक आहेत. या वृत्तपत्रातील नावातूनच त्यांनी कोणता ध्यास घेतला होता हे निश्चित होते. स्वजनदाराचे महत्त्व कार्य करण्याचे मोठे ध्येय त्यांच्यासमोर होते. एक पत्रकार म्हणून अस्पृश्य समाजाचा उद्धार करण्यासाठी त्यांनी प्रामाणिकपणे प्रयत्न केला. डॉ. बाबासाहेब पत्रकार म्हणून कणखर होतेच तसेच संवेदनशील देखील होते, निर्भीड आणि निर्भय सुद्धा होते. म्हणूनच प्रस्थापित चातुर्वर्ण पद्धतीची कुठलीही तमा न बाळगता, भिड मूर्खित न ठेवता त्यांनी पत्रकारिता केली. डॉ. बाबासाहेब मूकनायकातून सुरुवातीला आपले मनोगत व्यक्त करतांनाच त्यांनी चातुर्वर्ण समाजावर प्रहार केले आहेत. माणगाव परिषद आणि परिषदेनंतर आरक्षणाने जनक, बहुजनांचा राजा राजर्षी शाहू महाराजांच्या आर्थिक मदतीने मूकनायक या वृत्तपत्राचा प्रारंभ ३१ जानेवारी १९२० ला डॉ. बाबासाहेबांनी केला. या वृत्तपत्रांमध्ये तत्कालीन काळात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा संताच्या संदर्भामध्ये त्यांनी जे संतांचे कार्य अभ्यासले होते. त्यामध्ये तत्कालीन काळातील संत शिरोमणी संत तुकाराम महाराज होते आणि म्हणूनच डॉ. बाबासाहेबांनी मूकनायक वृत्तपत्रातील पहिल्याच पृष्ठावर संत तुकारामाच्या ओळी दिलेल्या आहेत. तत्कालीन चातुर्वर्ण पद्धतीला तळा देण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य संत तुकाराम यांनी केलेले आहेत. येथील ब्राह्मणी व्यवस्थेला तडा देण्याचे काम संत तुकारामांनी केले. वेदातील सदोष ज्ञान समाजासमोर मांडण्याचे कार्य संत तुकाराम महाराजांनी केले आणि त्यामुळेच संत तुकारामाचा मृत्यू कशा प्रकारे झाला हे सर्वश्रुत आहे.

संत तुकारामाच्या मूकनायकातील त्या ओळी पुढील प्रमाणे आहेत.

"काय करू आता धरुनिया भीड | निशंक तोंड वाचविले | नव्हे जगी कोणी मुकियाचा जाण | सार्थक लाजून नव्हे इथे ॥"

या ओळीवरून डॉ. बाबासाहेबांचा संत तुकारामा संदर्भातील असलेला अभ्यास आपल्याला दिसून येतो. डॉ. बाबासाहेब मूकनायक या वृत्तपत्राच्या संदर्भामध्ये असे लिहितात की, "आमच्या बहिष्कृत लोकांवर होत असलेल्या व पुढे होणाऱ्या अन्यायावर उपाय योजना सुचविण्यास व त्यांची भावी उन्नति करण्याचे मार्ग त्यांच्या खऱ्या स्वरूपाच्या चर्चा होण्यास वर्तमानपत्र सारखी अन्य भूमीच नाही." अशा प्रकारचे वर्तमानपत्राचे महत्त्व मूकनायकामधून ते विशद करतात.





मुंबई इलाख्यात निघत असलेल्या वृत्तपत्राकडे न्यायाकडून बघितल्यास असे दिसून येते की, "त्यातील बरीचशी वृत्तपत्रे ही विशिष्ट जातीची आहे आणि ती आपल्या जातीचे हितसंबंध जोपासणारे दिसतात. ते इतर बहिष्कृत जातीची कोणतीही पर्वा करीत नाहीत त्यांचे हित जोपासतांना दिसत नाही. त्यामध्ये दीनमित्र, जागृत, मराठा, ज्ञानप्रकाश, विजयी मराठा, सुबोध पत्रिका या सर्व वृत्तपत्रांचा ते समाचार घेतात आणि त्यामध्ये ते म्हणतात की, "बहिष्कृत समाजाच्या प्रश्नाची चर्चा वारंवार होते. परंतु ब्राह्मणेतर या संज्ञेखाली मोडत असलेल्या अनेक जातीच्या प्रश्नाचा खल होतो. परंतु बहिष्कृतांना न्याय दिला जात नाही. त्याकरिता स्वतंत्र वृत्तपत्राची गरज आहे." अशा पद्धतीचे महत्त्व डॉ. बाबासाहेबांनी मूकनायकाच्या पहिल्याच अंकात पटवून दिलेले आहे.

मुकनायकातील डॉ. बाबासाहेबांचे अग्रलेख जर पाहिले तर ते अतिशय निर्भिड स्वरूपाचे आहे. तत्कालीन व्यवस्थेवर कठोर प्रहार करणारे आहेत. तत्कालीन जाती व्यवस्थेवर, समाज व्यवस्थेवर तसेच त्यांनी ब्रिटिशांच्या चुकीच्या धोरणावर सुद्धा प्रहार केलेले आहे. त्यांचे मुकनायकातील लिखाण वाचल्यानंतर त्यांच्या लेखनातील निर्भिडपणा, वस्तुनिष्ठपणा, मूल्यधिष्ठिता आपल्याला दिसून येते. म्हणूनच ते असे म्हणतात की, 'स्वराज्याचे सर सुराज्याला नाही' म्हणजेच भारतीय जे स्वतःचे राज्य निर्माण करेल व शासन अमलात आणेल त्याची कणव त्याचे ब्रिटिश सत्तेला म्हणजेच सुराज्याला नाही. 'हे स्वराज्य नव्हे...' हा त्यांचा अग्रलेख अतिशय महत्त्वपूर्ण आहेत. 'हे तर आमच्यावर राज्य...' या संदर्भातून ते आपल्या अग्रलेखात संपूर्ण चातुर्वर्ण व्यवस्थेवर प्रहार करतात. मानवनिर्मित ही चातुर्वर्ण व्यवस्था इथल्या ब्राह्मणी लोकांनी कशी निर्माण केली. या संदर्भातील अतिशय सुंदर विवेचन त्यांनी या लेखांमध्ये केलेले आहेत. 'स्वराज्यातील आमचे आरोहण...' हा सुद्धा अग्रलेख महत्त्वपूर्ण आहे. 'राष्ट्रातील पक्ष...' या लेखांमध्ये तर ते भारतामध्ये जे पक्ष आहे हे विशिष्ट लोकांचा, विशिष्ट समाजाचा स्वार्थ घेऊन त्यांच्याच बाबींचा पाठपुरावा करण्याचे कार्य करतात आणि त्यांच्या हितार्थ कार्य करतात. इतकी निर्भिड मांडणी त्यांनी तत्कालीन काळात केलेली आहे. जी आज पत्रकार बंधु करताना दिसत नाहीत. अपवादात्मक स्थितीमध्ये काही पत्रकार करतात, परंतु त्यांचे प्रमाण खूप कमी आहे. त्यांच्यातील तफावत मोठ्या प्रमाणात दिसून येते. या लेखांची मौलिकता लक्षात घेतली तर डॉ. बाबासाहेबांची मुकनायकातून प्रकट झालेली पत्रकारिता दिसून येते. डॉ. बाबासाहेब विदेशातून शिक्षण घेऊन १९२३ ला भारतामध्ये परत आले आणि त्यांनी मूकनायक या वृत्तपत्राची झालेली वाताहत पाहिली, आर्थिक अडचणीमुळे बंद पडलेले वृत्तपत्र पाहिले आणि नंतर त्यांनी १९२४ ला 'बहिष्कृत हितकारणी' सभेची स्थापना केली. ही त्यांची पहिली सामाजिक संघटना. या संघटनेमार्फत त्यांनी महाडच्या चवदार तळ्याचा सत्याग्रह केला, परंतु तत्कालीन वृत्तपत्रांनी त्याला पाहिजे तशी प्रसिद्धी दिली नाही. म्हणून बाबासाहेबांना हे लक्षात आले की आपले वृत्तपत्र असल्याशिवाय आपली चळवळ व्यापक होणार नाही. त्यामुळे त्यांनी ३ एप्रिल १९२७ 'बहिष्कृत भारत' या वृत्तपत्राची स्थापना केली. आणि पुनश्च: हरिओम... या अग्रलेखात आपले विचार व्यक्त करून पहिल्या अंकाची सुरुवात केली. मूकनायक या वृत्तपत्रात संत तुकारामांच्या चार ओळी वृत्तपत्राचे अग्रभाग दिलेल्या होत्या तर बहिष्कृत भारत या वृत्तपत्रातून ज्ञानेश्वरांच्या चार ओळी दिलेल्या आहेत. बाबासाहेबांवर संत कबीरांचा प्रभाव होता. संत ज्ञानेश्वरांनी चातुर्वर्ण पद्धतीवर टीका केली होती. त्यांच्या दृष्टीने संत ज्ञानेश्वर हे बंडखोर संत होते, या समाजाला न्याय देणारे, बहुजनांचे कैवरी, त्यांना सोबत घेऊन चालणारे संत होते. म्हणून संत ज्ञानेश्वरांचे महत्त्व बाबासाहेबांना पटले होते.

"आता कोर्ट डेकनी हाती । आरूड पांडुरंग येथे रथी ॥

देई आलीगण वीरवृती समाधानी । जगो किर्ती रुढी स्वधर्माचा मानु वाढवी ॥





या भारापासून सोडवी मेदिनी । आता पाहता नीसुंखी होईल ॥

या संग्रामाचे चित्त देई । येथे हे वाचून काही बोल नाही ॥"

संत ज्ञानेश्वरांच्या हया ओळी दि. ३ एप्रिल १९२७ बहिष्कृत भारत वृत्तपत्रातील पहिल्या अंकाच्या अग्रणी नमूद केलेल्या दिसून येतात. या वृत्तपत्रातील अग्रलेख पाहिल्यास येथील महाड येथील धर्मसंगर... वरिष्ठ हिंदूंची जबाबदारी... इंग्रज सरकारची जबाबदारी... आणि अस्पृश्यांची कर्तव्य... हे सर्व अग्रलेख अभ्यासल्यास त्यांनी ब्रिटिश सत्तेवर केलेला कठोर प्रहार आपल्याला दिसून येतो. डॉ. बाबासाहेबांनी आपले विचार स्वतंत्रपणे मांडण्याचे कार्य वृत्तपत्रांमधून केले. अस्पृश्यता निवारणाचा पोरखळ... हा अग्रलेख त्यांचा अतिशय महत्त्वपूर्ण आहेत.

डॉ. बाबासाहेबांनी समता हे वृत्तपत्र शुक्रवार दि. २९ जून १९२७ ला सुरू केले. ते १५ मार्च १९२९ पर्यंत सुरू राहिले. ४ सप्टेंबर १९२७ ला समाज समता संघाची स्थापना केली. या संघाला उद्देशून समता हे वृत्तपत्र सुरू केले. या वृत्तपत्राचे संपादक देवराव नाईक हे जातीने ब्राह्मण होते. परंतु ब्राह्मणी वृत्तीचे नव्हते. या वृत्तपत्राने देखील बाबासाहेबांच्या चळवळीला गती व दिशा देण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य केले. यानंतर डॉ. बाबासाहेबांनी जे वृत्तपत्र सुरू केले ते म्हणजे जनता. हे वृत्तपत्र पंचवीस वर्षे सुरू राहिले. हे वृत्तपत्र २४ नोव्हेंबर १९३० का सुरू केले ते २८ जानेवारी १९५६ पर्यंत चालू राहिले. आंबेडकरी विचारांची धारणा घेऊन काम करणाऱ्या तमाम लोकांची कोणती धरोवर असेल तर ती जनता हे वृत्तपत्र आहे. कारण यामध्ये डॉ. बाबासाहेबांचा पंचवीस वर्षांच्या काळातील संपूर्ण प्रवास नमुद आहे. या मधील त्यांचे अग्रलेख, स्फुटलेख, स्तंभलेख हे अतिशय वाचनीय व समाजाला दिशा देणारे आहेत. वृत्तपत्र हे संपादकाच्या आधारवर मोठे होत असते. म्हणून देवराव नाईक, गंगाधर निळकंठ सहस्त्रबुद्धे, कमलाकांत विचित्रे, भास्कर रघुनाथ कद्रेकर, काशिनाथ मेश्राम, सावधकर ही सारी मंडळी जनता या वृत्तपत्राचे संपादक राहिलेली आहेत. त्यांच्या नावावरूनच त्यांच्या कार्याचे स्वरूप लक्षात येते. जनता या वृत्तपत्राचे नाव बदलून बाबासाहेबांनी ४ फेब्रुवारी १९५६ ला "प्रबुद्ध भारत" हे नाव ठेवले. हे वृत्तपत्र १ डिसेंबर १९५६ पर्यंत चालले. डॉ. बाबासाहेबांना तथागत बुद्धांचे विचार समाजामध्ये रुजवण्याचे होते, हिंसा घालून अहिंसा प्रस्थापित करायची होती. तिथला हिंसाचार, इथला वाद, माणसाला माणूस म्हणून जगण्याचा, मानण्याचा ज्या धर्मांमध्ये माणसाला माणूस संबोधले जाते असा धर्म सर्व लोकांना द्यायचा होता. यासाठी त्यांनी प्रबुद्ध भारत हे वृत्तपत्र सुरू केले. या वृत्तपत्राचे संपादक दादासाहेब गायकवाड, भैर्यासाहेब आंबेडकर, दादासाहेब रूपवते, घनशाम तळवलकर, शंकरराव खरात, ज. वि. पवार ही सर्व मंडळी तत्कालीन काळात या वृत्तपत्राचे संपादक होते. डॉ. बाबासाहेबांच्या या सर्व गोष्टींचा विचार केला. तर त्यांची पत्रकारिता ही खऱ्या अर्थाने आजच्या काळात सर्व पत्रकारांना आणि संपादकांना दिशा देणारी आहे. त्यांची निर्भीड पत्रकारिता ज्या पत्रकारितेतून खऱ्या अर्थाने समाज घडविला, खऱ्या अर्थाने देशाची बांधणी केली, एवढेच नव्हे तर भारताच्या बांधणीमध्ये ज्यांचे महत्त्वाचे योगदान राहिले, ज्या वृत्तपत्रांमुळे त्यांना आपली चळवळ गतिमान करता आली, लोकांपर्यंत पोचवता आली ती वृत्तपत्रांमुळेच. त्यामुळेच भारतातील तमाम मंडळी बाबासाहेबांच्या पाठीशी उभी राहिली. आजही डॉ. बाबासाहेबांचे चारही वृत्तपत्रे, त्यांचे अग्रलेख, स्तंभलेख हे सर्व समाजाला दिशा देणारे आणि उपयुक्त आहेत. डॉ. बाबासाहेबांनी आपल्या १९२० ते १९५६ या ३६ वर्षांच्या पत्रकारितेमध्ये त्यांनी कधीही नायक पूजेला धारा दिलेला दिसून येत नाही. म्हणून बाबासाहेबांची पत्रकारिता ही आदर्श होती. भारतामध्ये अशा पत्रकाराची गरज आहे. भारतामध्ये खऱ्या अर्थाने लोकशाही नांदवायची असेल तर या ठिकाणी निर्भीड आणि निर्भय पत्रकाराची समाजाला गरज आहे. त्यामुळे सध्यास्थितीमध्ये जी पत्रकारिता सुरू आहे त्यामध्ये परिवर्तन होणे गरजेचे आहेत. काही अपवादात्मक परिस्थितीत पत्रकार वगळल्यास इतर पत्रकारांनी



आपली नीतिमूल्ये जपून वस्तुनिष्ठ पत्रकारिता स्वीकारणे गरजेचे आहे. त्यासाठी डॉ. बाबासाहेबांच्या पत्रकारितेचा स्वीकार करणे ही काळाची गरज आहे.

संदर्भ ग्रंथ —

१. गायकवाड, शा. का. — "महामानव डॉ. बाबासाहेब रामजी आंबेडकर", राजवंश पब्लिकेशन, नवी मुंबई. २००७.

२. घोरमोडे के. यु., — "डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची साफल्यता व कृतिप्रवणता", विद्या प्रकाशन, नागपूर. ऑक्टोबर २०१५.

३. नगराळे, शंकरराव — "डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर विश्वरत्न कसे?", सुधीर प्रकाशन, वर्धा. ६ मे २०१२.

४. नाईक, देवराव, विष्णू (संपादक) — "जनहित प्रवर्तक पाक्षिक पत्र जनता", मुंबई — २४ नोव्हेंबर १९३०.

५. निगम, प्रा. गौतम — "बहुजन उद्धारक", कौशल्य प्रकाशन, औरंगाबाद. २० मार्च २००७.

६. पानतावणे, गंगाधर — "पत्रकार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर", प्रतिमा प्रकाशन, पुणे. द्वितीय आवृत्ती १९९६.

७. भटकर, पांडुरंग नंदराम (संपादक) — "मूकनायक", पाक्षिक, ३१ जानेवारी १९२०.

८. मून वसंत ; नरके हरी (संपा.) — "डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर लेखन आणि भाषणे" खंड १८ भाग—१, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर चरित्र प्रकाशन समिती, उच्च आणि तंत्रशिक्षण विभाग, महाराष्ट्र शासन, मुंबई २००२.

९. धुवंशी, रमेश — "डॉ. आंबेडकरांची भाषणे", सुगावा प्रकाशन, पुणे १९८०.

१०. हिवराळे, सुखराम — "लोकपत्रकार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर", प्रचार प्रकाशन, कोल्हापूर. १९८५.

११. शर्मा, वीरेंद्र — "भारतीय सामाजिक व्यवस्था", पंचशील प्रकाशन, जयपुर २००१.





आमचे प्रेरणास्थान व प्रमुख आधारस्तंभ  
**मा. श्री. मनीहर हरी खापणे (प्रसिद्ध उद्योगपती)**

अध्यक्ष, सह्याद्री परिसर शिक्षण प्रसारक मंडळ, पाचल  
श्री. मनोहर हरी खापणे कला व वाणिज्य महाविद्यालय, पाचल-रायपाटण  
मु. पो. रायपाटण, ता. राजापूर, जि. रत्नागिरी  
वेबसाईट - [www.khapnecollege.com](http://www.khapnecollege.com), ई-मेल - [mhkcollegepachal@gmail.com](mailto:mhkcollegepachal@gmail.com)

We the Research Organization will do provide help  
for the following works listed below.

- \*Support for Arts, Commerce & Science all Disciplines\*
- Research Paper Publication
- Book Chapters for Publications
- ISBN Publications Supports
- M.Phil Dissertations Publish
- Ph.D. Thesis in Book Format
- ISSN Journals with Impact Factor ( 7.675)
- Online Book Publication
- Seminar Special Issues
- Conference Proceedings

**Aadhar International Publication**

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

**Mobile : 9595560278 /**



Narayanrao Rana  
Badnera

**Aadhar PUBLICATIONS**

For Details [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

New Hanuman Nagar, In Front Of  
Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati ( M.S ) India Pin- 444604

Mob-- 9595560278, Email: [aadharpublication@gmail.com](mailto:aadharpublication@gmail.com)

ISSN



2274-1188



Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSN-2278-9308

# B.Aadhar

Peer Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

ISSUE No- (CCCXVI) 317

September -2021

National E-Conference on

Socio-Religious and Political Movements in  
the Pre-independence Period and Today



Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande

Director

Aadhar Social  
Research & Development  
Training Institute Amravati

Executive-Editor

Dr. Nilima D. Deshmukh

Principal

Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao  
Shingne Arts College,  
Khamgaon, Dist. Buldana

Editors

Dr. Shrihari Pitale

Assist. prof. & HOD Department of History

Late Pushpadevi Patil Art's and Science

College Risod Dist. Washim

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)

Executive-Editor

Dr. J. B. Devhade

Principal

Late Pushpadevi Patil Art's and Science  
College, Risod, Dist. Washim



*Narayanrao Rana*

Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyala  
Badnera



For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

Aadhar PUBLICATIONS

**INDEX**

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	Women Pioneers Of India: Their Contribution Towards women Education In Social Reform Movement, 19 <sup>th</sup> & 20 <sup>th</sup> centuries	Dr. Indira P	1
2	बुलडाणा जिल्ह्यातील सत्यशोधक जलसाकार शावजी रावजी पाटील : एक आढावा	डॉ. संतोष बनसोड	5
3	सत्यशोधक संपतराव भिवाजी शिंगणे	डॉ. किशोर मारोती वानखडे	8
4	महाराष्ट्रातील आर्थिक व सामाजिक स्थिती सुधारण्यासाठी कामगारांचे योगदान	प्रा. सुनिल मदन मनवर	18
5	राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांचे सामाजिक कार्य	प्रा. डॉ. एस.एन. तुरुकमाने	23
6	कर्मवीर अण्णांच्या वैचारिक वारसदार : प्राचार्या सुमतीबाई पाटील	डॉ. जाधव संतोष हनुमंत	25
7	स्वातंत्र्य संग्रामातील मातृभूमि वृत्तपत्राचे योगदान (सन १९३१ ते १९४७)	प्रा. डॉ. संतोष गोपाळकृष्ण कुळकर्णी	31
8	मातृभूमिच्या संपादिक प्रमिलाताई ओक यांच्या नेतृत्वातील चले जाव आंदोलन	प्रा. डॉ. भास्कर शा. वशिरे	34
9	सावित्रीबाई फुले यांचे शिक्षण विषयक कार्य: ऐतिहासिक चिंतन	प्रा. डॉ. संदिप व्ही. धुरले	37
10	स्वातंत्र्यपूर्व काळातील धार्मिक, सामाजिक व राजकीय चळवळी व सद्दाची परिस्थिती	प्रा. दिवाकर कांबळे	41
11	भारतीय स्वातंत्र्य लढयात स्त्रियांचे योगदान	डॉ. राजाराम पिंपळपल्ले	49
12	विधवांच्या उधारांसाठी ब्रिटीश काळातील चळवळी	डॉ. विजय रामदास तिरपुडे	55
13	महिला क्रांतीकारी कनकलता बरूआ यांचे भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील योगदान	विनोद उखर्डा धर्माळ	59
14	स्वातंत्र्यपूर्व काळातील सामाजिक चळवळी आणि आज (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या सामाजिक चळवळी)	प्रा. डॉ. आनंद के. भोयर	62
15	प्रांतिक कौन्सिलच्या खामगाव जळगाव खेडेविभाग मतदारसंघाची १९३७ची निवडणूक - एक विश्लेषण	डॉ. श्याम प्रकाश देवकर	67
16	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील महिलांचे योगदान	प्रा. रेखा बडोदेकर	71
17	पुनर्विवाह चळवळीचा इतिहास	प्रा. डॉ. भाऊराव रामेश्वर तनपुरे	76
18	स्वातंत्र्यपूर्व लढयातील बाबूगेनू सैद याची कामगिरी	स्मिता समिर अंध्याल	80
19	स्त्री जातीचे उधारक : महर्षी कर्वे	डॉ. आर. यु. हिरे	83





बुलडाणा जिल्ह्यातील सत्यशोधक जलसाकार

शावजी रावजी पाटील : एक आढावा

डॉ. संतोष बनसोड

इतिहास विभाग प्रमुख नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा जि. अमरावती.

### प्रस्ताविक

महात्मा ज्योतीराव फुले यांनी चातुर्वर्ण्य व्यवस्थेविरोधात महाराष्ट्रात सर्वप्रथम आवाज उठवतांना सांघीकरित्या चळवळ सुरू केली. या चळवळीतूनच मानवाला मानवतेची शिकवण देणाऱ्या सत्यशोधक समाजाची स्थापना पुण्यामध्ये दि.२४ सप्टेंबर १८७३ मध्ये झाली. संपूर्ण महाराष्ट्रात अल्पावधीतच या चळवळीचा प्रसार झाला. सत्यशोधक तत्वज्ञान जनसामान्यां पर्यंत पोहोचविण्यासाठी लोकभाषेचा प्रसार केला. एकोणविसाव्या शतकात दंडार, गवळण यांसारख्या समाजप्रबोधन करणाऱ्या कला पथकांचा आधार घेतांना महात्मा फुले यांच्या कालावधीतच सत्यशोधक जलसे सत्यशोधक समाजाचा गावोगाव प्रसार करू लागले. त्यामुळे अल्पावधितच संपूर्ण महाराष्ट्रात सत्यशोधक चळवळीचा प्रचार व प्रसार झाला. या जलस्यांमध्ये भीमराव महामुनी यांनी केलेले कार्य अत्यंत महत्वाचे आहे त्यांच्या कार्याची प्रेरणा घेऊन संपूर्ण महाराष्ट्रात असंख्य जलसाकार सत्यशोधक समाजाचा प्रचार प्रसार करू लागले. प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये बुलडाणा जिल्ह्यातील शावजी पाटील या जलसाकाराचे कार्यावर प्रकाश टाकला आहे.

शोधनिबंधाचा उद्देश :-

- १) बुलडाणा जिल्ह्यातील सत्यशोधक जलसाकार शावजी रावजी पाटील यांचे कार्याचा अभ्यास करणे.
- २) या जलसाकाराने केलेल्या कार्याचा आढावा घेणे.

संशोधन पध्दती :-

प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये ऐतिहासिक संशोधन पध्दतीचा आधार घेतला आहे.

शावजी रावजी पाटील - बिरशिंगपूर, जि. बुलडाणा -

इ.स. १९२३ मध्ये बिरशिंगपूर, जि. बुलडाणा येथे शावजी रावजी पाटील यांनी सत्यशोधक जलसा उभारला होता. हा जलसा बुलडाणा जिल्ह्यात विविध ठिकाणी सत्यशोधक समाजतत्वज्ञानाचे प्रयोग सादर करित असे. चौघा, तांदुळवाडी, दुधा, महिमळ या बुलडाणा जिल्ह्यातील खेड्यांमध्ये या जलशाचे प्रयोग झालेले आढळतात. तसेच चिखली तालुक्यात देखील या जलशाने मोठ्या प्रमाणावर समाजजागृती केली होती. जिल्ह्यातील विविध गावांसह बिरशिंगपूर या स्वग्रामामध्ये देखील जागृतीचे जोरदार काम पाटील यांच्या जलशाने पार पाडले होते.

ऑक्टोबर १९२३ मध्ये वऱ्हाड प्रांतातील दौऱ्यामध्ये या जलशाने चिखली तालुक्यातील पांगरखेड, बुलठाणा, सावरगाव, मालगणी, आंभोडा, हातेडी खुर्द, सागवण, कौलघड, शिरपूर, माळवंडी, केसापूर, देऊळघाट, धाड, चिखली वगैरे गावी मोठ्या प्रमाणावर समाज जागृतीचे कार्य केले होते. त्यावेळी या प्रांतातील किनगावराजा, जांभोरा, राहेरी, अंबासी, कोलरा, एकलारा, खंडाळे, शेंदुर्जन इत्यादी गावी आनंदस्वामी व पंढरीनाथ पाटील यांच्या जाहीर व्याख्यानांच्या बरोबरीने प्रस्तुत जलशाचे प्रयोग झाले होते. चिखली हे पंढरीनाथ पाटील यांचे कर्मभूमी असल्याकारणाने त्या भागात मोठ्या प्रमाणावर समाजकार्य करण्यात या जलशाला त्यांचे सहकार्य आणि मोलाचे योगदान लाभलेले होते.



दि. २४ सप्टेंबर १९२३ रोजी बुलढाणा सत्यशोधक परिषद मोठ्या धाटाने पार पाडली होती. या परिषदेच्यावेळी रात्री शावजी पाटील यांच्या जलशाने प्रयोग सादर केले होते. जलशा दरम्यान पंढरीनाथ पाटील यांचे भाषण होऊन मातोळेकरांचा जलसाही सादर झाला होता. परिषदेचे स्वागताध्यक्ष आनंदस्वामी तर अध्यक्ष सीताराम नाना चौधरी हे होते. परिषदेस पाच हजार जनसमुदाय उपस्थित होता, तर जलशाच्या प्रयोगावेळी आठ हजार जनसमुदाय उपस्थित होता. अशा प्रकारे परिषदेचे औचित्य साधून या जलशाने आठ हजार लोकसमुदायास ज्ञानाचे अमृत पाजण्याचे बहुमोल कार्य केले होते. या परिषदेबरोबरच धाड(बुलढाणा) या परगण्यातील लोकांची परिषद भागोजी पाटील यांचे अध्यक्षतेखाली पार पडली होती. त्यावेळी बऱ्याच वक्त्यांची भाषणे झाली होती. यावेळीही या जलशाने तिथे प्रयोग सादर करून समाजकार्य पार पाडले होते. बुलढाणा जिल्ह्यातील ब्राम्हणेतरांच्या विविध परिषदा तसेच सत्यशोधक समाजाचे पुढारी आणि महत्त्वाचे प्रचारक यांच्याशी या जलशाचा घनिष्ठ असा संबंध येऊन गेलेला आढळतो. त्याच्या माध्यातून या जलशाने आपले सत्यशोधक प्रचार कार्य विविध भागात साध्य केले होते.

बुलढाणा जिल्हा परिसर आणि विशेषतः चिखली तालुक्यातील कार्य करणाऱ्या या जलशास चिखली गावातच सनातन्यांच्या विरोधास सामोरे जावे लागले होते. चिखली येथे ही मंडळी जलसा करण्याकरिता गेली असता तेथील पुरोहीत लोकांनी जलसा न होण्याविषयी अतोनात प्रयत्न केले होते. परंतु येथील सरकारी अधिकाऱ्यांच्या सहकार्यामुळे विरोध मोडीत निघून अधिक दोन दिवस जलशांचे सादरीकरण झाले होते. पुरोहितांच्या विरोधी प्रयत्नांचा परिणाम प्रस्तुत जलशांवर कधीच झाला नाही. तसेच जलशाचा हेतू निर्मळ आणि समाजविधायक असल्याचे कर्तव्यतत्पर अधिकाऱ्यांच्या लक्षात येऊन अधिकारी मंडळींनी जलशाची पाठराखण करण्याचे काम केले होते. परिणामी विरोधकांना निरूत्तर व्हावे लागत होते.

प्रस्तुत जलशाची परिणामकारकता जलशाच्या चिखली येथील कार्यावरून दिसून येते. जलशाच्या चिखली येथील प्रयोगाच्या निमित्ताने तेथील लोकांत मोठ्या प्रमाणावर जागृती होऊन पुरोहितशाहीबाबत तिरस्कार निर्माण झाला होता. त्याचप्रमाणे धाड येथील श्रीमंत शाहू सावरकार कधी तमाशा न पाहणारे असे गृहस्थ या जलशासमयी हजर होते. त्यांच्या मनावर जलशाचा असा परिणाम झाला होता की, भटजी कोणत्याही ठिकाणी त्यांना सापडो, त्या ठिकाणी त्यांची कानउघडणी करावायाची ते सोडीत नसत. तसेच त्या प्रसंगी भटजीकडून कोणत्याही प्रकारचा धर्मविधी करावयाचा नाही. अशा कित्येकांनी शपथा देखील घेतल्या होत्या. अशा प्रकारचे लोकांच्या आचार-विचारांमध्ये बदल घडविणारे आमूलाग्र परिवर्तन प्रस्तुत जलशाब्दारे साध्य झाले होते.

**सारांश :-**

शावजी रावजी पाटील यांनी महात्मा ज्योतिराव फुले यांना गुरुस्थानी मानून सत्यशोधक समाजाचा जलशाब्दारे प्रचार केला. आनंदस्वामी, पंढरीनाथ पाटील यांचे सोबत बहुजन हितास झटणाऱ्या चळवळीत उत्साहाने सहभागी झाले. इ.स. १९३० चे कालावधीत पंढरीनाथ पाटील, आनंदस्वामी, गणपतराव शिंगणे, संपतराव शिंगणे यांचा जलसा सार्वत्रिक सत्यशोधक समाजाचा प्रसार करित होता. त्यांचे कार्याची प्रेरणा घेऊन शावजी रावजी पाटील यांनी स्वतःचा जलसा स्थापना करून संपूर्ण बुलढाणा जिल्ह्यात वगाच्या माध्यमातून जनचळवळीचा प्रचार केला. पर्यायाने सत्यशोधक चळवळ तळागाळापर्यंत पोहोचण्यास मदत झाली.





**संदर्भ साधने :-**

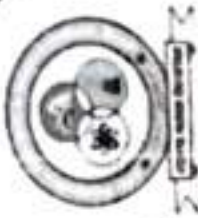
- १) दैनिक, विजयी मराठा, दि.५ नोव्हेंबर १९२३.
- २) दैनिक, दिनमित्र, दि. २९ ऑगस्ट १९२३.
- ३) भिंगारदिवे डॉ. गजानन, सत्यशोधक जलसे, परंपरा स्वरूप आणि वाटचाल, शब्दशिवाय प्रकाशन, सोलापूर, इ.स.२०२१.
- ४) बनसोड डॉ. संतोष, पश्चिम विदर्भातील सामाजिक चळवळीचे शिलेदार भाग एक, आधार प्रकाशन, अमरावती.
- ५) चदनशीव भस्करराव, सत्यशोधकी आणि आंबेडकरी जलसे प्रचार प्रकाशन, कोल्हापूर इ.स. १९९०.

**Principal**  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera





Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College, Khamgaon, Dist Buldana ,  
Pushpadevi Patil Arts and Science college, Risod and Ambedkarite History Congress.



jointly organised One Day Multi-Disciplinary National Level E-Conference


Socio-Religious and Political Movements in the Pre-Independence Period & Today

## CERTIFICATE

This is to certify that Dr./Prof./Mr./Mrs..... डॉ. संतोष बनसोड  
of..... इतिहास विभाग प्रमुख, नारायणराव रणण महाविद्यालय, बुइनेरा जि. अमरावती.....  
participated in One Day Multi-Disciplinary National Level E-Conference on topic 'Socio-Religious and Political  
Movements in the Pre-Independence Period & Today' organized on 21<sup>st</sup> November 2021 by Sahakar Maharshi Late  
Bhaskarrao Shingne Arts College, Khamgaon, Dist Buldana, Pushpadevi Patil Arts and Science college, Risod and  
Ambedkarite History Congress. & B.Aadhar Multi-Disciplinary Peer Reviewed & Index Research Journal, Amravati  
with Impact Factor 7.675 (SJIF) & ISSN: 2278-9308. He/She presented his/her Research Paper  
entitled..... बुलडाणा जिल्ह्यातील सत्यशोधक जलसाकार

in the Paper Reading Session. This certificate is issued in recognition of publication of the research paper.

  
Chief Editor  
Prof. Wifag S. Gawande

  
Principal  
Dr. Nilima D Deshmukh

  
Principal  
Dr. J. B Devhade

  
Editor  
Dr. Pramad R. Chavan

  
Editor  
Dr. Shrihar D. ...





## New Chapter of Buddhism in Berar

Dr. Santosh Bansod

'Suman Nivas' , Near LIC Colony,

Ram Nagar, Amravati.

Pin - 444606 MO - 8275418986

email - [bansodsantosh73@gmail.com](mailto:bansodsantosh73@gmail.com)

---

Buddhism is the real physical path to make our life more prosperous and meaningful. It is the real religion which developed human mind towards physical reality. It encourages human to take any decision with your own mind. One should take in his mind that only physical world is global truth and the problems which human being faces in his daily life is arises from the physical causes so the remedy of that problems must be of physical background. India is always the destination to those who have to learn philosophy of spirituality, Lord Buddha is the lighthouse to them all truthseekers. Lord Buddha's philosophy is balance between spiritual and physical life. All other religious paths are one sided developed towards spiritual life only. But Buddha's path is the answer to all problems of physical and spiritual life. That's why the foreign travelers were attracted towards India ; that attraction is only for Lord Buddha. He was the most enchanting personality; having the solution of all problems of human being. So the attraction towards Buddhism and its literature fetches out the scholars to India.

**Berar Region** – Berar is Western part of Vidarbha region. The eastern part of Vidarbha called as '**Zadi**' and The Western part of Vidarbha called as '**Berar**'. The Wardha river divided Vidarbha in above mentioned two parts. The name of Berar developed from the name of '**Varhad**'. The name of '**Varhad**' also developed from the name of 'The Wardha' river. The name developed as '**Vardatat -Vardatah** –

  
Principal

Narayanrao Rana Mahavidyalaya



**Vaarad – Varhad - Barar to Berar**. 'Today's Berar is made of Amravati revenue division. There are five districts in that division and they are Amravati, Akola, Yeotmal, Washim and Buldana.

**Buddhism and Berar** – About Maharashtra '**Waghali**' inscription of Jalgaon District suggest us that the Mauryan empire must spread in Maharashtra. The '**Supparak**' (Shurparak or Sopara) was the most important trade city of Buddha era. The '**Thergatha**' mentioned one tradesman named '**Punna**' or '**Purna**' of Thane. He accepted Buddhism from Lord Buddha at '**Shravasti**'. He built sandalwooden '**Vihar**' at '**Sopara**'.<sup>2</sup> Lord Buddha was invited by this '**Purna**' and Lord Buddha visited the Sopara. This incident mentioned in '**Papanchsuyani**' and '**Sarathyappakarini**' books. The oldest inscription of Vidarbha from was belong to Ashokan period. This inscription found in Deotek village Districts Chandrapur. This inscription engraved by Mahamatya of Ashoka. They have been engraved religious message of Ashoka. There are many no. of inscriptions was found from Adam and Paoni. Mahakshtrapa Rupiamma Pillar Inscription reported from Paoni. These inscriptions related Sunga-Satvahana period. Chandala, Patur, Mohadi in this rock-cut cave also having inscription. Nashik cave inscriptions also related to Buddhism of Vidarbha. Copper plate inscription related to Vakataka period and later Vakatak period. From this copper plate inscription we got information which is useful for study of Vidarbha Buddhism.<sup>3</sup> This reveals that the Buddhism was well settle in Maharashtra from the age of Lord Buddha. Vidarbha also have great heritage of Buddhism. Pavani the famous archilological site reveals that the Buddhism was settle down in Vidarbha far ago of 3<sup>rd</sup> century BC. Berar also have great heritage of Buddhism. There are many famous archilological sites which reveals that the Buddhism have great heritage in this region. Some points from which we can

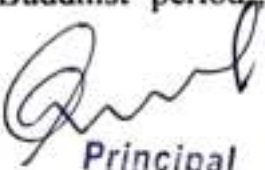
  
Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera





verify the facts of Buddhism and we can reinvent the new facts about Buddhism in Berar.

1. **Bhon** – This archiological site is in Sangrampur tahasil district Buldana. There found the 3<sup>rd</sup> Century BC stupa of Mauryan era. This site is most important through the eyes of Buddhism and Indian heritage. This site show that the Buddhism was settled down in this region far ago of 3<sup>rd</sup> Century BC. Most amazing fact is that the **Stupa** was built with stone and bricks. Bhon must be that spot where famous Chinese traveler Hue – en – tsang have visited. He written about that capital and region named Mo – Ho- La- Cha. So the **Bhon** must be game changer archeological site of Berar about the view towards Buddhism.<sup>4</sup>
2. **Coins and Trade route** – There found Roman coins at many archiological sites of Berar. This archiological proof reveals the traderout towards Pavani via Bhon –Kholapur - Kaundinyapur. These coins found at Kholapur, Tadli, Adam, and Sapegaon. Satvahana coins also found at Bhon and many other sites of Berar.<sup>5</sup> One seal found from Mahurzari excavation and this is related to Buddhism. We can conclude that the trade route of Buddhist trade cities must gone through Berar and that trade route connect the Buddhist archeological sites of that time. The trade route may be Bharuch to Bhon via river route and then Bhon – Kholapur – Kaundinyapur – Pavani. The other trade route must be Bhon – Pimpalgaon Raja- Chandol – Bhokardan- Paithan third one route Bhon – Pimpalgaon Raja – Jaipur – Ajanta.
3. **Caves** – Manjari (Amaravati district), Patur(Akola Disrict), Pipalgaon Raja, Savali (Buldhana district), Kalanb, Nibdyarvha (Yeotmal District) etc. cave of Vidarbha region. We need to study all the sites very minutely. Patur caves are of Buddhist period, there found inscription in

  
Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera



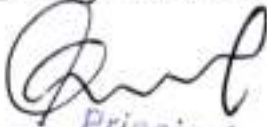
Dhamm Script over the cave. One other inscription found at the cave pillar and architraves.<sup>6</sup> This cave must be of 3<sup>rd</sup> century BC. The caves must be ruined by the time or must be demolished by any invader of opposite religious side. **Salbardi** Caves of Morshi tahasil in Amravati district is related to Buddhism. But today that cave converted into lord Shiva temple and the cut headed sculpture which worshiped as goddess is actually the idol of Lord Buddha.<sup>7</sup> The sangharama mentioned By Hue en Tsang<sup>8</sup> must be the **Salbardi** Cave Sangharam and not of Ajanta Caves. Cisterns from the Mailgad fort of Buldana district must be the Buddhist rock cut caves. Chandol tahasil Buldana District Buldana was the famous Buddhist study center of then time.

4. **Mahavans** – The famous Buddhist religious book **Mahavans** reveals the names of preachers which was sent after the 3<sup>rd</sup> '**Buddha Sangiti**'.<sup>9</sup> In that book the name of Maharashtra and the preacher which was send to Maharashtra was mentioned in it.<sup>9</sup> The line

महारठ्ठं महाधम्मरक्खितत्थेर नामकं ।

suggests that '**Mahadhammarakkhit**' was send to '**Maharattha**' (Maharashtra) as preacher. This Mahadhammarakkhit spread Buddhism in this region.

5. **Inscriptions** – **Sanchi** and **Bharhut** Stupa of Madhyapradesh are famous Buddhist Stupas have inscriptions of that stupas. The inscription denotes the names of donationars of various places of Berar<sup>10</sup>. This places are Bhatkuli (Amravati – The name of Bhatkuli actually mentioned as Bhijakatak) and Bhogwardhan (Now in Jalna District but it was part of Berar for long time). This reveals that the follower of Buddhism was in major numbers in Berar and also those followers seems to be well established community. Because if any community donating

  
Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badli





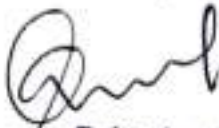
for building the stupas in another region that means that community must be well established or they must be trademan and profit gainer of Buddhist trade routes.

6. **Nagarjuna** - Famous Buddhist philosopher Nagarjuna was friend of Satvahan king Yadnyashri Gautamiputra Satkarni ( 166 AD to 196 AD). Nagarjuna wrote famous letter cum book to named '**Suhrullekha**' to preach to the Yadnyashri Gautamiputra Satkarni. This Nagarjuna was from Vidarbha region. He was teacher at Nalanda Buddhist university.<sup>11</sup> He spread Buddhism in Krushna Besin and was living at '**Srisailam**' in todays Andhrapradesh. We can imagine that if a person from Vidarbha teaches at Nalanda and written more than 20 books on Buddhism, that Vidarbha was the thinktank of Buddhism then. His 20 books of Buddhism are found in Chinese language. He was the founder of the '**Shunyatvavad**' philosophy. He was also the founder of '**Madhyamika**' philosophy.
7. **Kaundinya and Purna** – Kaundinya and Purna was mames of Buddhist monks.<sup>12</sup> The name of them have regional reference from Berar. The origin of these name must be from the geographical name of the place and river from Berar.

**Conclusion** – *Berar was the most important center of Buddhist period. Buddhism established in Berar in the time of Lord Buddha. Now time have come to reinvent the history of Buddhist Berar with these new chapters and visions.*

#### References –

1. Jarrett H.S. (Translator), '*Ain - E- Akbari of Abul Fazl- I - Allami*' Vol II, Second Edition, Royal Asiatic Society of Bengal; 1 Park Street, Calcutta, 1949, Page no 237

  
Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera



2. Eugene Burnouf , '*Introduction to the History of Indian Buddhism*', Chicago University Press Chicago, Feb 2010, Page no 235 to 270.
3. Zopade Nishant Sunil, '*Archeology of Buddhism in Vidarbha region*', A thesis submitted to Vishva Bharti University, Shantiniketan, Bolpur, West Bengal, Page no 7.
4. Deokar Shyam Prakash, '*Historical Visit of Hue en Tsang to Maharashtra*', paper submitted to South Indian History Congress, Hyderabad, 2019.
5. Zopade Nishant Sunil, '*Archeology of Buddhism in Vidarbha region*', A thesis submitted to Vishva Bharti University, Shantiniketan, Bolpur, West Bengal, Page no 7.
6. Hiralal, '*Discriptive lists of Inscriptions in the Central Province and Berar*' The Government Printing Press, Nagpur, 1916, Page no 134 & 135.
7. S. V. Fitzgerald & A. E. Nelson, '*Amraoti District, Vol. A, Central Provinces District Gazetters*', Caxtpm Works, Free Road, Bombay, 1911, Page no. 425.
8. Samuel Beal, '*SI-YU-KI, Buddhist Record of The Western World. Vol. II*', Trubner & Co Ludgate Hill, London, 1884, Page no 255
9. M. S. More, '*Maharashtratil Buddha Dhammach Itihas (Marathi)*', Kaushaly Prakashan, Aurangabad, 2<sup>nd</sup> Edition 2016, Page no 44.
10. Ebid, Page no 66.
11. Bapat P. V., '*2500 years of Buddhism*', Indian Government, 1956, Page no 194.
12. Sonavane Shivaji, '*Sopara – Bauddha Sanskrutiche Kendra (Marathi)*', Sugava Prakashan Pune, First Edition, 2012, Page no 28.

Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera





Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSN-2278-9308

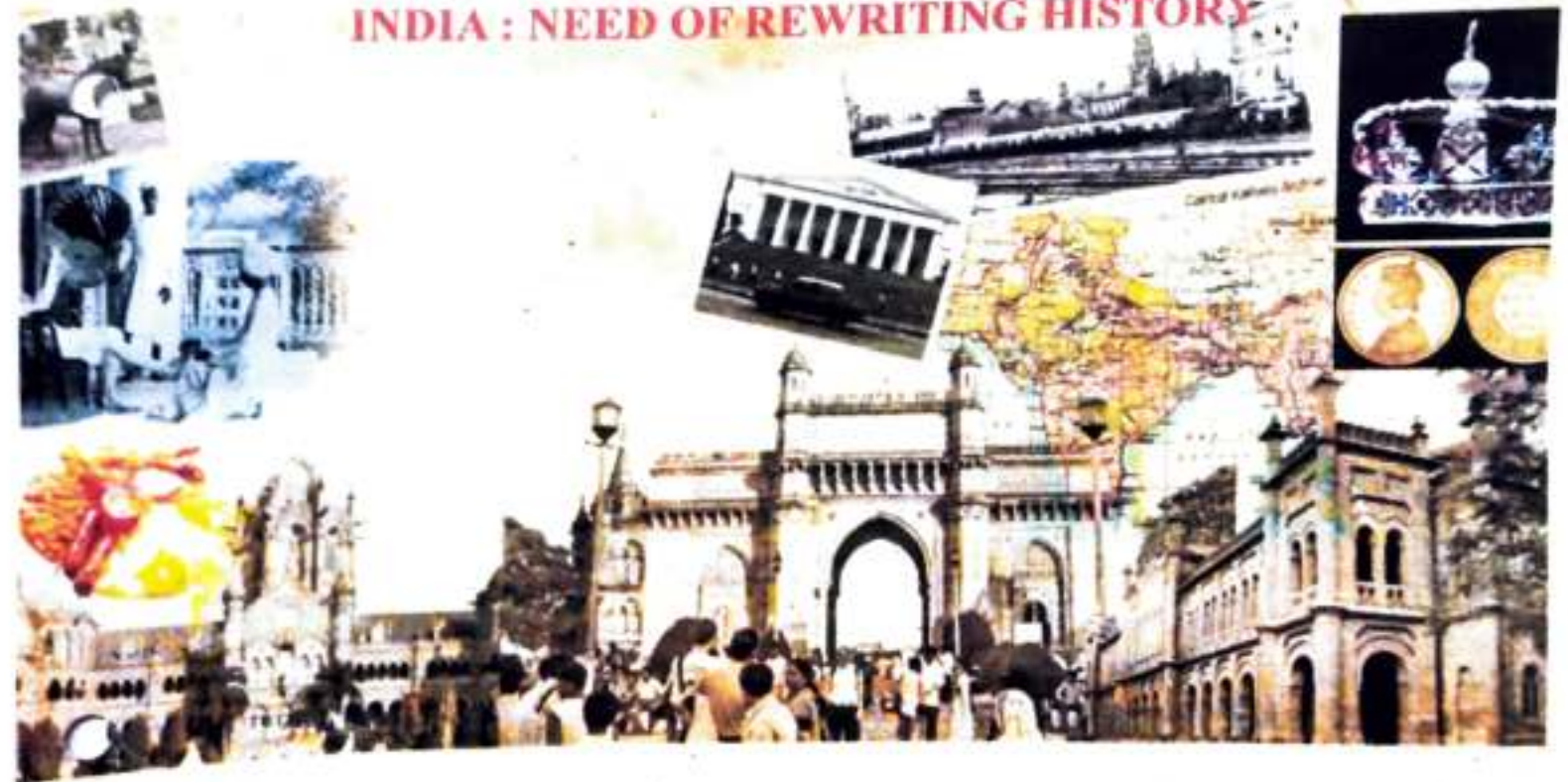
# *B.Aadhar*

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October-2021

CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF  
INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY



Chief Editor

**Prof. Virag S. Gawande**

Director

Aadhar Social  
Research & Development  
Training Institute Amravati

Editor

**Dr Santosh Bansod,**

Head , Department of History  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera, Dist. Amravati.

Editor

**Dr. Dheeraj Kumar Najan,**

Head , Department of History  
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya,  
Gadegaon, Telhara Dist. Akola

Principal



Narayanrao Rana Mahavidyalaya





**INDEX-321**

S.No.	Topic	Author	Page No.
1	ब्रिटिश आक्रमणाचे वऱ्हाडवरील शैक्षणिक परिणाम	प्रा.डॉ. संतोष बनसोड	1
2	ब्रिटिशराजवटीचे भारतावरील परिणाम	डॉ.उर्मिला क्षीरसागर	4
3	वॉरन हेस्टिंग्ज कालखंडात भारतात झालेल्या बदलाच्या ऐतिहासिक आढावा (इ.स. १७७२ - १७८५)	डॉ. शरद गावंडे / पंढरीनाथ पोपट शेजुळ	8
4	वासुदेव बळवंत फडके यांची सशस्त्र चळवळ	डॉ श्रीहरी रंगनाथराव पितळे	11
5	भारतावरील ब्रिटिश आक्रमणाचे सांस्कृतिक जीवनावरील परिणाम	प्रा. जंभोरे अशोक गंगाराम	13
6	भारतातील ब्रिटिश आक्रमणाचे आर्थिक जीवनावरील परिणाम	प्रा.सुरेखा रामदास लगड	16
7	भारतावर ब्रिटिश आक्रमणाचे राजकीय जीवनावर झालेले परिणाम एक ऐतिहासिक चिंतनशील अध्ययन	प्रा.डॉ. एन. आर. वर्मा	18
8	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील क्रांतिकारी स्त्रियांचे योगदान	प्रा. डॉ. किशोर शेषराव चौरे	22
9	भारतावरील ब्रिटिश आक्रमणाचे शैक्षणिक जीवनावर झालेले परिणाम	प्रा. डॉ. शरद गावंडे/प्रा. संजय सदाशिव बनकर	25
10	ब्रिटिश कालीन शिक्षण पद्धतीचे भारतीयांवरील परिणाम	डॉ. एस. यु. गावंडे/अमोल विश्वासराव तायडे	28
11	ब्रिटिश कालीन शिक्षणाचे भारतावर झालेले परिणाम	डॉ. प्रमोद ना. घ्यार	31
12	ब्रिटिश साम्राज्यवादाविरुद्ध भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनाची दीर्घकालीन रणनीती	सहा. प्रा. डी.एन. रिडे	37
13	गव्हर्नर जनरल लॉर्ड डलहौसीचे खालसा धोरण एक ऐतिहासिक चिकित्सा १८४८-१८५६	श्रीकांत पांडुरंग तळेकर/डॉ.शरद गावंडे	40
14	बहिरम यात्रा - एक ऐतिहासिक मागोवा	कु. शिल्पा युगेन्द्र अंबळकार	44
15	भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव...	डॉ.सोमनाथ लक्ष्मण गुंजकर	47
16	'भारतावरील ब्रिटिश आक्रमण, सामाजिक जीवन व भाषांतर युग'	डॉ.संदीप अर्जुनराव बनसोडे	53
17	ब्रिटिश आक्रमणाने स्त्री जीवनातील सौतप्रथेवर झालेले परिणाम	प्रा. डॉ. कुसुमदेव गं. सोनटक्के	56
18	भारतावरील ब्रिटिश आक्रमणाचे स्त्री जीवनावरील परिणाम	प्रा. कु. सुषमा जयकुमार फरसोले	58



**ब्रिटिश आक्रमणाचे वऱ्हाडवरील शैक्षणिक परिणाम****प्रा.डॉ. संतोष बनसोड****इतिहास विभाग प्रमुख****नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा जि.अमरावती, मो.नं.8275418986**

प्राचीन भारताचा शैक्षणिक इतिहास हा प्रगल्भ आहे. मात्र या शिक्षण पध्दतीला सुरवात नेमकी कधी झाली हे सांगणे अत्यंत कठीण आहे. मात्र जेव्हा मानवाने एकत्र अर्थात समुहाने राहण्यास सुरवात केली तेव्हापासून शिक्षणाला सुरवात झाली. भारताच्या इतिहासाचे कालखंड पाहले गेले आहेत. या कालखंडातील वैदिक कालखंडाचा विचार केला असता या काळातील वर्णव्यवस्थेमध्ये शिक्षणाची मत्केदारी एका विशिष्ट वर्गाकडे होती. ब्राह्मण हा वर्णच फक्त शिक्षण घेवू शकत होता. इतर वर्ण हे अज्ञानाच्या गर्तेत पडलेले होते. इ. स. पुर्व 6 व्या शतकात मात्र गौतम बुद्धाने सामाजिक क्रांतीच घडवून आणली. येंदूनच जातुवर्ण व्यवस्थेला तडा दिला. ब्राह्मणाची शिक्षणावरील मत्केदारी संपुष्टात आणून सर्वांना शिक्षणाची द्वारे खुली करून दिलीत. परिणामी सर्वच बौध्द विहार व मठांमध्ये शिक्षण दिल्या जावु लागले. या विहार व मठात सर्व समुहातील लोक शिक्षण घेवू शकत होते. यामधील काही बौध्द विहार हे जागतीक दर्जाचे केंद्र ठरलेत. अनेक विहारांमध्ये विद्यापीठांची निर्मिती झाली. या मधील उज्जयनी, तक्षशिला, नालंदा, सांची, बल्लभी, विक्रमशिला इत्यादी सारखे विद्यापीठ ही नावारुपास आलेत विद्यापीठांमध्ये अशिया खंडातील सर्वच घटकातील विद्यार्थी शिक्षण घेवू शकत होते. मौर्य काळांतरत मात्र शिक्षणावर परत हल्लाबोळ झाला. शुंग काळापासून ही शिक्षण व्यवस्था विशिष्ट समाजाची मत्केदारी ठरली. वऱ्हाडची स्थिती यापेक्षा वेगळी नव्हती.

वऱ्हाड हा अमरावती, अकोला, यवतमाळ, बुलढाणा व वाशिम या पाच जिल्ह्यांपासून बनलेला आहे. या वऱ्हाडचे क्षेत्रफळ सुमारे 46090 किमी आहे. या वऱ्हाडच्या पुर्वेस नागपूर विभाग पश्चिमेस नाशिक विभाग उत्तरेस मध्यप्रदेश तर दक्षिणेस औरंगाबाद विभाग वसलेला आहे. 20.56उ. 77.47 पु. 20.93 उ. 77.75 एवढ्या भूभागावर वसलेल्या वऱ्हाडाची 2011 च्या जनगणने नुसार 1,०12,०66,653 एवढी लोकसंख्या होती. या वऱ्हाडवर मौर्य, शुंग मातवाहन, वाकाटक, राष्ट्रकुट, चानुक्य या प्राचीन धराण्याची सत्ता होती. या काळात मुद्धा शिक्षणाचा फारसा विस्तार झालेला नव्हता. शिक्षणाची मत्केदारी ही ब्राह्मण वर्गाकडे होती. मुलतानशाही व मुघलकाळात मुद्धा फारसा बदल झालेला दिसत नाही. छत्रपती शिवाजी महाराजांनी या तत्कालीन समाजवेवस्थेला तडा देवून बंड घडवून आणले. त्यांनी योग्यतेनुसार व्यक्तींना आपल्या स्वराज्य निर्मितीच्या प्रकियेत सामवून घेतले. परिणामी बर्हीजी नाईक मारुबा रामोजी हा गुगहेर विभागाचा प्रमुख बनला. याचे मुळ कारण हे शिक्षणच असावे. गुप्त बातम्यांचे खुलामे महाराजापर्यंत ऐक्यविण्याची विद्याया शिक्षणानेच केली असावी. ही स्थिती मात्र अपवादोत्क होती. एकंदरीत ब्रिटिश आक्रमणाच्या पुर्वी वऱ्हाडची शैक्षणिक अवस्था ही दयनीय होती.

ब्रिटिशांच्या आक्रमणानंतर वऱ्हाडच्या शैक्षणिक स्थितीत बदल होत गेला. इ. स. 1827 रिचर्ड जोकिन्स यांच्या नागपूर प्रदेशाच्या अहवालामध्ये नागपूरप्रांतात 46 मार्चजनिक शाळा असल्याचा दाखला मिळतो. या शाळांमध्ये 936 विद्यार्थी शिक्षण घेत होते. वऱ्हाड हा भाग मुद्धा नागपूर प्रांताचाच घटक होता. इ. स. 1854 च्या बुद्ध्या छलित्याने वऱ्हाडला मुद्धा प्रभावित केले. इ. स. 1866 ला वऱ्हाडचे शिक्षण खात्याची स्थापना करण्यात आली.

आली. या खात्यांतर्गत वऱ्हाडात डायरेक्टरच्या अधिकारात दोन इनस्पेक्टर, दोन सबइन्स्पेक्टर पदांची निर्मिती करण्यात आली. वऱ्हाडचे पहिले डायरेक्टर मि. सिंकलेअर यांनी शिक्षणाला भक्कमपणे चालना देण्याचा प्रयत्न केला. या वऱ्हाडात इ. स. 1886 पर्यंत 30 प्राथमिक, 5 मिडल स्कूल कार्यरत होत्या. या शाळांमध्ये 1871 ला पुढील प्रमाणे विद्यार्थ्यांची स्थिती होती.

अ. क्र.	शाळेचा प्रकार	एकूण शाळा	विद्यार्थी संख्या
1	शासकीय हायस्कूल	02	150
2	शासकीय माध्यमिक शाळा	52	3350
3	शासकीय प्राथमिक शाळा	262	3917
4	अनुदानित माध्यमिक शाळा	01	06
5	अनुदानित प्राथमिक शाळा	02	68
6	शासकीय नॉर्मल स्कूल	01	60
7	शासकीय कन्या शाळा	27	456
एकूण		347	8007

या नंतर शिक्षणाचा विस्तार होत गेला. सन 1878 ला वऱ्हाडात 712 शाळा कार्यरत होत्या. मात्र महाविद्यालय एकही नसल्यामुळे फक्त 11 विद्यार्थी हे महाविद्यालयीन शिक्षण घेत होते. हंटर कमिशनच्या पूर्वी अर्थात 1881 ला वऱ्हाडची शैक्षणिक स्थिती खालीलप्रमाणे होती.

अ. क्र.	शाळेचा प्रकार	शाळांची संख्या	विद्यार्थी संख्या
1	शासकीय शाळा	475	26327
2	अनुदानित शाळा	134	2856
3	विनाअनुदानित शाळा	266	3038
एकूण		875	32221

सन 1882 ला हंटर कमिशनच्या अहवालानुसार शिक्षण व्यवस्थेची पुर्ण:मांडणी करण्यात आली. शिक्षणाला चालना मिळाली समाजात शिक्षण घेतलेल्या अनेक नवतरुणांनी शैक्षणिक प्रबोधन सुरू केले. त्या बरोबर ब्रिटिशांनी सुद्धा अनेक विनाअनुदानित शाळांना अनुदान दिले एवढेच नव्हे तर सन 1992 मध्ये शिक्षकांचा जो पगार 15 रु. होता तो 19 रु. करण्यात आला. 4 वर्षांचा असलेल्या कर्नाकुलर कोर्स हा 6 ते 10 वर्षांपर्यंतच्या मुलांकरिता प्रेरणादायी ठरला. परिणामी वऱ्हाडातील प्राथमिक शिक्षणाची स्थिती ही सुधारलेली दिसून येते. वऱ्हाड हा मध्यप्रांत राज्याचा भाग असल्यामुळे या वऱ्हाड व मध्यप्रांताची 1927 ला शैक्षणिक स्थिती पुढीलप्रमाणे होती.

अ. क्र.	शाळांचे प्रकार	शिक्षकांची संख्या 1916-17			शिक्षकांची संख्या 1926-27		
		220	268	488	329	297	626
1	शासकीय	220	268	488	329	297	626
2	स्थानिक वार्ड आणि महापालिका	2670	5129	7799	4454	4553	9007
3	अनुदानित	120	591	711	199	608	807
4	विनाअनुदानित	19	389	408	51	356	407
एकूण		3029	6377	9406	5033	5814	91847





इ. स. 1923 नंतर बऱ्हाडच्या प्रत्येक जिल्ह्यात प्राथमिक शिक्षण देणाऱ्या अनेक शासकीय, अनुदानित, विनाअनुदानित व खाजगी स्तरावर कार्य करणाऱ्या प्राथमिक शाळा निर्माण झाल्यात.

दि. 24 एप्रिल 1922 ला बऱ्हाड मध्यप्रांताचा शैक्षणिक कायदा करण्यात आल्यामुळे बऱ्हाडातील माध्यमिक शिक्षणाला इ. स. 1922 ला शिक्षणाची गती वाडली परिणामी अनेक ठिकाणी माध्यमिक शाळा स्थापन झाल्यात. उदा. मेहकर जि. बुलढाणा येथे 1905 ला न्यू इंग्लिश हायस्कूलची स्थापना करण्यात आली. इ. स. 1935 ला अकोला येथे दि-बेरार-जनरल एज्युकेशन सोसायटीची स्थापना करण्यात आली. त्यापूर्वी अमरावती येथे 1923 ला 'किंग एडवर्ड' महाविद्यालयाची स्थापना करण्यात आली. हे बऱ्हाडातील पहिलेच महाविद्यालय असल्यामुळे याची भव्य दिव्य इमारत उभारण्यात आली.

ब्रिटिशांनी भारतातील सर्वत्र घटकातील लोकांना शिक्षणाची समान संधी प्राप्त करून दिली. असली तरीही समाजावर ब्राह्मणी विचारांचा पगडा असल्यामुळे ब्राह्मणा व्यतिरिक्त इतर शिक्षण घेण्यासाठी पुढे येत नसत. म्हणूनच इ. स. 1951 च्या जनगणनेनुसार बऱ्हाडची शैक्षणिक स्थिती बघितल्यास फारसी समाधान कारक नव्हती. ही स्थिती पुढीलप्रमाणे होती.

अ. क्र.	जिल्हा	साक्षरतेचे प्रमाण
1	अमरावती	24.5
2	अकोला	23.1
3	बुलढाणा	20.8
4	यवतमाळ	14

एकंदरीत ब्रिटिशांच्या आक्रमणापूर्वी बऱ्हाडची शैक्षणिक स्थिती ही अतिशय दयनीय होती. ब्रिटिशांच्या आक्रमणानंतर मात्र या स्थितीत बदल होत गेला. इ. स. 1834 ला लॉर्ड मेकॉलेचा जाहिरनामा प्रसिद्ध झाला. येंथूनच भारतात वर्ण विरहित, जातविरहित, शिक्षणपद्धतीचा प्रारंभ झाला. या काळात भारतीय समाज हा अज्ञान, अंधश्रद्धा व अंधारात खितपत पडलेल्या होता या समाजाला प्रकाशात आणण्याचे कार्य हे ब्रिटिशांच्या शिक्षणाने केले. शिक्षित तरुणांना आपल्या संस्कृती रुढी व परंपरेतील अनेक उणिवा स्पष्टपणे जाणवू लागल्यात. परिणामी शिक्षित तरुण समाजप्रबोधनाकरिता पुढे आले. या मधूनच समाजप्रबोधनाची चळवळ उभी झाली. या चळवळीतून महात्मा ज्योतिबा फुले यांनी शिक्षणाचा पाया रचला. पुढील काळात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी यावर कळस चढविला. त्यांनी शिक्षणाची मुलभूत अधिकारात तरतुद केली. परिणामी आज बऱ्हाडातच नव्हे तर संपूर्ण भारतात शिक्षणाची प्रगती झालेली दिसून येते. या प्रगतीचे मुळ मात्र हे ब्रिटिशांच्या सुधारणावादी भूमिकेतून उदयास आलेले दिसून येते.

#### संदर्भ सूची :

1. File of the Boarding House at Akoa high school National Archives File No. Home Department education August 1875 No 1820
2. State Archives Mumbai File No. SSN/655-18 March 1959, Sr. No. 2647
3. Kunte, B. G. (Edi.) - Gazetteer of India Maharashtra State Gazetteers Amravati District 1978.
4. गुप्त, डॉ. नथुलाल - प्राचिन भारतीय शिक्षा वीर शिक्षाशास्त्री. साधा प्रब्लिकेशन, दरियागंज नई दिल्ली. 2005
5. वडगाणी, प्रा. डॉ. नि. आ. - आधुनिक विदर्भ का इतिहास. पद्मशक श्री. मंगेश प्रकाशन, नागपूर 1985
6. बनसोड, प्रा. डॉ. संतोष - यवतमाळ जिल्हाचा इतिहास, अणार पब्लिकेशन, अमरावती 2021
7. बनसोड, प्रा. डॉ. संतोष - यवतमाळ जिल्हाचे अर्थिक आंदोलन, पायगुण प्रकाशन, अमरावती, 2018



S.No: 2249

IRJIF-Impact Factor-5.010

ISSN 2454-9827



# *Certificate of Publication*

*Let It Be Known By This Certificate That*

DR. SANTOSH BANSOD

*Manuscript Title*

NAKSHABANIDIA BRANCH OF SUFISM OF BALAPUR

**Was Published In Volume 7 Issue 1 January 2021 Of**

NORTH ASIAN INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE & HUMANITIES

Editor in Chief

A handwritten signature in red ink, appearing to be 'Bansod', is written over the Editor in Chief text.

A Peer Reviewed Refereed Journal

**Date of Issue**

01/01/2021

Email: [nairjc5@gmail.com](mailto:nairjc5@gmail.com), [info@nairjc.com](mailto:info@nairjc.com), Website: [www.nairjc.com](http://www.nairjc.com)



Narayanrao Kanna  
Badn



# North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities

ISSN: 2454-9827

Vol. 7, Issue-1

January-2021

Index Copernicus Value: 57.07

DOI NUMBER: 10.6947/2454-9827.2021.00009.9

Thomson Reuters ID: S-8304-2016

*A Peer Reviewed Refereed Journal*

NAKSHABANIDIA BRANCH OF SUFISM OF BALAPUR

DR. SANTOSH BANSOD

*'Suman Nivas', Near LIC Colony, Ram Nagar, Amravati. Pin – 444606*

In Islam religion Sufism is like Bhakti movement of Hinduism. Sufi means one who *safa* from his heart, means plain hearted person. Sufis are so humble that one who meets with them one feel like bending for *Salam* and he definitely answer for his *Salam*. Sufi here are four major types of Sufism school in India. Sufis are described as community living with Hajrat Mohammad Paigambar in the cave named *Safa*. That's why they named as Sufis.<sup>1</sup> The other opinion says that *safa* was woolen blanket and one who used that blanket named as Sufis. Purity of soul and ardent emotional attachment towards Allah is required prerequisite in Sufism.<sup>2</sup> It is philosophy like '*Aham / Bramhasmi*' means '*Anhalak*' in Sufism. There are four types of Sufism in India. They are Chistis, Surhavidis, Kadris and Nakshabandis. Nakshabandi branch of Sufism entered in India in later sixteenth century. It is the branch of Sufism which lastly came in India.<sup>3</sup>

**THE PAST OF INDIAN NAKSHABANDIS** – The first flow of Nakshabandis came into Deccan. They established their centre at Burhanpur the gateway of south India. The Nakshabandis branch at Burhanpur flourished in the reign of Shahajahan. The Nakshabandi branch of Burhanpur is one of the major spiritual shrine for not only deccan but also for all Indian Nakshabandis. The first Mughal emperor Babur was the follower of Khawaja Aharar and Babur himself translated the book *Risala E Walidia* written by Khawaja Aharar. All the next emperors keep healthy relation with this branch. The southern development of this Nakshabandi shrines also made with the help of Mughal dynasty and the foundation of this development was the Nakshabandi shrine of Burhanpur. The founder of this Nakshabandi Shrine of Burhanpur was Mohammad Kishmi who was origin of Badakshan region.<sup>4</sup>

**PAST OF NAKSHABANDI SUFIS OF BALAPUR** - Amir Sayyadshah Abdullah Husni Al Husaini migrated from Madina to Bukhara. After him his son Amir Sayyadshah Abdul Rahaman Bukhari Alias Shah Mohammad

North Asian International research Journal consortiums [www.nairjc.com](http://www.nairjc.com)



*[Signature]*  
Principal  
Narayanrao Rama Mahavidyalaya  
Balapur

Khalilullah migrated Bukhara to Khujand and he established Sufi Shrine there. Afterwards Amir Sayyadshaha Abdul Rahim alias Sayyadshah Habibullah and his son Hajrat Muflohuiddin and Sayyadshaha Muslohuiddin and Sayyadshaha Jahiroddin the heredity went on. After some time Sayyadshaha Jahiroddin with his two son Sayyadshaha Moosa and Shaha Toran migrated in 1445 AD to Ennabad near Lahor in Punjab region. He established Nakshabandi Sufi Shrine there. Here Sayyadshaha Moosa, Sayyadshaha Allahuddin Iladad and Sayyadshah Mohommad Nakshabandi maintained the management of Khankaha/Sufi Shrine. After some time Sayyadshaha Mohommad Nakshabandi migrated to Burhanpur with his two son Shekh ul islam Inayat ullah Nakshabandi and Imad ul Kara Hajrat Sayyadshaha Mohommad Said. Sayyadshah Mohommad Nakshabandi died at Solapur and Sayyadshah Indayat ullah Nakshbandi migrated to Balapur by the order of his spiritual master. He established Sufi Shrine/ Khankah at Balapur in 1649.<sup>5</sup>

**SPIRITUAL SUFI SHRINE OF BALAPUR** - The Nakshabandi sufi shrine of Balapur is famous spiritual shrine among follower of Nakshabandi branch of sufism. This sufi shrine of Nakshabandi was famous from its establishment. The Nizam of Haidrabad, The Nawab of Elichpur, mughal subhedars and all the officers of that time were follower of Inayat Ullah Nakshabandi. Dr Shyam Deokar written in his thesis about the meeting of Chatrapati Shivaji Maharaj and Inayatullah Nakshabandi. he also coucluded that the opinion of Nile Green about Chatrapati Shivaji Maharaj that 'Chatrapati Shivaji Maharaj was the follower of Inayatullah Nakshabandi' is not seems true. But Chatrapati Shivaji Maharaj visited the khankaha and granted one rupee per day incomed inam land to Khankah. Mugal emperor Aurangzeb also granted inam land to Khankah. Nizam of haidrabad aproved income of Begam Bazar of Haidrabad to this sufi shrine. This sufi shrine was the utmost important political centre of deccan. The shrine was known with all the political incidents of that time becaust all the political officers of that time were the follower of the shrine. The devotee of the shrine was not only muslims but they were from various sects, religions and dynestes.<sup>6</sup>

**QUTUBKHANA OF THE SHRINE** - The term Qutubkhana means library. The qutubkhana of this shrine was established with the khankaha in 1649 AD. This qutubkhana must be oldest one in the nation. This Qutubkhana is most important Qutubkhana in India and worldwide also. Because one who want to study of Indian Sufism; without taking references of this Qutubkhana is in vain. This is the Qutubkhana which was established with among the first Nakshabandi Sufi Branches which came in India. To study the migration and diaspora of Sufis, their literature, their travel rout and the philosophy of Sufis one should have to take references of this Qutubkhana. The researcher from worldwide have visited to this Qutubkhana to study the Sufi literature and history. The khankah with this Qutubkhana was the political and spiritual center at that time so the literature which was written in that period is the faithful document of that time. One who want to study the medieval period





Berar he must have to refer the documents of this Qutubkhana. One who have to study the social, political, economical, philosophical and Sufi literature of medieval period of Berar ; have to refer the rich primary sources of this Qutubkhana. To study the history of Berar and also of south India one should have to refer the documents from this Qutubkhana. The Khankah got ten Nakshabandi Sufi religious leaders from the family of Hajrat Saiyyadshah Inayatullah Nakshabandi. All those Sufi religious leaders of Khankah wrote many literature of Sufi philosophy and other also. This literature is witness of that period. So this literature is most important for the study of that time. Moreover this literature is in the form of manuscript and till unpublished. There are precious manuscripts available in this Qutubkhana and all of it are unpublished. There are many portrait of the Nawab's, Chavaliers, political and religious leaders. There are many *Farmans* of that time available in this Qutubkhana. For the Eastern Muslim Studies the researcher from world wide have visited to this Qutubkhana. The researcher from Bangladesh, Japan, Britain, Austrelia and from other countries have visited to this Qutubkhana. There is registration of those all visitors from India and abroad in the visitors book of this library. The importance of this Qutubkhana has been described in the book 'Modern Asian Studies' written by Nile Green. There are many rare books available in this library. Mr Y. K. Deshpande also write a research paper on this Qutubkhana which was published in Indian Historical Record Commission Proceedings of Meeting, 1941, Barora, XVII. In that paper Y. K. Deshpande says that there are 1000 to 1200 manuscripts are available in this Qutubkhana.<sup>7</sup>

This shrine and Qutubkhana is famous among researchers from all over the world. Researchers from Dhaka, Melbarn, Quoto (Japan), London, America visited the shrine and Qutubkhana for research study.

## CONCLUSION

This sufi shrine is not only famous for the spiritual ideology but it is famous for the historical documents, and for Kutubkhana. It is lighthouse for the history student and researchers. Researchers from all over the world visited the Shrine for Eastern Muslim studie.

## REFERENCES

1. Wakil Alim, '*Ekach Pathavaril Don Panth Bhakti ani Sufi*' (Marathi), First Edition, Nashik, Page no 13.
2. Arberry John, '*The Doctrine of Sufis*', The university Pres Cambridge, 1935, Page no 5.
3. Deokar Shyam, '*Balapur Shaharatil Eitihasisik Vastuncha Abhyas*' (Marathi), Mother India Publication, 2020, Page no 74.



Nile Green, '*Indian Sufism Since The Seventeenth Century*', Routledge Tyylor and Francis Group, London and New York, First Edition 2006, Page no.11 & 12.

5. Deokar Shyam, '*Balapur Shaharatil Eitihāsik Vastuncha Abhyas*' (Marathi), Mother India Publication 2020, Page no 125

6. Deokar Shyam, '*Qutubkhana Khankah E Nakshabandi of Balapur*', International Journal of Management and Social Science, Volume 7, Issue 1, January 2019, Page no. 244..

7, *Ibid*, Page no 245.

  
Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera





S.No: 2250



IRJIF-Impact Factor-5.010

ISSN 2454-9827

# Certificate of Publication

*Let It Be Known By This Certificate That*

DR. SANTOSH BANSOD

Manuscript Title

PANDHARINATH SITARAM PATIL: LIFE AND WORK

Was Published In Volume 7 Issue 2 February 2021 Of

NORTH ASIAN INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE & HUMANITIES

Editor in Chief

A Peer Reviewed Refereed Journal

Date of Issue

01/02/2021

Email: [nairjic5@gmail.com](mailto:nairjic5@gmail.com), [info@nairjic.com](mailto:info@nairjic.com), Website: [www.nairjic.com](http://www.nairjic.com)



Narayanrao Rana Sanshodhan Mandal  
Yalaya

**PANDHARINATH SITARAM PATIL: LIFE AND WORK**

**DR. SANTOSH BANSOD**

**'Suman Nivas', Near LIC Colony, Ram Nagar, Amravati. Pin – 444606**

**INTRODUCTION** – Pandharinath Sitaram Patil was the mass leader of common people of Berar. He was the aggressive social activist of that time. He stirred up the social, religious, political and cultural environment of the Berar. He was the first social reformer and the first voice of the social reconstruction of the Berar. Buldana district was actively involved in any stage and time of social reform of the society. Whenever there was need of whistle blower of the movement of justice the soil of Berar fulfilled the demand. This holy soil of Berar was and is always with the movement of justice. This soil always has the glorious past of standing with the justice. When Mahatma Jotirao Phule waged war against the injustice, inequality, exploitation in religious sector, racial hierarchy, apartheid, untouchability and injustice with women that was the real rise of reason of India. Berar also was with him in his movement of justice. Bapuji Shinde was present at the first meeting of the Satyashodhak Samaj held at Poona. Phuleism was the first ideology which challenged the ascendancy of Bramhanism in all sectors. Phuleism not only denied the ideology of Bramhanism, but it established the structural framework to fight against the evils. Phuleism demolished the structure of Bramhanism which set up on the base of injustice. Buldana district was actively involved in the '*Satyashodhak Movement*'.<sup>1</sup>

**TERM OF BERAR** – Today's Berar is consist of the five districts of Amravati division. But old Berar was not so little. The old Berar was between Kherla Dist Betul M.P. to Pathri Dist. Parbhani from the north to south. And from West it was from Malkapur to Wardha river to the East. The term Berar comes from the name '*Varhad*'. And the word '*Varhad*' developed from the river Wardha.<sup>2</sup> '*Vardhatat*' to '*Varhad*' and then in Muslim period it





became the '**Barar**' afterwards the term 'Berar' emerged from the old name of the region '**Barar**'. Today's Berar is consist of five district of Amravati division.

**EARLY LIFE OF PANDHARINATH PATIL** – Pandharinath Patil was born on 20<sup>th</sup> September 1903 at Amboda tq Nandura Dist Buldana. Afterwards his family moved to Pimpri Adhao tq Malkapur Dist Buldana. His family background was of Warkari sect, so little Pandhari also used to actively involved in Kirtan and Bhajan programmes. The economical condition of his family was not so good, so his primary and highschool education was on the basic of earn and learn. As critical minded he argued with many times with preacher who always visit his village. He with his father was present at the All India Maratha Education Conference held at Khamgaon in 1917.<sup>3</sup> Chatrapati Shahuji Maharaj was the Main speaker of the conferemce. Shahuji Maharaj stimulated the movements of justice of the Berar from this conference. Pandharinath Patil also got inspiration from the conference. His ideological structure was built up by the conference.

**SATYASHODHAK MOVEMENT AND PANDHARINATH PATIL** – The Satyashodhaki Mahaghat Shastri prepared and cultivated the minds of common Berari people of this region. Pandharinath Patil also got inspiration from Mahaghatshastri and his work in Berar. He listerned stories how Mahaghatshastri defeated Bramhins in Shastrartha from his grandfather. His first speech was arranged at Warkhaed Tq Malkapur to talk about the Satyashodhak Movement. The day was 14<sup>th</sup> of January 1921, But Sanatanis stopped his speech and disturbed the programme. At 19 November 1921 he was presented at Poona for the programme of opening of statue of Shivaji Maharaj by Prince of Walse. He came in contact of Kesharao Jedhe and other Satyashodhak workers of Maharashtra. He visited and live at Jedhe Mansion the center of Satyashodhak Movement of that time. He arrange the first Satyashodhak Conference of Vidarbha at Warkhed Tq Malkapur where his first speech cum meeting was disturbed by Sanatanis. Afterwards he arranged many Satyashodhak conferences in Berar eg- Savatra Tq Mehakar, Savala Tq. Jalgaon Jamod, Hingane Karegaon Tq Khamgaon, Kinhi Mahdeo Tq Khamgaon, Amraoti, Akot etc. All India Satyashodhak conference was arranged at Amraoti in 1925. He argued with the Shankarachary who invited by the Sanatanis for counter attack on the Satyashodhak movement. The programme was arranged at Deulgaon Raja. He and Anandswami argued with Dr Lingesh Mahabhargav Kurtkoti on the issue of Religious, spiritual, social points. This Dharmparishad was thwarted by Pandharinath Patil and Anandswami. The Shankarachary was dismissed by Chatrapati Shahuji Maharaj for the misbehave. That's why Sanatani arranged his programme to counter the movement. Kurtakoti misbehave in the Dharmaparishad so Satyashodhak conferences held at Dodhra, Mandapgaon, Isrul, Hingne karegaon, Savatra, Kinhi Mahadeo, Shendurjan, MolaMoli, Andhera criticized him for his misbehave and passes the resolutions against his misbehave.<sup>4</sup>





Pandharinath Patil and Anandswamiji was actively involved in the programmes of Jalsas. There are many famous Jalsas of Berar which performing for the Satyashodhak movement. Rajanda Dist Akola, Wadegaon Dist Akola, Birsingpur Dist Buldana, Naygaon Dist Amraoti, Belura Dist Amraoti, Kelwad Dist Buldana, Sawargaon Dist Buldana are some famous Jalsas of Berar.<sup>5</sup> Anandswamiji and Pandharinath Patil guided the programmes of Jalsas of Berar and Maharashtra. Anandswami gave security to the programmes of Jalsas in Berar. CP & Berar Third Satyashodhak Conference was held at Karodi in 8<sup>th</sup> of April 1928. Pandharinath Patil was the first writer who wrote the biography of Mahatma Phule. He worked hard for that, he collected documents and references for the biography. That's why he was invited from all over Maharashtra and out of states to talk about Phuleism and Satyashodhak Movement. He was invited at Satara for the birth anniversary of Mahatma Phule in 1947 the date was 17<sup>th</sup> November. He was processioned with 21 bullock carts in that programme. The procession was leading by the elephant having the Photoframe of mahatma Phule.<sup>6</sup>

**POLITICAL LIFE** – He faught district council elections in 1923 but he defeated by opponent. But he and his Non Bramhanist Party won the distrist council elections all over the Berar in 1924. The real hero of this victory of Non Bramhanist Party was Pandaharinath Patil and Anandswamiji. He also active in Local Board elections. In the local board election held at 23<sup>rd</sup> June 1934 he and his Non Bramhinast Pary won 16 seats out of 25. He also faught the legislative assembly election in 1936 and won it. He became MLA from Chikhali-Mehakar constituency. After the Non Bramhanist party's immersion in Congress he became the leader of Congress Party.<sup>7</sup> Afterwards he became MLA and MP from the Congress party. He always faught for the common people eg.- Farmers, workers, deprived casts, social conflict etc.

**EDUCATIONAL WORK** – He established the primary school and Adult education school at Jambuldhaba in 1921. He also established public library at Pimpalgaon and Buldana. He also helped the Chokhamela Boarding of Chikhli run by Laxmanrao Bhatkar. He established the series of school named Shivaji Highschool which merged afterwards into Shivaji Education society. Buldana, Chikhali, Nandura are the some major institutions among them. He also collected economical help for the Shivaji Education Society established by Panjabrao Deshmukh by arranging the programmes at various places in all over the Berar. Panjabrao Deshmukh with Pandharinath Patil visited to Nizam at Haidrabad for economical help for the Shivaji Education Society. Nizam granted twenty thousand rupees as first instalment for the society. As a council member he established government primary school in every village having 500+ population.<sup>8</sup>

**NON BRAMHIN MOVEMENT-** He arrange the first CP & Berar Non Bramhin Conference at Morshi in 1923. The President of the conference was Bhaskarrao Jadhao Education Minister of Mumbai Region. Nanasaheb Amrutkar and Bhausaheb Gund was the major host of the conference. One other Non Bramhin Conference was





arranged at Buldana in same year. The president was Sitaram Nana Choudhari. At 17<sup>th</sup> August 1924 the meeting of Bramhanetar Sangh held at Jambhuldhaba dist Buldana. The president of the meeting was Sakharam Patil. The second Majlis of All India Non Bramhin Congress held at Amraoti in 1925. The conference was of three days, 25 to 27 December of 1925. The first conference was held at Belgaon Karnataka. He was the editor of the 'Atmodhar' newspaper of Malkapur edition. This newspaper had been publishing from Jalgaon Khandesh. Pandharinath Patil arranged the Khamgaon Taluka Non Bramhin Conference in Kinhi Mahadeo at 14<sup>th</sup> January 1928. The President of the conference was Annasaheb Kayande. Near about five thousand people were present for the conference. Pandharinath hosted the conference. Bombay region third Non Bramhin Conference was held in Kalyan at 15<sup>th</sup> July 1928. Pandharinath Patil was present at that conference. Afterwards many conferences was arranged in Berar by him and other members of Non Bramhin movement of Berar eg- Bhatori Dist Akola, Jastagaon Dist Buldana, Wardha, Elichpur, Amraoti etc.<sup>9</sup>

**CONCLUSION** - Pandharinath Sitaram Patil was the mass leader of Berar. He was active member of Satyashodhak and Non Bramhin movement of Berar. He also social activist and social cum religious reformer of Berar. He tried to demolished the bad traditions flowed with time in society.

#### KEYWORDS:-

**Bramhanetar Movement** – The movement of demanding justice by the rest of Bramhin communities in 19<sup>th</sup> century Maharashtra. They oppose the system of 'Chaturvarna' of Hinduism and ascedency of Bramhins in all sectors.

**Satyashodhak Movement** – ( Truth Seekers' Society) This social reform society was founded by Mahatma Jotirao at Phule on 24<sup>th</sup> September 1873. This movement ran the movement of social justice which generally known as Satyashodhak Movement.

#### REFERENCES

1. Deokar S.P., 'Analysis Of Dr Ambedkar's View About Jalgaon Jamod Issue', Ambedkar History Congress, Mumbai. 2020.
2. Jarrett H.S. (Translator), 'Ain – E- Akbari of Abul Fazl- I – Allami' Vol II, Second Edition, Royal Asiatic Society of Bengal; 1 Park Street, Calcutta, 1949, Page no 237
3. Dhale Namdeo and Dange Manoj, 'Pandharinath Patil Rajkiy v Samajik Kary (Marathi)', Prashant Publication, Jalgaon, First Edition 2017, Page no 14 – 24



Dandage N. J., '*Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)*', Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 23 – 50

5. Kharat Sambhaji, '*Satyashodhak Jalse (Marathi)*', Loksahitya Publication Aurangabad, First Edition 2015, Page no 111 & 142

6. Dandage N. J., '*Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)*', Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 43

7. Ibid Page no 51 – 61

8. Dhale Namdeo and Dange Manoj, '*Pandharinath Patil Rajkiy v Samajik Kary (Marathi)*', Prashant Publication, Jalgaon, First Edition 2017, Page no 81-125

9. Dandage N. J., '*Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)*', Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 162- 180



Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera



ISSN 2454-9827

IRJIF-Impact Factor-5.010

S.No: 2250



# *Certificate of Publication*

*Let It Be Know By This Certificate That*

DR. SANTOSH BANSOD

Manuscript Title

PANDHARINATH SITARAM PATIL: LIFE AND WORK

Was Published In Volume 7 Issue 2 February 2021 Of

NORTH ASIAN INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE & HUMANITIES

Principal

Narayanrao Rana Mahavidyalaya

Editor in Chief

Date of Issue

01/02/2021

A Peer Reviewed Refereed Journal

*Bst*

Email: [nairjc5@gmail.com](mailto:nairjc5@gmail.com), [info@nairjc.com](mailto:info@nairjc.com), Website: [www.nairjc.com](http://www.nairjc.com)

## PANDHARINATH SITARAM PATIL: LIFE AND WORK

DR. SANTOSH BANSOD

'Suman Nivas', Near LIC Colony, Ram Nagar, Amravati. Pin - 444606

**INTRODUCTION** – Pandharinath Sitaram Patil was the mass leader of common people of Berar. He was the aggressive social activist of that time. He stirred up the social, religious, political and cultural environment of the Berar. He was the first social reformer and the first voice of the social reconstruction of the Berar. Buldana district was actively involved in any stage and time of social reform of the society. Whenever there was need of whistle blower of the movement of justice the soil of Berar fulfilled the demand. This holy soil of Berar was and is always with the movement of justice. This soil always has the glorious past of standing with the justice. When Mahatma Jotirao Phule waged war against the injustice, inequality, exploitation in religious sector, racial hierarchy, apartheid, untouchability and injustice with women that was the real rise of reason of India. Berar also was with him in his movement of justice. Bapuji Shinde was present at the first meeting of the Satyashodhak Samaj held at Poona. Phuleism was the first ideology which challenged the ascendancy of Bramhanism in all sectors. Phuleism not only denied the ideology of Bramhanism, but it established the structural framework to fight against the evils. Phuleism demolished the structure of Bramhanism which set up on the base of injustice. Buldana district was actively involved in the '*Satyashodhak Movement*'.<sup>1</sup>

**TERM OF BERAR** – Today's Berar is consist of the five districts of Amravati division. But old Berar was not so little. The old Berar was between Kherla Dist Betul M.P. to Pathri Dist. Parbhani from the north to south. And from West it was from Malkapur to Wardha river to the East. The term Berar comes from the name '*Varhad*'. And the word '*Varhad*' developed from the river Wardha.<sup>2</sup> '*Vardhatat*' to '*Varhad*' and then in Muslim period it





became the 'Barar' afterwards the term 'Berar' emerged from the old name of the region 'Barar'. Today's Berar is consist of five district of Amravati division.

**EARLY LIFE OF PANDHARINATH PATIL** – Pandharinath Patil was born on 20<sup>th</sup> September 1903 at Amboda tq Nandura Dist Buldana. Afterwards his family moved to Pimpri Adhao tq Malkapur Dist Buldana. His family background was of Warkari sect, so little Pandhari also used to actively involved in Kirtan and Bhajan programmes. The economical condition of his family was not so good, so his primary and highschool education was on the basic of earn and learn. As critical minded he argued with many times with preacher who always visit his village. He with his father was present at the All India Maratha Education Conference held at Khamgaon in 1917.<sup>3</sup> Chatrapati Shahuji Maharaj was the Main speaker of the conference. Shahuji Maharaj stimulated the movements of justice of the Berar from this conference. Pandharinath Patil also got inspiration from the conference. His ideological structure was built up by the conference.

**SATYASHODHAK MOVEMENT AND PANDHARINATH PATIL** – The Satyashodhaki Mahaghat Shastri prepared and cultivated the minds of common Berari people of this region. Pandharinath Patil also got inspiration from Mahaghatshastri and his work in Berar. He listerned stories how Mahaghatshastri defeated Bramhins in Shastrartha from his grandfather. His first speech was arranged at Warkhaed Tq Malkapur to talk about the Satyashodhak Movement. The day was 14<sup>th</sup> of January 1921, But Sanatanis stopped his speech and disturbed the programme. At 19 November 1921 he was presented at Poona for the programme of opening of statue of Shivaji Maharaj by Prince of Walse. He came in contact of Kesharao Jedhe and other Satyashodhak workers of Maharashtra. He visited and live at Jedhe Mansion the center of Satyashodhak Movement of that time. He arrange the first Satyashodhak Conference of Vidarbha at Warkhed Tq Malkapur where his first speech cum meeting was disturbed by Sanatanis. Afterwards he arranged many Satyashodhak conferences in Berar eg- Savatra Tq Mehakar, Savala Tq Jalgaon Jamod, Hingane Karegaon Tq Khamgaon, Kinhi Mahdeo Tq Khamgaon, Amraoti, Kurt etc. All India Satyashodhak conference was arranged at Amraoti in 1925. He argued with the Shankarachary who invited by the Sanatanis for counter attack on the Satyashodhak movement. The programme was arranged at Deulgaon Raja. He and Anandswami argued with Dr Lingesh Mahabhargav Kurtkoti on the issue of Religious, spiritual, social points. This Dharmparishad was thwarted by Pandharinath Patil and Anandswami. The Shankarachary was dismissed by Chatrapati Shahuji Maharaj for the misbehave. That's why Sanatani arranged his programme to counter the movement. Kurtakoti misbehave in the Dharmaparishad so Satyashodhak conferences held at Dodhra, Mandapgaon, Isrul, Hingne karegaon, Savatra, Kinhi Mahadeo, Shendurjan, MolaMoli, Andhera criticized him for his misbehave and passes the resolutions against his misbehave.<sup>4</sup>

Pandharinath Patil and Anandswamiji was actively involved in the programmes of Jalsas. There are many famous Jalsas of Berar which performing for the Satyashodhak movement. Rajanda Dist Akola, Wadegaon Dist Akola, Birsingpur Dist Buldana, Naygaon Dist Amraoti, Belura Dist Amraoti, Kelwad Dist Buldana, Sawargaon Dist Buldana are some famous Jalsas of Berar.<sup>5</sup> Anandswamiji and Pandharinath Patil guided the programmes of Jalsas of Berar and Maharashtra. Anandswami gave security to the programmes of Jalsas in Berar. CP & Berar Third Satyashodhak Conference was held at Karodi in 8<sup>th</sup> of April 1928. Pandharinath Patil was the first writer who wrote the biography of Mahatma Phule. He worked hard for that, he collected documents and references for the biography. That's why he was invited from all over Maharashtra and out of states to talk about Phuleism and Satyashodhak Movement. He was invited at Satara for the birth anniversary of Mahatma Phule in 1947 the date was 17<sup>th</sup> November. He was processioned with 21 bullock carts in that programme. The procession was leading by the elephant having the Photoframe of mahatma Phule.<sup>6</sup>

**POLITICAL LIFE** – He faught district council elections in 1923 but he defeated by opponent. But he and his Non Bramhanist Party won the distrist council elections all over the Berar in 1924. The real hero of this victory of Non Bramhanist Party was Pandaharinath Patil and Anandswamiji. He also active in Local Board elections. In the local board election held at 23<sup>rd</sup> June 1934 he and his Non Bramhinast Pary won 16 seats out of 25. He also faught the legislative assembly election in 1936 and won it. He became MLA from Chikhali-Mehakar constituency. After the Non Bramhanist party's immersion in Congress he became the leader of Congress Party.<sup>7</sup> Afterwards he became MLA and MP from the Congress party. He always faught for the common people eg- Farmers, workers, deprived casts, social conflict etc.

**EDUCATIONAL WORK** – He established the primary school and Adult education school at Jambuldhaba in 1921. He also established public library at Pimpalgaon and Buldana. He also helped the Chokhamela Boarding of Chikhli run by Laxmanrao Bhatkar. He established the series of school named Shivaji Highschool which merged afterwards into Shivaji Education society. Buldana, Chikhali, Nandura are the some major institutions among them. He also collected economical help for the Shivaji Education Society established by Panjabrao Deshmukh by arranging the programmes at various places in all over the Berar. Panjabrao Deshmukh with Pandharinath Patil visited to Nizam at Haidrabad for economical help for the Shivaji Education Society. Nizam granted twenty thousand rupees as first instalment for the society. As a council member he established government primary school in every village having 500+ population.<sup>8</sup>

**NON BRAMHIN MOVEMENT-** He arrange the first CP & Berar Non Bramhin Conference at Morshi in 1923. The President of the conference was Bhaskarrao Jadhao Education Minister of Mumbai Region. Nanasahab Amrutkar and Bhausahab Gund was the major host of the conference. One other Non Bramhin Conference was





arranged at Buldana in same year. The president was Sitaram Nana Choudhari. At 17<sup>th</sup> August 1924 the meeting of Bramhanetar Sangh held at Jambhuldhaba dist Buldana. The president of the meeting was Sakharam Patil. The second Majlis of All India Non Bramhin Congress held at Amraoti in 1925. The conference was of three days, 25 to 27 December of 1925. The first conference was held at Belgaon Karnataka. He was the editor of the 'Atmodhar' newspaper of Malkapur edition. This newspaper had been publishing from Jalgaon Khandesh. Pandharinath Patil arranged the Khamgaon Taluka Non Bramhin Conference in Kinhi Mahadeo at 14<sup>th</sup> January 1928. The President of the conference was Annasaheb Kayande. Near about five thousand people were present for the conference. Pandharinath hosted the conference. Bombay region third Non Bramhin Conference was held in Kalyan at 15<sup>th</sup> July 1928. Pandharinath Patil was present at that conference. Afterwards many conferences was arranged in Berar by him and other members of Non Bramhin movement of Berar eg- Bhatore Dist Akola, Jastagaon Dist Buldana, Wardha, Elichpur, Amraoti etc.'

**CONCLUSION** - Pandharinath Sitaram Patil was the mass leader of Berar. He was active member of Satyashodhak and Non Bramhin movement of Berar. He also social activist and social cum religious reformer of Berar. He tried to demolished the bad traditions flowed with time in society.

#### KEYWORDS:-

**Bramhanetar Movement** - The movement of demanding justice by the rest of Bramhin communities in 19<sup>th</sup> century Maharashtra. They oppose the system of 'Chaturvarna' of Hinduism and ascedency of Bramhins in all sectors.

**Satyashodhak Movement** - ( Truth Seekers' Society) This social reform society was founded by Mahatma Jotirao at Phule on 24<sup>th</sup> September 1873. This movement ran the movement of social justice which generally known as Satyashodhak Movement.

#### REFERENCES

1. Deokar S.P., 'Analysis Of Dr Ambedkar's View About Jalgaon Jamod Issue', Ambedkar History Congress, Mumbai. 2020.
2. Jarrett H.S. (Translator), 'Ain - E- Akbari of Abul Fazl- I - Allami' Vol II, Second Edition, Royal Asiatic Society of Bengal; 1 Park Street, Calcutta, 1949, Page no 237
3. Dhale Namdeo and Dange Manoj, 'Pandharinath Patil Rajkiy v Samajik Kary (Marathi)', Prashant Publication, Jalgaon, First Edition 2017, Page no 14 - 24



*[Signature]*  
Principal  
Narayanrao Bhanu Pravidyalaya

- Dandage N. J., '*Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)*', Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 23 – 50
5. Kharat Sambhaji, '*Satyashodhak Jalse (Marathi)*', Loksahitya Publication Aurangabad, First Edition 2015, Page no 111 & 142
6. Dandage N. J., '*Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)*', Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 43
7. Ibid Page no 51 – 61
8. Dhale Namdeo and Dange Manoj, '*Pandharinath Patil Rajkiy v Samajik Kary (Marathi)*', Prashant Publication, Jalgaon, First Edition 2017, Page no 81-125
9. Dandage N. J., '*Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)*', Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 162- 180

  
Principal  
Narayanrao Gopal Mahavidyalaya  
Buldana





## विदर्भातील कामगार चळवळीचे ऐतिहासिक अध्ययन

प्रा. डॉ. संतोष पी. बनसोड

इतिहास विभाग प्रमुख, नारायणराव कला महाविद्यालय, बडनेरा, जि. अमरावती

## प्रस्तावना :

सत्यशोधक चळवळीचे कार्यकर्ते नारायण मेघाजी लोखंडे यांनी महात्मा फुलेंच्या नेतृत्वाखाली गिरणी कामगारांच्या अन्यायाविरोधात आवाज उठवित बॉम्बे मिल हॅंडस असोसिएशन ही देशातील पहिली कामगार संघटना स्थापना केली. याच संघटनेच्या माध्यमातून आणि 'दिगबंधू' या पत्राच्या माध्यमातून त्यांनी आवाज उठवून कामगारांना साप्ताहिक सुट्टी, दुपारच्या जेवनाची सुट्टी, कामांच्या निश्चित वेळा, सर्वत्र सारखा पगार अश्या विविध मागण्या मान्य करून घेतल्या व कामगारांना त्यांचे अधिकार मिळवून दिले. जगातल्या युरोपियन देशांच्या तुलनेत भारतातील कामगार चळवळ उशिराच सुरू झाली. भारतात जसाजसा उद्योगधंद्याचा विकास झाला तसतशी कामगारांच्या संख्येतही वाढ झाली. त्यांच्या समस्या सुध्दा वाढत गेल्या आणि त्यातून कामगार चळवळी व संघटन होऊन विविध संघटना निर्माण झाल्या.

कामगार चळवळ ही निषेध चळवळ आहे. भारतातील कामगार चळवळीचा इतिहास हा खऱ्या अर्थाने सुवर्ण अक्षरात लिहीण्यासारखा आहे. प्रथम महायुद्धानंतर जागतिक आर्थिक मंदी आली. त्यावेळी वेतनवाढीसाठी कामगारांमध्ये असंतोष वाढू लागला. याच काळात कामगार वर्ग देशात सुरू असलेल्या स्वातंत्र्य चळवळीशी जोडल्या गेला. पहिल्या महायुद्धानंतर खाणउद्योग, प्लॉटेशन, ज्युट, वस्त्रउद्योग, पोस्टल, संरक्षण या सर्वच क्षेत्रात कामगारांनी बंड केले होते. कामगारांच्या या संघटनांनी भारताच्या स्वातंत्र्य चळवळीलाही मोठी ताकद दिली.

विदर्भ हा कृषीप्रधान प्रदेश आहे. कारण येथील 72 टक्के लोकसंख्या शेतीवर अवलंबून आहे. विदर्भात कापूस जास्त पिकल्यामुळे जिनिंग, कामगार चळवळीला प्राधान्य मिळाले. विदर्भातील अनेक कामगार नेत्यांनी मजुर आंदोलनाच्या प्रवाहाला राष्ट्रीय आंदोलनाच्या प्रमुख प्रवाहास जोडून राष्ट्रभक्तीच्या भावनेचा परिचय दिला.

शब्दकोश : सत्यशोधक चळवळ, दिनबंधू, विदर्भ, कापूस, खनिज

## संशोधनाची उद्दिष्ट्ये :

प्रस्तुत विषयाचा अभ्यास करण्यासाठी संशोधकाने काही उद्दिष्ट्ये निश्चित केली आहेत. त्या उद्दिष्ट्यांनुसार प्रस्तुत संशोधन कार्य करण्यात आले असून ती उद्दिष्ट्ये खालीलप्रमाणे आहेत.

- 1) स्वातंत्र्यपूर्व काळात विदर्भात उदयास आलेल्या कामगार चळवळीवर क्षेत्रावर प्रकाश टाकणे.
- 2) विदर्भातील कामगार चळवळीचा उदय, स्थापना व नेतृत्वाच्या कार्याचे विश्लेषण करणे.
- 3) विदर्भातील महिला कामगारांच्या सहभागाचा व नेतृत्वाचा अभ्यास करणे.
- 4) विदर्भातील कामगार चळवळीवर झालेल्या परिणामांचा अभ्यास करणे.

## संशोधनाची गृहितके :

स्वातंत्र्यपूर्व आणि स्वातंत्र्यानंतर विदर्भातील कामगार चळवळीचा अभ्यास करण्यासाठी जास्तीत जास्त प्राथमिक व दुय्यम साधनांचा वापर करून संशोधनकार्य पूर्ण करण्याचा प्रयत्न केल्यामुळे संशोधनासाठी निश्चित केलेली गृहितके पूर्ण सिध्द झाली असून ही गृहितके खालीलप्रमाणे आहेत.

- 1) स्वातंत्र्यपूर्व काळात विदर्भात कापूस आणि खनिज संपत्तीचा समृद्ध वारसा असल्यामुळे औद्योगिक विकासामुळे कारखानदारीच्या विकासासाला गती मिळाली.
- 2) विदर्भातील अनेक कारखान्यांच्या उदयामुळे अनेक शहरांचा विकास होऊन नागरीकरणाला चालना मिळाली व ग्रामीण भागातील असंख्य नागरिक कामगार बनले.
- 3) विदर्भात कारखानदारीच्या विरोधात अनेक कामगारांची आंदोलने झाली.
- 4) विदर्भातील कामगार चळवळीत महिलांचा सहभाग होता.
- 5) विदर्भातील कामगार चळवळीमुळे कामगारांचे हक्क आणि मागण्या बऱ्याच प्रमाणात मान्य झाल्या.

## विषयाची व्याप्ती :

विदर्भाला फार मोठा ऐतिहासिक वारसा लाभलेला आहे. प्राचीन, मध्ययुगीन काळात या भागाचा विकास होत गेला. कोळसा, कापड जिनिंग, बिडी कामगार यामध्ये मजुर काम करताना त्यांच्या काही समस्या असतात. त्या सोडविण्यासाठी मालक व मजुर यांच्यात संघर्ष होते. त्यातून कामगार चळवळीचा उदय झाला. नागपूर, वर्धा, भंडारा, चंद्रपूर, अमरावती, यवतमाळ, अकोला, बुलढाणा या जिल्ह्यांशी कामगार चळवळी निगडित आहेत. ही संशोधनाची भौगोलिक व्याप्ती आहे. प्रस्तुत संशोधनात स्वातंत्र्यपूर्व व स्वातंत्र्यानंतरची कामगार चळवळ ही कालक्रमाने व्याप्ती ठेवलेली आहे.

## संशोधनाच्या पध्दती :

इतिहास हे एक सामाजिक शास्त्र असल्यामुळे सामाजिक शास्त्रातील प्रचलित असलेल्या सर्वध संशोधन पध्दती इतिहास संशोधनासाठी उपयुक्त ठरतात. संबंधीत संशोधनासाठी संदर्भ पध्दत, ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक व सर्वेक्षण पध्दतीचा उपयोग करण्यात आला आहे.



**तथ्य संकलन :**

तथ्य संकलन ही वैज्ञानिक पध्दतीची पहिली महत्वाची पायरी आहे. प्रस्तुत संशोधनासाठी माहिती संकलनाकरिता प्राथमिक आणि दुय्यम साधनांचा उपयोग करण्यात आला आहे. तसेच सर्व माहिती स्रोतांचे अवलोकन करून त्याची पुनःविश्लेषणात्मक चिकित्सा करण्यात आली आहे व प्रस्तुत संशोधन पूर्ण करण्यात आले आहे.

**विदर्भातील कामगार चळवळीची वाटचाल :**

विदर्भात कापसाच्या उत्पादनाने कायापालट केला आहे. कापूस उत्पादन विदर्भाकरिता वरदान आहे. कापसाच्या पाठोपाठ हळूहळू रूई अलग करण्याचे व्यवसाय तयार झाले. बुलढाणा जिल्ह्यात 44 जिनिंग कॅक्टरी होत्या. जिनिंग प्रेस बरोबर विदर्भातील नागपूरमध्ये कापड तयार करण्याच्या गिरण्या तयार झाल्या.

नागपूरमध्ये 1877 मध्ये एम्प्रेस मिलची स्थापना, 1870 मध्ये मॉडेल मिल्सची स्थापना, 1885 मध्ये बडनेरा मिल्सची स्थापना, बडनेरा मिल्स स्वातंत्र्यपूर्व काळात 1100 लोकांना रोजगार पुरवित होती, वर्षा जिल्ह्यात हिंगणघाट व पुलगाव जिल्ह्यात, अकोला येथे मिल्स स्थापन झाल्या. अशारितीने शेतीप्रधान विदर्भामध्ये औद्योगिकीकरणाला प्रारंभ झाला. औद्योगिक विकास दुसऱ्या महायुद्धाच्या उदभवपर्यंत अतिशय वेगाने घडत होता. नागपूर येथील उमरेड, अचलपूर, अंजनगाव सुर्जी, दर्यापूर, खोलापूर ही गावे विणकरांनी विणलेल्या साडीसाठी प्रसिध्द होती. भंडारा जिल्ह्यात पवनी येथे हातमागाचे चांगले केंद्र होते. चंद्रपूर व भंडारा जिल्ह्यात पवनी येथे हातमागाचे चांगले केंद्र होते. चंद्रपूर व भंडारा जिल्ह्यात सावली व एकोडी या गावात कोसा कापड बनविले जात होते. विदर्भात ठिकठिकाणी खनिज संपत्ती भरपूर प्रमाणात सापडतो. यवतमाळ जिल्ह्यात वणी तालुक्यात कोळसा सापडतो. त्यावेळी 2100 दश टन कोळसा उपलब्ध असावा असा अंदाज आहे. चंद्रपूर जिल्ह्यात 1600 चौरस मैलात कोळसा सापडतो. या कोळश्याबरोबर लोखंड सापडते. दररोज 80 टन लोखंड सापडल्याचे उल्लेख सापडतात. विदर्भातील औद्योगिक विकासाला विदर्भातील खनिज संपत्तीने मदत केली आहे. भंडारा जिल्ह्यात मँगनिज व लोखंडाचे साठे विपुल प्रमाणात आढळते. काही प्रमाणात नागपूर जिल्हा कोळश्याच्या खाणीसाठी प्रसिध्द आहे.

भारताच्या स्वातंत्र्य चळवळीतून कामगार चळवळ आकारास आलेली दिसते. महाराष्ट्रातील सांस्कृतिक, राजकीय, आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रातील बदलाना काही प्रमाणात चालना देण्याचे काम कामगार चळवळीने केले आहे. विदर्भातील गिरणी कामगार स्वातंत्र्य चळवळीत नेहमीच आघाडीवर होते. ज्या ज्या वेळी स्वातंत्र्यलढ्यात गांधी, नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, रूईकर जनरल आचारी यांना ब्रिटीशानी तुरुंगात टाकले. त्या त्या वेळी कामगारांनी उत्स्फूर्तपणे संप पुकारला होता. कामगारांना स्वातंत्र्य चळवळीकडे ओढण्याचे काम रूईकरांना जाते. 26 एप्रिल 1908 रोजी नागपुरात मिल मजुरांची एक सभा भरली. त्यात डॉ. मूंजे, स्वामी शंकरानंद, दत्तोपंत ठेंगडी इत्यादींनी "दारु सोडा व पैसा फंडात पैसा भरा" इत्यादी उपदेशात्मक भाषणे झाली. दत्तोपंत ठेंगडी हे मजुरांचे प्रथम पुढारी होते. त्यांनी मजुरांच्या समस्या सोडविण्याचा प्रयत्न केला. त्यानंतर त्यांनी मजुर आंदोलनाचे नेतृत्व रामभाऊ रूईकर यांच्याकडे दिले. रूईकरांचे कार्य इ. स. 1920 पासून सुरू होते. त्यांनी मजुर आंदोलनास मुख्य राष्ट्रीय प्रवाहास जोडले म्हणून त्यांचे नाव विदर्भाच्या मजूर नेत्यांमध्ये प्रसिध्द आहे.

1918 पूर्वी विदर्भात काही कामगार संघटना अस्तित्वात होत्या. परंतु पहिल्या महायुद्धानंतर कामगार चळवळींना खरे उत्तेजन मिळाले. प्रथम महायुद्ध काळात कामगारांनी खूप काम केले. त्यामुळे भांडवलदारांच्या पदरात 100 टक्के नफा पडला होता. त्यामुळे कामगारांना 75 टक्के नफा मिळत होता. परंतु युद्धानंतर 20 टक्के बोनस मिळत असे. म्हणून "अखिल भारतीय ट्रेड युनियन काँग्रेस" ची स्थापना करण्यात आली. समीउल्लाखान, डॉ. खरे, सर सोराबजी मेहता, सी. मॉट गांभी विदर्भात संघटना वाढविण्यासाठी खूप प्रयत्न केले. रूईकरांनी 1939 ते 1947 या कालखंडात विदर्भातल्या सर्व गिरणी कामगारांच्या संघटना एकत्रीत आणून गिरणी कामगारांची फेडरेशन बनविली. महागाई भत्त्यासाठी 1942 ला विदर्भात 40 हजार कामगारांनी संप केला होता.

**व्हिटले कमिशन व विदर्भातील नेते :**

इ. स. 1928 मध्ये मजुरांची परिस्थिती जाणून घेण्याकरिता भारत सरकारने व्हिटले कमिशन नेमले. या कमिशनवर मध्यप्रदेश शासनाने श्रीमती अनुसयाबाई काळे यांची मध्यप्रदेशतर्फे असिस्टंट कमिशनर म्हणून नेमणूक केली होती. या कमिशनबरोबर काळेनी विदर्भात दौरा काढला. गिरण्यात काम करणाऱ्या रित्र्यांची स्थिती जाणून घेतली. मजुरांची स्थिती सुधारण्याचा प्रयत्न केला. व्हिटले कमिशनसमोर दलित नेते श्री. किसन कागुजी बनसोडे यांनी एकुण मजुरांच्या एकुण स्थितीबद्दल निवेदन केलेत. दलित आणि मजुरांची स्थिती सुधारण्याचा त्यांनी प्रयत्न केला. त्यांच्याबरोबर मजुर चळवळीत भाई एन. एम. जोशी, श्री. आंबेकर, रावसाहेब ठवरे आणि श्री. भाकराव बोरकर यांचा त्यात समावेश होता. नरकेशरी अभ्यंकर यांनी सुध्दा मजुरांच्या प्रश्नात लक्षात घातले होते. परिणामी 1936 मध्ये सरकारकडून "पेमेंट ऑफ वेजेस अॅक्ट" पारित करण्यात आला. या कायद्याचा मुख्य उद्देश मजूर व महिलांना सवलती देण्यात याव्यात यासाठी "मॅटरनिटी बेनिफिट अॅक्ट" पास करण्यात आला.

**स्वातंत्र्यानंतर विदर्भातील कामगार चळवळीचे स्वरूप :**

कामगारांना प्रत्येक गोष्टीसाठी संघर्ष करावा लागला. त्यातून कामगार चळवळीला दिशा देण्याचा प्रयत्न करण्यात आला. मात्र गेल्या काही वर्षात उदारीकरण आणि खाजगीकरणामुळे कामगार चळवळीचे स्वरूप बदलले. आजही कामगार संघटनास संघर्ष करावा लागला. आज कामगार संघटनास संघर्ष करावा लागत आहे. आज कामगार चळवळीचे विघटन झाले. सरकारच्या चुकीच्या धोरणामुळे आज कामगार चळवळीचे नुकसान झाले आहे. विदर्भात असंघटीत कामगारांची संख्या झपाट्याने वाढली आहे. विदर्भाच्या कामगार चळवळीला इतिहास आहे. गिरणी कामगारांचे आंदोलन असो मजुरांचे. त्यावेळी कामगारांचा उठाव होत होता. कामगारांची लढाई कमी झाली असुन ती वाढविण्यासाठी सर्व संघटीत आणि असंघटीत कामगार संघटनानी राजकीय पक्षभेद सारून संघटीत होण्याची गरज आहे तरच कामगार चळवळ टिकेल.

**निष्कर्ष :**

विदर्भात खाजगीकरणामुळे कामगारांच्या चळवळी कमी झाल्या आहेत. माथाडी कामगार मोठ्या प्रमाणात असुन तो असंघटीत कामगारांमध्ये मोडतो. मात्र त्याची नोंद नाही. त्यामुळे तो विभागला गेला आहे. विदर्भातील सुतगिरण्या कायमच्या बंद झाल्या आहेत. बुद्धिबिरी पंचतारांकीत



उद्योगधंद्यांना सुध्दा बऱ्याच प्रमाणात हेक लागलेला आहे. खान उद्योगातील कामगारांचे लढे सुरू आहे. मात्र स्वरूप थोडे वेगळे आहे. आकटसोलीतचे प्रमाण वाढल्यामुळे कर्मजाग्याची आवश्यकता भासत नाही. पैकोली पीढरचीड सारख्या सरकारी उपकमातली कंत्राटी कामगार वर्गाची संख्या वाढली आहे त्यातून त्यांचे सामाजिक, आर्थिक, राजकीय शोषण होते. पुन्हा एकदा कामगार चळवळी निर्माण करणे गरजेचे आहे.

## संदर्भ ग्रंथ :

1. डी खांदेवाले विनिवास विदर्भ राज्य संकल्पना, विसा बुक्स, नागपूर
2. डी वककानी नि आ आधुनिक विदर्भाचा इतिहास मंगेश प्रकाशन, नागपूर
3. प्रा वैद्य एन डी विदर्भाची अर्थव्यवस्था मंगेश प्रकाशन, नागपूर
4. कीदारकर श गी आधुनिक विदर्भाचा इतिहास डी मंगेश प्रकाशन, नागपूर
5. डी भोसले नारायण महाराष्ट्र वार्षिकी 2008-2009, ट युनिक, अकडमी
6. नाथे संजय विदर्भातील जिल्हे, नाथे प्रकाशन, नागपूर
7. समाजप्रबोधन पत्रिका डिसेंबर 2010, मार्च 2013
8. साधना जानेवारी 2012
9. लोकसत्ता नागपूर वृत्तांत मे 2015



Principal  
Narayanrao Phule Sanshodhan Mandal  
Nagpur

Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSN-2278-9308

# B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October -2020

SPECIAL ISSUE-CCL(250)



Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande

Director

Aadhar Social

Research & Development  
Training Institute Amravati

Editor:

Dr. Santosh Bansod

Head Dept. of History,

Narayanrao Rana

Mahavidyalaya Badnera (M.S.).

A handwritten signature in black ink, appearing to read 'Santosh Bansod', written over a circular stamp.

Principal

Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)



For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

Aadhar PUBLICATIONS





**B.Aadhar'** International Peer-Reviewed Indexed Research Journal



Impact Factor - (SJIF) - 7.675, Issue NO, 250 (CCL)

ISSN :  
2278-9308  
October,  
2020

Impact Factor - 7.675

ISSN - 2278-9308

# B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

*Multidisciplinary International Research Journal*

October - 2020

ISSUE No -CCL (250)

**Dr. Babasaheb Ambedkar Thought**

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor :

Director

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati.

Dr. Santosh Bansod

Editor :

Head Dept.of History

Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera (M.S.).

**Aadhar INTERNATIONAL PUBLICATIONS**

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

© All rights reserved with the authors & publisher

**INDEX**

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	Dr Ambedkar's thoughts about Indian foreign policy with special reference to Goa Problem.	Dr. Santosh Bansod	1
2	Dr Babasaheb Ambedkar and Socialism	Dr. Vasant R. Dongare	4
3	स्त्रियांचे मुक्तीदाते : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रा.डॉ. कल्पना त्र्यं. मेहेरे		8
4	An Advocate of Human Society: Dr B. R. Ambedkar	Satish K. Khode,	11
5	Water conservation vision of dr. B.r. Ambedkar	Dr.Harshal R.Nimbhorkar	15
6	दलित पंथर आणि आंबेडकरवाद	प्रा. प्रफुल एम. राजुरवाडे	19
7	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे उच्चशिक्षणा विषयक विचार	प्रा. डॉ. सिध्दार्थ शिवाजी वाठोरे	24
8	महिला व मजदुरा के विकास मे डॉ. आंबेडकर की भूमिका	प्रा. डॉ. माधुरी म. पाटील.	27
9	भारतीय कृषी विकास के संदर्भ मे डॉ. बी. आर. अंबेडकर के विचारोंका ऐतिहासिक विश्लेषण	डॉ. प्रसन्न प्रकाश बगडे	30
10	वर्तमान परिप्रेक्षातून डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांची विदर्भातील भाषणे (पातुंडा ते अमरावती)	डॉ श्याम प्रकाश देवकर	34
11	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या सामाजिक चळवळीचा समाजमनावरील प्रभाव :- एक चिकित्सा.	डॉ किशोर मारोती वानखडे.	42
12	समाज क्रांतिकारकबाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय संविधान	जगन्नाथ सावंत	46
13	आंबेडकरी चळवळीतील रावबहादूर सीतारामपंत बोले यांचे योगदान	प्रा. प्रविन एम. राजुरवाडे	52
14	भारतीय स्त्री, पूर्वइतिहास, आजची स्थिती आणि डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर	प्रा.शितल बुधा मोनवणे	56
15	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार व योगदान	प्रा. विनय वामनराव तायडे	63
16	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार	प्रा. डॉ. नितिन उल्हासराव सराफ / गोपाल मधुकर राठोड	67
17	संविधानिक दृष्टिकोनातून महिला सक्षमीकरणामध्ये डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची भूमिका	प्रा. संतोष बन्सीलाल राठोड	72



**Dr Ambedkar's thoughts about Indian foreign policy with special reference to Goa Problem.**

**Dr. Santosh Bansod**

'Suman Nivas' , Near LIC Colony, Ram Nagar, Amravati. Pin - 444606

MO - 8275418986 email - bansodsantosh73@gmail.com

Dr B.R. Ambedkar have solution for all the problems which India was facing at that time. He have that view point by his deeprooted study of each and every subject. He solve all the problems of Indian society, economy, politics and also he also have solution for foreign policy also. The Indian independence movement was a series of activities whose ultimate aim was to end the British Raj and encompassed activities and ideas aiming to end the east India company rule ( 1757 - 1857) and the British Raj ( 1847 - 1947) in the Indian subcontinent. The movement spanned a total of 90 years considering movement against British Empire. The Indian Independence movement includes both protest and militant ( peaceful and violent) mechanisms to root out British administration from India. In 1947 India got Freedom from British Government but many states under in Rajeshahi, Nizams, Kashmir under Harising, Goa under Portuguese and many states under local Kings also.

The Portuguese conquest of Goa occurred when the governor of Portugese India Alfonso de Albuquerque Captured the city in 1510. Goa was not among the cities Albuquerque had received orders to conquer. He had only been ordered by the Portuguese king to capture Hormuz, Aden and Malacca. 1510 - 1947 Goa under Portuguese government. In 1947 India got freedom from British Government. Many places in India was free but some states under local prince as well as some foreign government like as Goa also. Indian union emerged after the end of British government in India at 1947. The Indian government demanded the Portuguese to hand over their colonies to the Indian union refusal would lead to a conflict.

There had been foreign pockets in India among them was a Goa, ruled by Portuguese government since 1510. The question of talking possessions of Goa was confronting of Indian Political leaders since independence of India. Pandit Javaharlal Neharu being prime minister of India, had made a statement in Loksabha on 25<sup>th</sup> August 1954 and expressed basic approach in regard to Goa. Neharujji expressed foreign policies of India in regards to various problems. Neharu and Dr. Babasaheb Ambedkar were eminent leaders in India. Sice many years and had their own to settle the problems comfoting to India. Gos was such a problem was to be settle using before coming to Dr Ambedkar's foreign policy and view of their eminent members of Rajyasabha. Pandit Neharu mentioned further that British got big part of India and Portuguese got very small part and that was Goa. He considered that Portuguese continued in Goa under shadow of British government otherwise it was impossible to continue for Pandit Neharu also blamed Portuguese that at the time to transfer of power which was going to take place, Hydrabad government and Portuguese government had some discussion between them so that Hydrabad government could get oulets from sea of Goa. As Pandit Neharu rejected the concept of war and believed in peaceful way . He felt





regretted of international observers on account of it's failure to carry out talks between two countries and should sympathy to the struggle rised by nonGoan people. But advied them not to use any arms.

Now let's come to the foreign policy by the Dr. Babasaheb Ambedkar towards Goa. Which he expressed Rajyasabha during debate on international situations held on 26<sup>th</sup> August 1954. He criticize foreign policy of Pandit Neharu and drew the attention of the Rajyasabha members, and suggest policy which gave the proposals to settles the Goa problem. There had been one common fact that both the Pandit Neharu and Dr. Ambedkar wanted Goa to be the part of Indian territory, freedom from Portuguese. Dr. Babasaheb Ambedkar supported Pandit Neharu to get Goa educated. However he recalled this in regard to education of Goa and brought to the notice of prime minister in the debate again. That the question was already brought to the notice of the primeminister. It appears from this thoughts that Dr. Babasaheb Ambedkar would have no objection to adopt the police action against the Portuguese government. If government of India had decided to do so.

Dr. Babasaheb Ambedkar clarified his views towards Goa problems that he did not prefer to accept observers nor did he agree with dominion status to Goa. However he preferred small police action to observers in talking possessions of Goa. Pandit Neharu was found accepted international observers but felt regretted having seen that no meeting was held. It is very important that Pandit Neharu accepted the way which was known as peaceful way. In this context Dr. Ambedkar suggested to valuable method to settle Goa problem. According to Dr. Ambedkar government of Inida and Portugal government would have succeeded to settled Goa problem. If the adopted two methods, nobody would have dare to say that the Indian government had adopted any violent way. Thus we became aware of the Dr. Ambedkar's foreign policy towards Goa. That government of India had two ways – first the violent way and that is police action, second to adopt two methods of consisted of purches of Goa or Goa on lease. In said debate 26<sup>th</sup> August 1954 held in Rajyasabha members of other mentioned also expressed their thoughts in their respective speeches. We know that Pandit Neharu ruled out the possibility of small police action. He refused this views in speech in Loksabha dated on 26<sup>th</sup> July 1955. Pandit Neharu in Loksabha while replying about debate about Goa. Stated about methods to be applied to Goa. He clearly answered to Loksabha members and leaders who present at assembly hall. He ignored till police action or limited war and considered that small or big actions carries same effect.

The report threw light on Dr. Ambedkar's foreign policy towards Goa. That the scheduled caste federation shall not accept the Satyagraha in Goa. The atrocities of Portugues will not be rulled out by Gandhian satyagraha because it was not applicalble in Goa.

Goa must be assist into India and Portuguese there in must leave Goa immediately , to achieve this aim. There are three solutions-

- 1) To purchase Goa from Portugal.
- 2) To take possession of Goa and on lease.
- 3) To fight war against Portuguese.

If these solutions are not acceptable to government of India, then India must tell the people of India about India's steps to be taken. By these issues Indian





government and Goa government solve the problem in 1961 and Goa became the part of Indian Union.

**References –**

- 1) Dongare V.R., '*Dr Babasaheb Ambedkar Ani Itihasmimansa*', Devyani Prakashan Mumbai, First Edition, 2012.
- 2) Gaikwad Vijay , '*Dr. Ambedkar's foreign policy and its Relevance*', Vaibhav Prakasan, Ulhasnagar, First edition 1999.
- 3) Gaikwad Dnyanraj, '*Mahamanav Dr Bheemrao Ramji Ambedkar*', Ria Publication, Kolhapur, Fifth edition, 2013.
- 4) Gajbhiye Sheshraj, '*Dr Babasaheb Ambedkaranche Rajkiy Tatvadnyan*' (Marathi), S.K. Publication, Nagpur.
- 5) Kasbe Raosaheb, '*Ambedkar and Marx*', Sugava Publication, Pune, Second edition, 2006.
- 6) Moon Vasant (Editor), '*Source Material On Dr Babasaheb Ambedkar and The Movement of Untouchables Volume II*', Education Department Government of Maharashtra, 1990
- 7) Nayyar kuldip, '*India : the critical years*', Vikas publication, Delhi, First edition, 1971.
- 8) Neharu Javaharlal, '*Indias foreign policy - selected speeches*', Government of India, August 1961.



Scientific Journal Impact Factor

## CERTIFICATE OF INDEXING (SJIF 2020)

This certificate is awarded to

**Bahujan Aadhar**  
(ISSN: 2278-9308)

The Journal has been positively evaluated in the SJIF Journals Master List evaluation process  
SJIF 2020 = 7.675

SJIF (A division of InnoSpace)



SJIF Project

**Principal**

Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera

**Aadhar PUBLICATIONS**

For Details [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

**Price:Rs.500/**

New Hanuman Nagar, In Front Of  
Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati ( M.S ) India Pin- 444604

Mob-- 9595560278. Email: [aadharpublication@gmail.com](mailto:aadharpublication@gmail.com)



ISSN 0974-2832

1st JUNE-2019, Vol-VI, Issue-125

AN INTERNATIONAL LEVEL PEER REVIEWED REFERRED REGISTERED RESEARCH JOURNAL

**SHODH**

Impact Factor-5.901(SJIF)

**SAMIKSHA**

UGC APPROVED

**AUR**

&

**MULYANKAN**

LISTED-41004

शोध समीक्षा

और

मूल्यांकन



Editor

**Dr. KRISHAN BIR SINGH**

[www.ugcjournal.com](http://www.ugcjournal.com)

Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnara



**Editor's Office**  
**A- 215, Moti Nagar,**  
**Street No.7**  
**Queens Road**  
**Jaipur- 302021, Rajasthan,**  
**India**

**Contact - 094 139 70 222**  
**094 600 700 95**

**E-mail:**

**www.ugcjournal@gmail.com**  
**dr.kbsingh@yahoo.Com**  
**professor.kbsingh@gmail.Com**

मुख्य सम्पादक — डॉ. कुशवीर सिंह का मानद पद एवं कार्य-पूर्णता-अवैधानिक है।

इस ज्ञान पत्रिका के प्रकाशन, सम्पादन एवं मुद्रण में पूर्णतः सावधानी बरती गई है। किसी भी प्रकार की त्रुटि श्राव्य मानवीय भूल मानी जाये।  
ज्ञान पत्र की सम्बन्ध विन्मोदारी साक्षर लेखक की शर्मा/करी से सम्पादक, प्रकाशक एवं-मुद्रक-विन्मोदक नहीं होगा।  
सम्बन्ध-विन्मोदक का न्याय क्षेत्र जयपुर शहर ही होगा।

1. Editing of the research journal is processed without any remittance **The selection and publication is done after recommendation of subject expert Refree.**
2. Thoughts, language vision and example in published research paper are entirely of author of research paper. It is not necessary that both editor and editorial board are satisfied by the research paper. The responsibility of the matter of research paper is entirely of author.
3. Along with research paper it is compulsory to sent Membership form and copyright form. Both form can be downloaded from website i.e **www.ugcjournal.com**
4. In any Condition if any National/International university denies to accept the research paper published in the journal then it is not the responsibility of Editor, Publisher and Manangement.
5. Before re-use of published research paper in any manner, it is compulsory to take written acceptance from Chief Editor unless it will be assumed as disobedience of copyright rules.
6. All the legal undertaking related to this research journal are subjected to be hearable at jaipur jurisdiction only.
7. The research Journal will be sent by normal post. If the Journal is not received by the author of research paper then it will not the responsibility of Editor and publisher. The amount or registered post should be given by the author of research paper. It will be not possible to sent second copy of research journal.





## Contents

### Law

#### Procedural Aspect of International

\* Vivek Pareek 7-9

### Journalism & Mass Communication

विदेशी हमलों से पूर्व भी भारत एक राष्ट्र था

\* डॉ. अंजनी कुमार झा 80-82

सोडिया एक उद्योग के रूप में: एक विश्लेषण

\* निशांत कुमार \*\* जय किरान गोस्वामी 94-96

### Visual Art

#### Mandana Art: A Study from Households

\* Dr. Nirupama Singh 10-12

### Management

#### A Study of Housing Finance Offered

\* Mr. Akhilesh Kumar \*\* Dr. A.P. Singh 19-20

### Marketing

#### Study of The Effectiveness of Online

\* Dr. Anil Tiwari 21-23

### Physical Education

#### Nutritional And Balanced Diet

\* Chander Sen Chauhan 33-35

### Political Science

उत्तरांचल राज्य की मांग आन्दोलन

\* डॉ. सुमित कुमार बंसल 71-72

प्राचीन भारत की न्यायिक व्यवस्था

\* कविता महावर 75-76

महासमुद्र जिले में श्रम पलायन की समस्या

\* डॉ. धर्मेन्द्र कुमार साहू 77-79

राजस्थान में पंचायती राज व्यवस्था

\* शिवकरण निगल 83-85

2019 का लोकसभा चुनाव और चुनाव सुधार

\* डॉ. हरवीर सिंह डागुर 117-118

### Geography

#### Conclusion & Factor That Effect Marital

\* Dr Neetu Yadav 44-45

राजस्थान में जलस्वावलम्बन अभियान

\* सुनील कुमार ढाका 53-55

### History

भारतीय शिक्षा मूल्य की ऐतिहासिक अभिधारणा

\* डॉ० निखिल विक्रम सिंह 48-50

राजे लखुजी जाधवराव – व्यक्ति आणि कार्य

\* प्रा.डॉ. शरद आर. डवरे 143-145

पर्यटनाचा इतिहास- एक अभ्यास

\* डॉ. एस. पी. बनसोड 146-147 ✓

### Sociology

#### Awareness And Practice Regarding

\* Sunil Dutt \*\* Aaradhana Bandhani 30-32

अनुसूचित जाति की महिलाओं की बदलती

\* डॉ. सुमित्रा शर्मा 66-68

पंचायत राज और महिला सशक्तिकरण

\* जय प्रकाश भीणा 126-127

महाराष्ट्राच्या शैक्षणिक कार्यात राजर्षी शाहू

\* उज्वला टेंकाडे 141-142

### Commerce

#### Performance of Small Finance Banks

\* Sumiran Kumar Rajak 13-15

#### Activity Based Learning In Commerce

\* Dr. Yulendra K. Rajput

\* Dr. Madhulika Agrawal 36-39

## पर्यटनाचा इतिहास— एक अभ्यास



\* डॉ. एस. पी. बनसोड

\* सहयोगी प्राध्यापक, नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा

सार : पर्यटनाचा प्राचीन इतिहास सापत्वंता आहे. पर्यटनाच्या सार्वभौमिक विविध ऐतिहासिक शोध सापत्वंतात घडत होत आहे. शिवाय त्यामुळे मनोरंजन आणि शिक्षण ही प्रक्रिया सुध्दा रचिल्या आहेत. पर्यटनामुळे पर्यटनाच्या ठिकाणाच्या सौंदर्याचा विकास आणि रोजगार संधी निर्माण होतात आणि देशाच्या अर्थव्यवस्थेचा विकास होण्याला सुध्दा पर्यटनाचा हातभार लागत आहे. अशा स्थितीत अधिकधिक प्रमाणात पर्यटक पर्यटन स्थळी आकर्षित करण्यासाठी त्या पर्यटन स्थळाचा इतिहास काय आहे याचा प्रसार प्रसार होणे काळाची गरज आहे.

प्रवास ही अतिप्राचीन काळापासून चालत आलेली घटना आहे. सुरुवातीच्या काळामध्ये मनात कोणताही उद्देश अथवा जाणीव न ठेवता प्रवास केला जात असे. वर्तमान काळामध्ये प्रवास करतांना विविध पध्दतीचा वापर करावा लागतो अशा पध्दती पूर्वीच्या काळी अस्तित्वात नव्हत्या. आजुसध्दा आनंद प्राप्त करण्यासाठी प्रवास करण्यात येतो. प्राचीन काळामध्ये प्रवास करणारे बहुतांश यात्रेकरू नवीन प्रदेशाचा शोध घेण्यासाठी प्रवास करीत असते. याशिवाय व्यापार हा त्या मागील प्रमुख हेतू होता. अशा प्रकारे जगात प्राचीन काळात एका वेगळ्या हेतूने सांस्कृतिक देवान घेवानीस प्रारंभ झाला.

ख्रिस्तपूर्व 400 मध्ये बॅबीलोनियातील समेरीयानाचा गूत खजिन्याचा भोध आणि स्थानिक व दूरच्या ठिकाणाची व्यापारातील प्रगती म्हणजे प्रवासाच्या आरंभाचे ऐतिहासिक युग होय. राजशुल्की यांनी या काळात सुरक्षित मार्गाचा विकास करून प्रवासी व वाटसरू यांच्यासाठी अनेक ठिकाणी विश्रांतगृह बांधली आहेत.

प्रसिद्ध कवी होमर यांच्या ओडीसी रचनेत ग्रीकांच्या मटकंती विष्की नोंदी मिळतात. भारत व चीन मध्ये केलेला प्रवास व्यापारी स्वरूपाचा होता. तसेच पूर्ण जगातून पूर्वेकडे झालेले विविध दारे व्यापारी स्वरूपाचे होते त्यामुळे विविध प्रदेशाचे शोध लागले यानंतर प्रवासाचा हेतू बदलत गेला प्रवास केंद्र मनोरंजन म्हणून केला जात असे सर्वप्रथम मनोरंजनासाठी प्रवास करणारे रोमन प्रवासी होय. रोम साम्राज्यातील दळण-वळणाच्या प्रभावी सुविधांच्या उपलब्धतेमुळे पर्यटनास चालना मिळाली. दिशवृत्त 18 व्या शतकाच्या मध्यामध्ये युरोप खंडामध्ये भ्रमण करणे, समुद्रात पोहणे इत्यादी कार्यक्रम सुरु झाले असल्यामुळे किनारी भागात विश्रामगृह उभारले गेले व पुढे यातूनच आधुनिक पर्यटन अस्तित्वात आले. 18 व्या शतकात रेल्वे मार्गाचा उदय झाल्यामुळे विविध सेवा सुविधांचा ओघ सुरु झाला. पर्यटनाच्या दृष्टीने रेल्वेस महत्त्व प्राप्त झाले त्यामुळे नवीन जगाकडे लोकांचा प्रवास अधिक प्रमाणात वाढला. 1869 सुवेझ कालवा, 1914 पनामा कालवा पूर्ण झाल्याने सागरी मार्गाचे महत्त्व वाढीस लागले तसेच या शतकात इजीप्ताचा शोध लागल्यामुळे मोटार व्यवसाय विकसित झाला व पुढे मोटार वाहतुकीमुळे पर्यटनाला चालना मिळाली.

दुस-या महायुद्धानंतर हवाई वाहतुक विकसित झाली त्यामुळे आंतरराष्ट्रीय पर्यटनात झपाट्याने प्रगती झाली. पर्यटन भारतीय संस्कृतीचा अविभाज्य घटक आहे. 'अतिथी देवो भव' किंवा 'वसुधैव कुटुंबम्' या संकल्पनांचा विकास भारतीय संस्कृतीमध्ये झाला आहे आणि या कल्पनांचा पर्यटनासाठी प्रेरक आहेत. पर्यटन मुख्यतः राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय धार्मिक प्रसार आणि प्रचारावर आधारित आहे. तसेच पर्यटनामुळे आनंद प्राप्ती होते. म्हणून बहुसंख्य लोक एका ठिकाणाहून दुस-या ठिकाणी भ्रमण करतात. हडप्पा व बॅबीलीयन संस्कृतीत प्रवासाददलचे पुरावे मिळतात. सुमारे 4000 वर्षापूर्वी मानव व्यापारी हेतूने प्रवास करत होता. त्यावेळी जगातील विविध बाबींची माहिती प्रवासाच्या माध्यमातून प्राप्त केली जात होती.

वंश परंपरागत भारतीय संस्कृतीने दिलेली देणगी म्हणजे पर्यटन होय. प्राचीन भारतात ऋषी व साधूंसत एका ठिकाणी फार काळ वास्तव्य करीत नसत त्यांचे निश्चित थांबण्याचे ठिकाण नव्हते स्थानिक लोकांकडून शिक्षेच्या स्वरूपात अन्न घेत असत व तात्काळ ते ठिकाण सोडून दुस-या गावी जात असते. हिंदू धर्माचे संस्थापक ऋषी यांनी रामेश्वर बदीनाथ, व्दारकापूरी आणि जगन्नाथपूरी या चार ठिकाणी हिंदू धर्माच्या विकास आणि प्रसारासाठी मठाची स्थापना केली. त्यामुळे हिंदू धर्मातील धार्मिक पर्यटन करण्याची संधी प्राप्त झाली अशाच प्रकारे बौद्ध धर्मातील परंपरांनुसार भिक्षूक धर्म प्रसारासाठी भारतीय उपखंडात सर्वत्र फिरले त्यामुळे भारताच्या शेजारील देशात धर्म प्रसार झाला. प्राचीन भारतात शिक्षण व ज्ञान घेण्यासाठी जगातून लोक येत असत त्यात तक्षशिला व नालंदा हे मुख्य केंद्र होते. फहयान व ह्येनसांग चीनी प्रवासी इलबतुता व वास्को-द-गामा पार्शियान प्रवासी यांनी आपल्या प्रवास वर्णनात अनेक नोंदी केल्या आहेत. भारतीय संस्कृतीमधील अगस्ती ऋषी यांचा प्रवास प्रसिद्ध आहे.

अशाप्रकारे पर्यटन केवळ मानवामध्येच नाही तर पशू पक्षी आणि जीव जंतु यांच्यात सुध्दा दिसून येते कारण वर्तमान काळात सेबेरियन भूद प्रदेशातून हिवाळ्यात पक्षाचे स्थलांतर मध्य आशियाकडे होत असल्याचे दिसून येते. हवामानातील बदलामुळे पुन्हा प्रवास होत असल्याचे दिसून येते. म्हणजेच प्राणी आणि पक्षी यांच्यात सुध्दा पर्यटनाची परंपरा दिसून येते. यावरून



असे दिसून येते की, संपूर्ण जीव जगतात प्राचीन काळापासून पर्यटन परंपरा चालत आलेली आहे.

वास्तविक पर्यटनाचा इतिहास हा मानवाचा उदय व विकास प्रक्रियेशी जुळलेला आहे. मानव जन्मत पर्यटक आहे कारण मानव लहान बालकांच्या भूमिकेत असताना निसर्गातील विविध घटनांमुळे आकर्षित होतो. यामुळे प्रथमतः घर सोडून बाहेर जाण्यास सतत प्रयत्न करतो. घरासभोवतालच्या वातावरणाचा अनुभव घेतल्यानंतर शिक्षणासाठी मित्रासमवेत विविध खेळ खेळण्यासाठी तसेच आई वडीलासमवेत बाजार, यात्रा, उत्सव व इ. विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमात सहभागी होतो. शारिरीक व बौद्धिक विकासाच्या प्रगतीनुसार व आपल्या आवडीनुसार निसर्गाचा आनंद घेण्यासाठी सतत प्रवास करतो. यातून मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, जलाशय, नदी उद्यान इ. सांस्कृतिक, धार्मिक व नैसर्गिक स्थळापर्यंत पोहचतो. त्यामुळे या घटकांचे ज्ञान झाल्यामुळे त्याचे कुतूहल वाढते. त्यातून पुढे पर्वत, पठार, मैदान, गुहा, धब-धबे नदीप्रवाह इ. नैसर्गिक घटकांकडे आनंद घेण्यासाठी जातो व त्यातील गुढ शोधण्याचे प्रयत्न करतो.

अनादीकाळापासून मानव जीवन जगण्यासाठी लचबं परत आहे अन्न व निवारा यासाठी सतत भटकत आसला आहे काळाच्या ओघात संस्कृतीचा विकास व मानवाने निसर्गातील विविध घटकांचे ज्ञान घेवून गरजेनुसार निवारा, मंदिर, मस्जिद

इत्यादीची निर्मिती केली व त्यातून स्थापत्यकला उदयास आली. तसेच मानव स्वतःचा आरोग्यासाठी विविध वनस्पतींचा औषधी म्हणून उपयुक्त क्रम जगतात त्यामुळे मानवाला वन्यजीवन व जंगलाचे आकर्षण वाढत गेले. त्यातून जंगले अभयारण्य, प्राणी संरक्षण, खेडी संरक्षण व राष्ट्रीय उद्यान इत्यादी निर्माण केले. नैसर्गिक गुढ घटकांसाठी उद्यान तर सांस्कृतिक गुढ घटकासाठी स्मारक, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, मठ, वैदिक काळात प्रसिद्ध राम हनुमन् मंदिर, मस्जिद इत्यादी, गुरुद्वारा वगैरे इत्यादी धार्मिक पर्यटन मानवाने निर्माण केली व त्यातूनच पर्यटनाचे मुख्य रूप पुढे आले.

जगातून धार्मिक पर्यटन, खेळ व घटक पर्यटन विकासात योगदान देणारे स्थळांचा पर्यटक आहे हिंदू, बौद्ध, जैन व शिख धर्मात जसं स्थळाला देतात आहे बौद्ध धर्मातला भिक्षुक परंपराने भारत, चीन, जपान इत्यादीकडे बसवून घेऊनही कारीया, श्रीलंकेत इत्यादी देशात उतरवून गेले जाऊनही आहेत तर बौद्धमत व जगतूनहीच धार्मिक पर्यटनस्थळ म्हणून उदयास येत आहे हिंदू धर्मात उद्यान व स्मारकांचा जमीन मुढा घार ठिकाणी धार्मिक घटकां स्थापने करून भारतीय विदुषीमैदाना अखंडीत ठेवण्याचे प्रयत्न केले. कित्यकाल आतुंकला प्राचीन किल्ले व स्मारक तसेच विविध पर्यटन स्थळे विदाजामुळे पर्यटन विकासाला प्रोत्साहन मिळाले आहे.

### संदर्भ ग्रंथ

1. भारतले पर्यटन प्रवास पर्यटनाचे नवे पैलू पुणे वेदा परिवर्तन हास
2. खलीफ की ए 2016 पर्यटन भूमीत पुणे वेदा परिवर्तन हास
3. माटे एम एस प्राचीन भारतीय कला
4. Bhatia A. K. Tourism in India Delhi Sterling Publishers
5. Mahajan L. C. and others, Tourism Business, Delhi King Books
6. Anand M. M. - Tourism and Hotel Industry in India New Delhi Sterling Publishers
7. Sathyadev T. K. and other, Encyclopaedia of Tourism specific New Delhi Books International
8. Raina A. K. and other, Tourism Destination Management Principles and Practices, New Delhi Kanishka Publishers Distributors.
9. www.ugcjournal.com



**Chief Editor**

**Prof. Virag S. Gawande**  
**Director**

**Aadhar Social  
Research & Development  
Training Institute Amravati**

**Editor:**

**Dr. N. J. Meshram**  
**Principal**

**Y.D.V.D. Arts, Commerce &  
Science College, Teosa ,  
Dist. Amravati.**

**Executive Editor :**

**Dr. Kusmendra Sontakke**

**Head, Deptt. of History  
Y.D.V.D. Arts, Commerce &  
Science College, Teosa ,  
Dist. Amravati.**

**This Journal is indexed in :**

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)



*(Handwritten signature)*  
**Principal**

**Shri Shivaji Education Societys Amravati Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera**

**Y.D.V.D. Arts, Commerce & Science College, Teosa**

For Details Visit To : [www.aadhursocial.com](http://www.aadhursocial.com)



**Aadhar PUBLICATIONS**



**INDEX**

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	The Contribution of Women to the Indian English Novel : A Critical Study	Shrikant Govindsingh Thakur	1
2	The conductometric measurement of [ptcp] and [mtcp] at various molar concentrations	S.O.Mohod <sup>a</sup> , D. T. Tayade <sup>b*</sup> , N.J.Meshram, M.S.Lunge.	5
3	Women's Empowerment In India an Analytical Overview	Mr. Chandrakant B. Dhumale.	10
4	Women Empowerment	Dr. Meena K. Rokade	14
5	A Study on Issues and Challenges of Women Empowerment in India	Prof. Rahul G. Mahure.	17
6	Contribution Of Women In Modern Science And Technology	Prof.Suresh N.Gawai	22
7	Role of Libraries on Women Empowerment in Knowledge Society	Ravindra Vijay Patil	28
8	Necessary steps for Empowerment of Women and Girls in India	Dr.Dinesh A. Gundawar	33
9	Women in Development: A New Socio-Economic Perspective	Dr K. R. Nagulkar	36
10	A Study of Self Confidence of Wives and Adult Daughters of Alcoholics	Dr. Mina Kalele	39
11	Women Empowerment And Co-Operatives	Ku. Ujwala Tekade	43
12	Food Consumption Pattern and Dietary Habits of Overweight Pregnant Women	Sharmila Kubde	46
13	Women Empowerment	Dr. Parag Kukade	50
14	आधुनिक काळात भारतीय कला आणि संस्कृतीत महिलांचे योगदान	प्रा. अमिता मनोज चौधरी	55
15	महाराष्ट्रातील राजकारणातील स्त्री नेतृत्व-दिशा व दशा	प्रा. डॉ. संतोष बन्सोड	59
16	महानुभाव पंचवीच आद्य स्त्री आचार्य कमळाऊसा : चरित्र व कर्तृत्व	डॉ. अण्णा वेद्य	62
17	श्रीमती इंदिरा गांधी यांचे भारताच्या विकासातील योगदान एक अध्ययन	प्रा.डॉ. व्ही.जी.वसु	65
18	समान सविका मंदर तरेसा	डॉ. विजयसिंग किसनराव पवार	68
19	भारतीय साहित्यातील महिलांचे योगदान	प्रा. विनायक नधुराम तत्रे	70
20	मराठी सिनेसृष्टीतील स्त्रि कलावंतांचा सहभाग	प्रा. डॉ. संजय एन. तुरुकमाने	75
21	मराठी विज्ञान कथालेखिकांचे विज्ञान साहित्यात योगदान	डॉ. सुलभा खर्चे / प्रा. रुपा ठाकरे	77

## महाराष्ट्रातील राजकारणातील स्त्री नेतृत्व-दिशा व दशा

प्रा. डॉ. संतोष बन्सोड

एल.आय.सी. कॉलेजीजवळ, रामनगर

सारांश :

भारतात प्राचीन काळापासून 'स्थानिक संस्था' अस्तित्वात होत्या. मौर्य व गुप्त राजवट तसेच हर्ष कालखंडामध्ये 'ग्रामसभा' व पंचायतीचा विकास झाला. कालांतराने ग्रामसभा व पंचायतीचे स्वतंत्र गणराज्यात झाले. मुस्लीम कालखंडात पंचायतीराज संस्थांची प्रगती खुंटल्याचे आढळते. १८७० च्या काळापासून लॉर्ड मेयोने भारतात सर्वप्रथम स्थानिक स्वराज्य संस्था निर्माण करण्याचा प्रयत्न केला. लॉर्ड रिपन यांना भारतीय स्थानिक स्वराज्य संस्थांचा जनक संबोधले जाते. कारण की, ब्रिटीश राजवटीत १८८२ साली केलेल्या टाटावने भारतीय स्थानिक स्वराज्य संस्थांचा कायदा संमत झाला. ब्रिटीश कालखंडात भारतात स्थानिक स्वराज्य संस्थांची केवळ संख्यात्मक वाढ झाली. गुणात्मक झाली नाही. स्वातंत्र्य भारतात बलवंतराव मेहता समितीने लोकशाही सत्तेचे विकेंद्रीकरण केले. १९६२ मध्ये राजस्थानने पंचायती राजचा स्विकार केला. भारतात १९६३ मध्ये महिला राजकीय सबलीकरण करण्याच्या दृष्टीने घटनादुरुस्ती केली. ही कांतीकारक घटना होती. यामुळे कधीही उंबरठा न ओलांडणाऱ्या स्त्रियां मोठ्या प्रमाणात निवडणुका लढविल्या. प्रचार करतात राज्य कारभार पाहतात. मात्र लोकसंख्येच्या दृष्टीने महिलांचे राजकारण अल्प प्रमाण आहे.

निसर्गतःच एकुण लोकसंख्येच्या अर्धी लोकसंख्या महिलांची आहे. कायदेशीरदृष्ट्या त्यांना पुरुषांहून अधिकार असले तरीही वास्तव्यात त्यांची स्थिती खूप दयनीय आहे. ही स्थिती केवळ आजची नसून प्राचीनकाळापासून सत्तेच्या कनिष्ठ दर्जा देण्यात आला आहे. सामाजिक, आर्थिक, राजकीय दृष्टीकोनातून त्यांचे दुय्यम स्थान परंपरेने आजही दिसण्याचे आढळते. महात्मा फुले, लोकहितवादी, आगरकर, महर्षी कर्वे या समाजसुधारकांनी महाराष्ट्रात स्त्रियांचा दर्जा सुधारण्यासाठी केलेल्या प्रयत्नांमुळे मागील शतकाच्या शेवटापासून महिलांना समाजात विशिष्ट स्थान प्राप्त होत आहे.

राजकारण हे सर्वसाधारणपणे पुरुषी वर्धस्व असलेले क्षेत्र मानले जाते तरी जागतिक राजकारणात अनेक स्त्री नेत्या प्रसिध्द आहेत. उणीपुरी ७० वर्षांची लोकशाही असलेला भारत देश सुध्दा याला अपवाद नाही. भारतात फेडरेशन, राष्ट्रपती, मुख्यमंत्री इत्येक नवेतर परराष्ट्रमंत्री, संरक्षणमंत्री, अर्थमंत्रीपद भूषविले आहे. जगदी ब्रिटीश कालखंडापासून आधुनिक राजकारणापर्यंत अनेक स्त्रिया अग्रेसर आहेत. त्यांनी घेतलेल्या निर्णयासाठी, घोरणासाठी, नेतृत्व गुणासाठी त्या प्रसिध्द आहेत.

महाराष्ट्रात स्त्री नेतृत्वाची परंपरा आहे. जिजाभाता, राणी ताराबाई ते स्वातंत्र्यपूर्व काळापासून समाजसुधारण चळवळीमध्ये अग्रक्रमाने नाव घेतले जाते. त्या सावित्रीबाई फुले, रमाबाई रानडे, विजयालक्ष्मी पंडित, मरोळीनी नायडू, इंदिरा गांधी, जयंतीबेन मेहता इत्यादी विशेष म्हणजे ज्या काळात स्त्रिया राजकारणात सक्रीय होत्या. त्या काळात स्त्रियांसाठी ३३ टक्के आरक्षण हा विचारही मांडला नव्हता. ७३ व्या व ७४ व्या राज्यघटनेच्या दुरुस्तीनंतर स्त्रियांसाठी ३३ टक्के आरक्षण देण्याची तरतूद केली लोकसभा, विधानसभा आणि स्थानिक स्वराज्य संस्थांमध्ये हे आरक्षण ५० टक्के असावे या मागणीपर्यंत राजकारण पोहचले. या प्रक्रियेने स्त्रियांना राजकारणात सहभागी होण्याच्या दृष्टीने अनेक प्रयत्न केले. पंचायत राज कायद्यामुळे ग्रामीण भागातील राजकीय चित्र बदलू लागले आहे. स्थानिक स्वराज्य संस्थांमध्ये स्त्रियांचा पदापर्यंत महिला पोहचल्या आहेत. आदिवासी दलित स्त्रिया ही राजकारणात सक्रीय सहभागी होत आहेत. गावांचा विकास, पाणी, शाळा, रस्ते, दारूबंदी यासारखे ज्वलंत विषय महिलांनी पुढे आणले आहेत.

शब्दकोष : स्थानिक संस्था, गणराज्य, पंचायत राज, जिजाभाता, सावित्रीबाई, आदिवासी, दारूबंदी इत्यादी.

विषयाचे महत्व :

भारतात महाराष्ट्र राज्याची एक वेगळीच छाप आहे. मग ते औद्योगिकीकरण, शैक्षणिक, समाजकारण वा राजकारण असो, सर्वच क्षेत्रात महाराष्ट्र एका उंचीवर आहे. महाराष्ट्रातील स्त्रियांची राजकारणातील पौडरीड महत्वाची आहे. महाराष्ट्रातील सक्षम नेतृत्व म्हणून योगदान महत्वाचे आहे. मात्र राज्य विधान मंडळात आणि संसदेत त्यांचे प्रमाण नगण्य आहे. ही खरोखरच चिंताजनक बाब आहे. प्रस्तुत शोध निबंधातून वर्तमानकाळातील महाराष्ट्राच्या राजकारणातील महिलांचा सहभागाचा शोध व समस्या जाणून घेण्याचा प्रयत्न केला जाईल.



अध्ययनाचा उद्देश :

१. महिला सबलीकरणाची संकल्पना स्पष्ट करणे.
  २. जागतिक पातळीवर भारतीय महिलांचे स्थान अभ्यासणे.
  ३. महाराष्ट्रातील राजकारणातील महिलांचा सहभागांचा आढावा घेणे.
  ४. महाराष्ट्रातील ग्रामीण राजकारणातील स्त्रीयांचा सहभाग अभ्यासणे.
  ५. राजकारणातील महिलांना आपली भूमिका पार पाडतांना अनेक अडचणीला तोंड द्यावे लागते. याचा अभ्यास करणे.
- संशोधन पध्दती :

सदर संशोधन महाराष्ट्राच्या राजकारणातील महिलांचा अभ्यास हा विषय आहे. त्यासाठी ऐतिहासिक, नोंदी पध्दती, त्यांच्याविषयी नोंदविलेली मते व नोंदी व माहिती पध्दतीचा अवलंब करण्यात आला आहे.

विषय विवेचन :

स्वातंत्र्यपूर्व काळात महात्मा गांधींच्या नेतृत्वाखाली काँग्रेसने उभारलेल्या स्वातंत्र्य लढयात महाराष्ट्रातील अनेक मराठी कुटुंबातील स्त्रिया सहभागी झाल्या होत्या. अहिल्या रांगणेकर, मृगाल गोरे, प्रमिला दंडवते, कमल देसाई अशा अनेक तरुणींनी आधी काँग्रेस, नंतर सेवा दल, समाजवादी पक्ष, साम्यवादी पक्ष यांच्या माध्यमातून आपली राजकीय कारकिर्द उभी केली. महाराष्ट्रातील या स्त्रियांनी स्वातंत्र्यानंतर लोकशाहीकरणाच्या प्रक्रियेत भाग घेतला. संयुक्त महाराष्ट्र चळवळ तत्सम अनेक चळवळीत सहभागी होत्या. या स्त्री नेत्यांनी वाडती महागाई, घरांच्या समस्या, पिण्याच्या पाण्याचे प्रश्न, कामगारांच्या समस्या, स्त्रियांचे हक्क, हिंदू कोड बिल, गोवा मुक्तिसंग्राम आणिवाणी अशा विविध मुद्द्यांवरती ठोस भूमिका घेऊन लोकचळवळ उभी करण्याचा प्रयत्न केला. भाववादीविरोधात लाटणे मोर्चा, दलित आदिवासींच्या समस्या सोडविण्याचा प्रश्न असे अनेक मुद्दे या काळात गाजले. महाराष्ट्राच्या राजकारणात स्त्री नेत्यांच्या भूमिकेला महत्व प्राप्त होऊ लागले.

स्वातंत्र्योत्तर राजकारणातील महिलांचा सहभाग :

१९६२ च्या निवडणुकीत ज्यांनी विधी मंडळातील महिलांच्या प्रतिनिधीत्वाची मुहूर्तमेढ रोवली, त्यात देशाच्या पहिल्या महिला राष्ट्रपती श्रीमती प्रतिभाताई पाटील यांचे नाव अग्रक्रमाने घ्यावे लागते. संयुक्त महाराष्ट्र बनल्यानंतर १९६२ ला प्रथम निवडणुक झाली. ती २६४ जागांसाठी होती. १९६१ उमेदवार रिंगणात होते. या निवडणुकीत ३६ महिला उभ्या होत्या. त्यापैकी १३ महिला विजयी झाल्या अशी निवडणुक आयोगाकडे नोंद आहे.

१९६२-६७ विधानसभेत १७ महिला आमदार होत्या. १९७२ मध्ये एकुण २८ महिलांनी आमदार निवडून घेण्यात उच्चांक गाठला. पुढे महिला आमदारांची संख्या कमी झाली. २००४-०९ मध्ये अवघ्या ११ महिला विधानसभेत निवडून आल्या. राज्यसभा आणि विधानपरिषदेत ५ आमदार आहेत. एकुण ग्रामपंचायती २७,८६३ आहेत. त्यापैकी महिला सरपंच ९,३२५ ऐवढे आहेत. ३५१ पंचायत समित्यापैकी ११६ महिला अध्यक्ष आहेत. ३३ जिल्हा परिषदेत एकुण १७ महिला अध्यक्ष आहेत.१९७० च्या नंतर राजकारणातील स्त्रियांचे नेतृत्व आणि कौतुक कमी झाले. महाराष्ट्रातील सहकारी चळवळी रुढ झाल्या.

सामाजिक चळवळी व राजकारण भिन्नता :

राजकारणातील महिलांचा सहभाग आपल्याला तिहेरी पध्दतीने मांडता येते. एक म्हणजे प्रत्यक्ष निवडणुकामध्ये उभे राहणे, निवडून घेणे, दुसरे राजकीय पक्षांमधील, राजकीय घडामोडींबद्दल त्यांचा सहभाग आणि तिसरे म्हणजे प्रत्यक्ष मतदानातील सहभागी भागीदारी आहे. गेल्या काही वर्षात अनेक सामाजिक संघटनांनी राजकारणातील महिलांचा सहभाग संख्यात्मक तसेच गुणात्मक वाढण्यासाठी प्रयत्न केलेले आहे. महिला मतदारामध्ये जाणीवजागृती वाढली आहे. सर्व क्षेत्रात सहजपणे वावरणारी स्त्री-राजकारण-निवडणुका हे माझे क्षेत्र नाही या मानसिकतेतून बाहेर पडली आहे. ती अधिक सजग झाली आहे. स्वतःचे निर्णय घेण्याची क्षमता वाढली आहे. लोकशाहीला अधिक समृद्ध आणि परिपक्व करण्याच्या दृष्टीने प्रयत्न करीत आहे.

राजकारणात पैसा आणि गुंडागर्दी वाढल्यामुळे सहकारी साखर कारखाने महाराष्ट्रातील राजकीय सत्तेचे आधार झाल्यामुळे स्त्रियांच्या सहभागाला मर्यादा येऊ लागल. राज्यपातळीवर सहकारी, कामगार चळवळी, शेतकरी चळवळी, संरक्षण, परराष्ट्र व्यवहार पुस्तकघान क्षेत्रे मानली जाऊ लागली. स्त्रियांच्या राजकारणातील सहभाग स्त्री प्रश्नापुरता कमीत झाला.

सामाजिक चळवळी व राजकारण हळुहळु वेगळे पडत गेले. महाराष्ट्रातील १९८०-९० दशकात राजकारणाची दिशा बदलली. शेती, गिरणी, कामगार, विकास, दळणवळण, वेगळा विदर्भ, बेडगाव हे ठोस उत्तर नसणारे प्रश्न निवडणुकीच्या काळात मांडले जाऊ लागले. या प्रश्नांच्या बुरख्याआड जाती-धर्माचे प्रश्न पुढे आले. या राजकीय बदलाच्या

काळात स्त्रियांच्या प्रश्नाला, मताला व भूमिकेला स्थान नव्हते. पुढे महाराष्ट्राच्या राजकारणात पंचायत राजव्यवस्थेसाठी निव्वयांसाठी ५० टक्के आरक्षण लागू झाले. ग्रामीण व शहरी भागातील राजकारणाचा चेहरा-मोहरा बदलला.

महाराष्ट्रातील वर्तमानकालीन स्त्री नेतृत्व :

सध्याच्या महाराष्ट्रात तरुण स्त्री नेतृत्व पुढे आले. सुप्रिया सुळे, पंकजा मुंडे, पूनम महाजन, हीना गावीत, रसा वडमे, भावना गवळी, प्रीतम मुंडे, प्रिया दत्त, प्रणिती शिंदे आहेत. परंतु त्यांची राजकारणातील ओढख मर्यादित आहे. त्याचबरोबर रजनीताई पाटील, अनिता चव्हाण, डॉ. निलम गोरे, प्रा. फौजिया खान, विमल मुंदडा, मुजिना मोराडे, मीरा मेने, सुर्यकांता पाटील, यशोमती ठाकूर, नवनीत राणा, पुष्पा आत्राम यातील बऱ्याच स्त्रियांची ओढख पद, पक्ष आणि घराण्यापुरतीच आहे. एक स्वतंत्र स्त्री म्हणून ओढख तयार झाली नाही. निवडणुकीत मिळविलेले पक्ष हीच त्यांची ओढख आहे. सक्षम नेतृत्व देण्याची क्षमता अशी ओढख आहे. सक्षम नेतृत्व देण्याची क्षमता अशी ओढख तयार व्हायची आहे.

महाराष्ट्रातील राजकीय क्षेत्रातील महिलांच्या सहभागाचा विचार केल्यास महिलांचे प्रमाण दिवसेंदिवस वाढत आहे. सध्या डॉ. शोभा बच्छाव, रंजना कुल, कमल ढोले पाटील, शोभा फडणवीस, रेखा खेडकर या घडाईने काम करीत आहेत. राजकारणासारख्या डावपेचाच्या क्षेत्रात यशस्वीपणे वाटचाल करीत आहे. त्यांनी आपल्या कर्तुत्वाने महाराष्ट्राच्या राजकारणात एक वेगळे स्थान प्राप्त केले आहे.

निष्कर्ष :

१. देशाच्या व राज्याच्या राजकारणात महिलांचा सहभाग वाढला आहे.
२. महाराष्ट्राच्या राजकारणात महिला प्रस्थापित राजकीय नेत्यांच्या वारसदार आहेत.
३. सर्वसामान्य महिला नेतृत्व पुढे आले नाही.
४. सर्वसामान्य महिलांचा राजकीय सहभाग वाढविणे गरजेचे आहे.
५. देशाच्या प्रगतीसाठी महिला सक्षम झाला पाहिजे यासाठी प्रयत्न करणे आवश्यक आहे.
६. महिलांना राजकीय सबलीकरणकारिता जनजागृती कायदे, प्रसारमाध्यमांद्वारे जागृती, कायद्यांद्वारे संरक्षण व विकास करणे गरजेचे आहे.
७. ग्रामीण भागातील सर्वांगीण सदस्यांची सोडवणुक महिलांच्या नेतृत्वामुळे शक्य झाली आहे.

सारांश :

आधीच्या काळातील स्त्री नेतृत्व समाजकारणाकडून राजकारणाकडे तर आताचे स्त्री नेतृत्व राजकीय लाभ मिळविण्यासाठी समाजकारण करते. त्यामुळे त्यांचा प्रवास सोयीस्कररित्या राजकारणातून समाजकारणाकडे जाताना दिसत आहे. पुर्वीच्या स्त्री नेतृत्वाने विचारप्रणाली, तत्व, धारणा यांच्या आधारावर राजकारणात प्रवेश केला तर आधुनिक नेतृत्वासाठी पक्षप्रणाली हीच विचारप्रणाली आहे आणि पक्षाची उद्दिष्टे साध्य करणे हाच त्यांच्या राजकारणाचा हेतू दिसतो. परिणामी समाजाचा विचार हा दुय्यम ठरतो. वेगवेगळ्या पातळीवर काम करीत असतांना स्वतंत्र अस्तित्त्व निर्माण करण्यापेक्षा केंद्रामध्ये संसद सदस्य म्हणून किंवा महिला विकास, बालकल्याण असे खाते मिळविणे हेच उद्दिष्ट्ये आहे. निवडणुकीतील यशामुळे प्रसिध्दी मिळालेल्या या स्त्रिया राजकारणातील पद आणि त्यांच्या घराण्याची किंवा पक्षाची मत्ता नेली तर कदाचित विस्मरणाच्या पडद्याआड जातील हाच खरा धोका आहे.

संदर्भ ग्रंथ :

१. माधवी, कवी : महिला कल्याण आणि विकास, विद्या प्रकाशन, नागपूर २००८.
२. भागवत विद्युत : स्त्री प्रश्नांची वाटचाल, प्रतिभा प्रकाशन, पुणे ३०.
३. रानडे, प्रतिभा : एकोणिसाव्या शतकातील स्त्री प्रश्नांची धर्मा, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे २००५.
४. मुळे, अंजली, गिताली वि. म. : स्त्री चळवळ आणि राजकारण, समतेसाठी सत्तासंधर्ष, लोकवाङ्मय गृह मुंबई.
५. गोहे, निलीमा : समाज आणि महिला, पद्मगंधा प्रकाशन पुणे.
६. देवळाणकर, शैलेन्द्र : समकालीन जागतिक राजकारण, विद्या बुक्स पब्लीकेशन, औरंगाबाद, तिसरी आवृत्ती, २०११.
७. पळसुले, वैभव : २०१६ स्त्री नेतृत्वाच्या बदलत्या दिशा, चतुरंग (लोकसत्ता), २६ ऑक्टो. २०१६.
८. बडे, विलास : महिला राज, दैनिक लोकसत्ता, १६ मार्च २०१०.



तुमच्या **Ph.D. प्रबंधाचे**  
पुस्तकात रूपांतर करून मिळेल,  
व ते **जगभर पोहोचेल...**

More Details - 9595560278,



**THESIS**  
**DISSERTATION**  
**PROJECT**  
**CONVERT**  
**INTO**  
**BOOK**



Scientific Journal Impact Factor

## CERTIFICATE OF INDEXING (SJIF 2020)

This certificate is awarded to

**Bahujan Aadhar**  
(ISSN: 2278-9308)

The Journal has been positively evaluated in the SJIF Journals Master List evaluation process  
SJIF 2020 = 7.675

  
Principal

Narayanrao Rani Mahavidyalaya  
Badvera

SJIF (A division of InnoSpace)

 InnoSpace International  
SJIFactor Project Manager  
International Journals Services  
INNO SPACE INTERNATIONAL

**Aadhar PUBLICATIONS**

New Hanuman Nagar, In Front Of

Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati ( M.S ) India Pin- 444604

Mob-- 9595560278, Email: aadharpublication@gmail.com

For Details [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

Price:Rs.500/

**VIDYAWARTA®**

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Special Issue- February- 2020  
(Vol- 05)



Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne  
Smruti Arogya and Shikshan Prasarak Mandal's

**SAHAKAR MAHARSHI  
LATE BHASKARRAO SHINGE  
ARTS COLLEGE,  
KHAMGAON, DIST.BULDHANA (M.S.)**

(Affiliated to Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati.)



*Anil*

Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera



◆ Organizes ◆

One Day Inter Disciplinary National Conference on  
**HUMANITIES, CULTURE AND SOCIETY**



MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318



Special Issue-05, February 2020

Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne  
Smruti Arogya And Shikshan Prasarak Mandal's  
**Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College,**  
Khamgaon, Dist.Buldhana

**Organizes**

One Day Interdisciplinary National Conference On  
**Humanities, Culture And Society**

**Editor**

**Dr. Babu g. Gholap**

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)



"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana  
Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At Post.  
Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Babu Ganpat.



Reg.No U74120 MH2013 PTC 251205  
**Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.**

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed  
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695.09650203295  
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / [www.vidyawarta.com](http://www.vidyawarta.com)

- 14) Culture and Language: Implications for Second Language Learning  
Dr. Pravin R. Waghmare, Akola || 60
- 15) Voice of the Subaltern in Literature  
Rahul P Ghuge, Akola || 65
- 16) Humanism In Tagore's Literary Work  
Rupesh Prakash Rede, Wardha || 67
- 17) Traumatic Impact of Social Turmoil of the Late 1960 on Black Community ...  
Shyam M. Gedam, Amravati || 69
- 18) Agrarian Crisis In Maharashtra And Its Social Effect  
Dr. Chetana Vishwanathrao Donglikar, Beed || 73
- 19) Mahesh Dattani as a Social Critic with Reference to Play 'Seven Steps ...  
Dimple D. Mapari, Akola || 77
- 20) Subaltern Historiography in Indian Context  
Dr. Ashwinkumar Rathod, Buldhana || 80
- 21) Spiritual Humanism of Tagore: An Influence of Upanishadas  
Dr. Jagruti S. Vyas, Amravati || 84
- 22) Knowledge Management System In College Library  
Dr. V. P. Ubhale, Wanoja || 88
- 23) Knowledge Management in Academic Libraries  
Pravin Anantrao Joshi, Buldana || 93
- 24) Mahasweta Devi's Draupadi As A Symbol Of Subaltern Aggression  
Shrikant Govindsingh Thakur, Ujjain || 97
- 25) अनुसूचित जातीच्या महिला व मानवाधिकार  
डॉ. दिपक राधोजी दामोदर, वाशीम || 101
- 26) राजा राममोहन रॉय यांचे सामाजिक चळवळीतील कार्य  
डॉ. मंजुषा ह. धापुडकर, अमरावती || 103
- 27) ब्रिटिशांचे आर्थिक धोरण व त्याचा भारतावर ज्ञानेतर प्रभाव : एक अध्ययन  
प्रा. डॉ. संतोष बनसोड, अमरावती || 105



## ब्रिटिशांचे आर्थिक धोरण व त्याचा भारतावर झालेला प्रभाव : एक अध्ययन

प्रा. डॉ. संतोष बनसोड  
विभाग प्रमुख, इतिहास विभाग,  
श्री. नारायणराव राणा महाविद्यालय,  
बडनेरा (रेल्वे), अमरावती.

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी सरकारच्या काळी आर्थिक क्षेत्रात व व्यापार क्षेत्रातील अनिबंध व्यापाराच्या धोरणाने भारतीय उद्योगधंद्याचा नायनाट झाला व औद्योगिक भांडवलशाहीचे वित्तीय भांडवलशाहीत जे रूपांतर झाले आणि ब्रिटिशांनी भारताचे केलेले अमानुष आर्थिक शोषण व यामुळे भारताची डासळलेली अर्थव्यवस्था व त्याचा आधुनिक भारतावर झालेला प्रभाव याचे विश्लेषणात्मक अध्ययन करणे प्रस्तुत शोध निबंधाचा मुळ उद्देश आहे.

संशोधनाची उद्दिष्टे खालीलप्रमाणे आहेत-

1. भारतातील आधुनिक साम्राज्यवादाचे स्वरूपाचे अध्ययन करणे.
2. आधुनिक काळातील भारतातील साम्राज्यशाहीच्या गतिमान कारणांचे विश्लेषण करणे.
3. औद्योगिक भांडवलशाहीचे वित्तीय भांडवलशाहीत झालेले रूपांतर, त्याची जडणघडण व तिचे परिणाम समजावून घेणे.
4. ब्रिटिशांनी भारताचे केलेले आर्थिक शोषण व त्याचा भारतीय बाजार अर्थव्यवस्थेवर झालेल्या परिणामांचे विश्लेषण करणे.
5. अनिबंध व्यापार व औद्योगिक भांडवलशाही ह्यांच्या शोषणाचा आधुनिक भारतावर झालेल्या परिणामांचे विश्लेषण करणे.

ज्ञानन आणि शोषण हे सहप्रवासी असतात.

लॉर्ड कर्झन, १९०५

भारताची एकोणिसाव्या शतकात स्पष्टपणे औद्योगिक भांडवलाच्या साहाय्याने जे शोषण केले जात होते, त्यात जुन्या प्रत्यक्ष लुटमारीच्या मार्गांचा समावेश होताच, फक्त ते अधिक

प्रभावो करण्यात येऊन त्यांचे रूपांतर करण्यात आले. सरकारी अधिकारी जिला देणगी म्हणून म्हणत, तिच्या स्थाने लाखों रुपये भारतातून इंग्लंडला पाठवले जात होते व कधी जिल्हा घरेचा खर्च (Home Charge) म्हणून नाव देत तर कधी खासगी शिल्पक म्हणून ती पाठवली जाई व तिच्या मोबदल्यात इंग्लंडमधून भारतात काहीच येत नसे. हा कार्यक्रम एकोणिसाव्या शतकात सातत्याने व्यापाराबरोबर चालू होता, विसाव्या शतकात व्यापार थोडा कमी झाला होता तरी लुटीची गती वाढली होती.

१८४८ साली पश्चिम व पूर्व इंडिजमधील साखर व कॉफी ह्यांच्या लागवडीसंबंधात हाऊस ऑफ कॉमन्सने नेमलेल्या सिलेक्ट कमिटीसमोर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीचे एक डायरेक्टर कर्नल साइवस ह्यांनी खरील देणगी हा दरमाल एवढेस लाख पौंड असते, असे सांगितले, आयातीपेक्षा निर्यात जास्त असल्याकारणानेच भारत एवढी देणगीची रक्कम देऊ शकला. त्याचप्रमाणे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीचा एक व्यापारी एन. अलेक्झांडर याने सिलेक्ट कमिटीला असे निवेदन केले की, इ.स. १८४७ पर्यंत भारताची आयात साठ लाख पौंडांची होती, तर निर्यात नव्वद लाख पौंडांची होती. ह्या दोहोरील फरक म्हणजे जवळजवळ चाळीस लाख पौंड देणगीच्या स्थाने कंपनीने भारतातून आणले.

१८५१ ते १९०१ ह्या काळात कंपनीच्या अधिकार्यांनी खासगी रीतीने इंग्लंडला पाठविलेले पैसे सोडून, घरेचा खर्च म्हणजेच इंग्लंडचा खर्च म्हणून जे पैसे पाठविले ते २.५ दशलक्ष पौंडांवरून १७.३ दशलक्ष पौंडांवर गेले होते, म्हणजेच सातपट वाढले होते त्यापैकी दोन दशलक्ष पौंड माल खरेदीच्या नावाने दाखवले होते १९१३ ते १९१४ च्या सुमारास ही रक्कम १९.४ दशलक्ष पौंडांवर पोहोचली होती. त्यापैकी फक्त १.५ दशलक्ष पौंड माल खरेदीकरिता दाखवले होते. १९३३-३४ मध्ये सरकारी हिशोबात इंग्लंडमधील खर्च म्हणून २७.५ दशलक्ष पौंड दाखवण्यात आले होते. त्यापैकी १.५ दशलक्ष पौंड माल खरेदीसाठी होते. रूपाच्या हुंड्याचढीन झालेला फरक आणि भारतातील वस्तूच्या किमतीत झालेला उतार ह्यांचा समन्वय घातल्यावर भारतावर जो बोज पडला, तो १९१४ च्या किमतीत, तीस दशलक्ष पौंडांचा होता.

१८५१ ते १९०१ ह्या काळात भारताच्या निर्यातीतील वाढ तिप्पट झाली म्हणजेच ती ३.३ दशलक्षांवरून अकरा दशलक्ष पौंडांवर गेली. त्यात मालाच्या किमतीतील वाढ ७.२ दशलक्ष पौंडांवरून २७.४ दशलक्ष पौंड एवढी झाली. त्याच किमतीच्या शतकात ही वाढ फार मोठ्या प्रमाणात जाकदोने होऊ लागली. १९०१ ते १९१३-१४ ह्या काळात ही वाढ अकरा दशलक्ष पौंडांवरून १४.२ दशलक्ष

पौडांवर गेली. १९१३-१४ हे वर्ष नेहमीच्या मानाने उताराचे ठरले. लडाईपूवीच्या पाच वर्षांचा सर्वसाधारण आढावा घेतला तर वार्षिक जादा निर्यात २२.५ दशलक्ष पौडांचो दिसते. म्हणजेच त्या दहा वर्षांत १९०१ च्या पातळीच्या मानाने दुप्पट भरते.

१९३३-३४ ह्या सालात भारताच्या निर्यातीची वाढ ६९.७ दशलक्ष पौडांवर पोहोचली. ह्यांपैकी २६.८ दशलक्ष पौंड मालाच्या रूपाने आणि ४२.९ दशलक्ष पौंड पैशाच्या रूपाने पाठवले गेले. ही शेवटची प्रचंड रक्कम भारतातील सोन्याच्या रूपाने इंग्लंडमधील पौडाच्या किमतीतील स्थिरता सांभाळण्यासाठी नेण्यात आली. सोपी तुलना करायची तर १९३१-३२ ते १९३५-३६ हा काळ तुलनेसाठी घेऊ. ह्यावरून आयात-निर्यातीतील फरक ५९.२ दशलक्ष पौंड होतो. म्हणजे महायुद्धपूर्व काळातील (१९१०-१४) फरकाच्या तीनपट भरतो आणि १९०१ च्या मानाने पाचपट भरतो.

एकोणिसाव्या शतकाच्या मध्यापासून भारताचे इंग्लंडला दिलेल्या प्रत्यक्ष देणगीतील ही वाढ (ह्यांतून भारतीय निर्यात व आयात ह्यांच्या किमतीच्या पातळीतील फरकामुळे होणारी पिळवणूक सोडून) खाली तक्त्याच्या रूपात दिली आहे, त्यावरून आपल्याला चटकन दिसून येते की, इंग्लंडने आधुनिक काळात भारताच्या पिळवणुकीच्या कार्यक्रमात किती झपाटवाने प्रगती केली. एवढे असले तरी, इंग्लंडने एकूण लुटमार किती केली तिच्या एखाद्या भागापेक्षा अधिक भागाचा अंदाज येत नाही.

#### भारताकडून इंग्लंडने घेतलेल्या देणगीतील वाढ

(दशलक्ष पौडांत)

वर्ष Year	१८५९	१९०१	१९१३-१४	१९३३-३४
घरचा खर्च (Home Charge)	२.५	१७.३	१९.४	२७.५
भारतीय निर्यात वाढ (Excess of Indian Exports)	३.३	११.०	१४.२	६९.७

#### किंवा दर पाच वर्षांचे व्यापाराचे संबंध विचारात घेतल्यास

(दशलक्ष पौडांत)

पाच वर्षांचा काळ	१८५१-५५	१८९७-१९०१	१९०९-१० ते १९१३-१४	१९३१-३२ ते १९३५-३६
जादा निर्यात	४.३	१५.३	२२.५	५९.२

वरील तक्त्यावरून लुटीत पैशाच्या दृष्टीने किती वाढ झाली ह्याहीपेक्षा पिळवणुकीची घटती कमान सहज स्पष्ट दिसते. त्यावरून पिळवणुकीच्या पद्धतीतील व तिच्या गुणवत्तेतील फरक उघड होतो.

एकोणिसाव्या शतकाच्या उत्तरार्धात भारताने इंग्लंडला दिलेल्या देणगीत प्रचंड वाढ झाली आणि ह्या वाढीतूनच विसाव्या

शतकातील वाढीचा पाठपुरावा केला गेला, तथापि एकोणिसाव्या शतकातील खुल्या व्यापाराच्या तत्वाच्या गोंडस पांघरूणाखाली पिळवणुकीची ही नवीन तंत्रे दबा धरून बसली होती.

एकोणिसाव्या शतकातील खुल्या व्यापारो भांडवलवाद्यां गस्तेसाठी ब्रिटिशांच्या भारतातील धोरणाला नवीन बळण देणे भाग पडले.

पहिली गोष्ट म्हणजे, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी बंद करून कंपनी सरकारऐवजी, ब्रिटिश भांडवलदारांचे प्रतिनिधित्व करणाऱ्या ब्रिटिश सरकारचे शासन-यंत्र भारतात चालू करणे भाग पडले. १९३३ च्या चार्टर अॅक्टप्रमाणे हा बदल बऱ्याच प्रमाणात घडवून आणण्यात आला. तथापि त्याची अंमलबजावणी १८५८ मध्ये करण्यात आली. दुसरे असे की, वाणिज्यिक घुसवणुकीसाठी भारताचे मुक्त द्वार संपूर्णतया खुले करणे अगत्याचे होते. ह्यासाठी भारतात रेल्वेमार्गांचे जाळे तयार करणे जसरी होते. त्याचप्रमाणे रस्त्यांचो वाढ व ब्रिटिशांच्या राजवटीत ज्या पाटबंधान्यांकडे संपूर्णपणे दुर्लक्ष केले गेले होते त्यांची सुधारणा करणे, ह्या गोष्टी आवश्यक ठरल्या. त्याचप्रमाणे विद्युतप्रवाहावर चालणारी तारायंत्रे व एक पद्धतीच्या पोस्टाच्या व्यवस्थेची गरज होती. शासनाला लेखनिकांचो व दुय्यम दर्जाच्या अधिकाऱ्यांचो गरज भासणार होती म्हणून इंग्रजी पद्धतीचे शिक्षण देण्याची व्यवस्था करणे ओपानेच आले, पाश्चिमात्य धर्तीवर बँका उघडणेही भाग पडले.

खरोखर आशिया खंडातील मोठ्या सरकारला सार्वजनिक हिताच्या दृष्टीने ज्या सुधारणा करणे अत्यंत अगत्याचे होते त्यांची जवळजवळ शंभर वर्षे हेळसांड करण्यात आली होती, तथापि पिळवणुकीच्या तंत्राला त्या आवश्यक ठरल्याबरोबर त्यांची योजना करणे अटळ झाले. तरी सुद्धा ज्या सुधारणा करण्यास सुरुवात केली गेली होती, तीसुद्धा एकमार्ग व विषमतेत स्वल्पाची होती, परकीय घुसवणुकीला वाणिज्यिक व राजकीय दृष्टीने अत्यावश्यक एवढ्याच केताने त्या सुधारणा कार्यवाहीत आणल्या गेल्या आणि त्यासाठी सुद्धा लोकांवर जबरदस्त आर्थिक बोजा टाकण्यात आला.

१८५३ साली भारतीय रेल्वेसंबंधात लॉर्ड डलहौसी याने सादर केलेली टिप्पणी उद्बोधक आहे. तिच्या अनुरोधानेच भारतातील रेल्वेमार्गांच्या वाढीला उत्तेजन देण्यात आले. त्यात ब्रिटिशांच्या तयार मालासाठी भारताची प्रगत बाजारपेठ तयार करणे व ब्रिटनला कच्च्या मालाचा सातत्याने पुरवठा करणे शक्य व्हावे, हे व्यापारी उद्दिष्ट स्पष्ट करण्यात आले होते.

“ह्या सुधारणा करण्यात आल्या तर भारताचा आर्थिक व व्यापारो दृष्टीने एवढा प्रचंड फायदा होईल की, त्याची मला कल्पनाच



करता येत नाही. आज भारत जो सर्वसाधारण कापूस तयार करून इंग्लंडला पुरवतो, त्याची ब्रिटिश व्यापारी वाहवा करतात, तथापि भारतीय कापसाला उत्कृष्ट बंदरे व वाहतुकीची साधने उपलब्ध करून देण्यात आली तर प्रचंड प्रमाणात व उत्कृष्ट दर्जाचा कापूस भारत सहज निर्माण करू शकेल. व्यापारासाठी आवश्यक असलेली प्रत्येक गरज भागवण्यात आली व त्यामुळे भारतात दूरवर पसरलेल्या बाजारपेठेतून सुद्धा युरोपमध्ये तयार झालेल्या मालाला प्रचंड प्रमाणात मागणी येऊ लागली. जगाच्या ह्या भागात नवीन नवीन बाजारपेठ आपणासटे उघडत आहेत व त्यांचा फायदा किती होईल याची शहाण्या लोकांना सुद्धा अंधुक कल्पना करता येणार नाही, मग भविष्यकाळत त्याची किती वाढ होईल, ते कल्पनेनेच टावलेले बरे."

तथापि ह्या सुधारणा करण्याच्या कार्यक्रमाचा-विशेषतः रेल्वेमार्गाची वाढ करण्याच्या धोरणाचा- मुख्य हेतू म्हणजे भारतात औद्योगिक भांडवलाची वाणिज्यिक क्षेत्रात घुसवणूक करता यावी, हा होता. त्याचप्रमाणे लोखंड, पोलाद व यांत्रिक मालाला मोठी बाजारपेठ उपलब्ध करून घ्यावी असा त्यात बेट होता, त्यातून एक नवीन योजना निर्माण झाली ती म्हणजे, भारतात ब्रिटिश भांडवलाच्या गुंतवणुकीचा विकास, ही होय.

साम्राज्यशाहीच्या विकासपद्धतीत त्या धोरणाला भांडवली-निर्यात असे म्हणतात. तथापि भारताच्या बाबतीत ह्या घटनेला भांडवली-निर्यात म्हणून संबोधने हा शब्दचल टरेल. कारण ब्रिटनने प्रत्यक्षात जे भांडवल निर्यात केले ते अगदीच थोडे होते. १९१४ पर्यंतच्या काळात फक्त १८५६-६२ हा सात वर्षांचाच काळ असा गेला की नेहमीच्या जादा निर्यातीची जागा जादा आयातीने घेतली व त्यामुळे ब्रिटनला २२.५ दशलक्ष पौंडांचे भांडवल सात वर्षांत निर्यात करावे लागले. १९१४ पर्यंत ब्रिटनने भारतात केलेल्या एकूण ५०० दशलक्ष पौंडांच्या भांडवली गुंतवणुकीच्या मानाने वरील भांडवल-निर्यात फार मोठी नव्हती. वरील काळात जे ब्रिटिश भांडवल कितीतरी पटीने जास्त होते. ह्या कार्यक्रमात ब्रिटिश भांडवल म्हणून ज्या पेशाची भारतात गुंतवणूक करण्यात आली ते भांडवल म्हणजे ब्रिटिशांनी भारतीयांची केलेली लूट होती, तिला ब्रिटिश भांडवल (British Capital) असे नाव देऊन त्याचे कर्जात स्मांतर करण्यात आले व कर्जाचे व्याज व लाभांश (डिविडेंड) म्हणून दरवर्षी देणे सुरू झाले. भारतात गुंतवलेल्या ब्रिटिश भांडवलाला लोक ऋण म्हणून समजले जाई. ब्रिटिश अल्पाधिकाशा (ऑलिगाकी) भारतीयांना लागलेला तो गळफासच होता. १८५८ साली ब्रिटिश सरकारने जेव्हा भारतीय शासनव्यवस्था आपल्या हातात घेतली तेव्हा त्यांनी

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीकडून सत्तर दशलक्ष पौंडांचे कर्जही आपल्याकडे घेतले. भारतीयांच्या मते ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीने देणगीच्या नावाखाली १५० दशलक्ष पौंडांची लूट नेली होती. ह्याशिवाय भारताबाहेर अफगाणिस्तान, चीन वगैरे देशांवरोबर ब्रिटनने केलेल्या युद्धांचा खर्च म्हणून जा पैसा नेला. तो निराळख; ह्या सर्व देवघेवांचा साकल्याने विचार करता, ब्रिटन, भारताचे कर्ज देणे लागत होते. तथापि त्यामुळे कर्ज अंगावर घेऊन तो आकडा फुगवण्यास ब्रिटनला काहीच अडचण नव्हती.

ब्रिटिशांच्या शासनात हे लोकऋण (पब्लिकडेब्ट) अठरा वर्षांत सत्तर दशलक्ष पौंडांचे एकशेचाळीस दशलक्ष पौंडांवर गेले म्हणजेच दुप्पट झाले. १९०० सालापर्यंत ते २२४ दशलक्ष पौंडांवर गेले. १९१३ मध्ये तो आकडा २७४ दशलक्ष पौंड झाला. द्वितीय महायुद्धाच्या वेळी १९३९ मध्ये ते ११.७९० दशलक्ष रुपयांवर गेले. अशा रीतीने ब्रिटिशांच्या प्रत्यक्ष शासनाच्या ७५ वर्षांच्या अमदानीत, लोकऋण वारापटीपेक्षा जास्त वाढले.

इंग्लंडमधोल पौंडाच्या स्थाने ह्या लोकऋणात झालेली वाढ भयंकर होती. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीच्या अडवेंगिस म्हणजे १८५६ मध्ये इंग्लंडमधोल कर्ज चार दशलक्ष पौंडाखाली होते. १८६० च्या सुमारास हा आकडा तीस दशलक्ष पौंडांवर गेला. १८८० मध्ये तो ७१ दशलक्ष पौंड झाला. १९०० मध्ये १३३ दशलक्ष पौंड, १९१३ मध्ये १७७ दशलक्ष पौंड आणि १९३९ मध्ये ३५२.८ दशलक्ष पौंड झाला.

ह्या लोकऋणाची मूळ मुक्कान, लढायांसाठी झालेल्या व इतर खर्चातून झाली आणि त्यानंतर रेल्वेमार्गांची उभारणी व सामाजिक बांधकामे (PWD) ह्यांवर सरकारने जो खर्च केला, त्याची भर पडली. मुक्कानांचे सत्तर दशलक्ष पौंडांचे लोकऋण लॉर्ड वेलस्ली ह्याने केलेल्या लढाया, पौंडने अफगाण युद्ध, शिखांबरोबरील युद्धे व १८५७ चा उठाव दडल्यासाठी झालेला खर्च, ह्यासाठी ब्रिटिश सरकारने उभे केले. त्यानंतरचे सत्तर दशलक्ष पौंडांचे लोकऋण, जे ब्रिटिशांनी अठरा वर्षांत दुप्पट फुगावले, त्यापैकी फक्त चोवीस दशलक्ष पौंड सरकारने रेल्वेमार्गांची उभारणी व पाटबंधान्यांची कामे यांवर खर्च केले होते. बाकीचे सर्व लोकऋण ब्रिटिशांनी जे निर्माण केले त्याचा खराखर भारताचे काडोएवढाही संबंध नव्हता, कारण ह्यात असले अग्रस्मृत खर्च दाखविण्यात आले होते की, त्यात भारताचा संबंधही नव्हता. उदाहरणार्थ, लंडनमध्ये तुर्कस्तानच्या मुलतानच्या स्वागतासाठी केलेला खर्च, चीन व पर्शिया येथे स्थापन केलेल्या ब्रिटिश चाकलातीसाठी झालेला खर्च, ऑक्सोनिपाबरोबराल झालेला युद्धाचा खर्च किंवा भूमध्य समुद्रातील



नाविक दलावर झालेल्या खर्चापैकी काही भाग वगैरे भारतावर अशा प्रकारचे लोक-ऋण सोयीस्करपणे लादण्यात यावे हो गोष्ट लांछनास्पद आहे आणि अशा किती गोष्टी नमूद कराव्या? भारतातील उद्योगांचा खर्च; कंपनीचे हक्क ब्रिटिश पार्लमेंटकडे सुपूर्द करण्यात आले, त्यासाठी झालेला खर्च; चीन आणि अंबोर्सिनिया ह्यांच्याबरोबर एकाच वेळी केलेल्या युद्धांचा खर्च; ज्याचा भारताशी दुरान्वयेही संबंध नाही असा लंडनमध्ये केलेला खर्च, उदा. इंडिया ऑफिसमधील घरकामासाठी ठेवलेला बायकांचा खर्च किंवा जो लढाऊ जहाजे युद्धात भाग घेण्यासाठी पाठविली होती; पण ज्यांना भाग घ्यावा लागला नाही, अशा युद्धनौकांवर झालेला खर्च, किंवा ज्या भारतीय पलटणी युद्धावर पाठविण्यासाठी त्यांना सहा महिने प्रशिक्षण देण्यात आले त्यांचा खर्च. हे सर्व खर्च, ज्या भारताला प्रतिनिधित्वही नव्हते अशा भारताच्या नावावर लादण्यात आले. तुर्कस्तानच्या सुलतानाने १८६८ साली लंडनला सरकारी भेट दिली, त्याच्या सन्मानार्थ इंडिया ऑफिस (लंडन) येथे नृत्याचा कार्यक्रम सरकारी खर्चाने आयोजित केला होता, त्याचा खर्च भारताच्या नावेच दाखवण्यात आला. इलिंगमधील वेड्याच्या इस्मितव्यथा खर्च, ब्राँझबारच्या शिष्टमंडळाला दिलेल्या देणग्या, चीन व पर्शिया येथील ब्रिटिश वकिलातीचा खर्च, भूमध्य समुद्रावरील नाविक दलाच्या कायम खर्चापैकी काही भाग, आणि इंग्लंड व भारत ह्यांमध्ये टाकण्यात आलेला टेलिग्राफ लाइनचा संपूर्ण खर्च, ह्या सर्व खर्चांचा बोजा भारतीय खजिन्यावर १८७० पूर्वी टाकण्यात आला होता. ब्रिटिश सरकारने भारताचे शासनयंत्र आपल्या ताब्यात घेतल्यापासून पहिल्या तेरा वर्षांत भारतीय महसूल, वर्षाला ३३ दशलक्ष पाँडवस्तू ५२ दशलक्ष पाँडवर गेला, ह्यांत आश्चर्य करण्यासारखे काहीच नाही आणि १८६६ ते १८७० मधील तुटीचा आकडा ११.५ दशलक्ष पाँडवर गेला. १८५७ ते १८६० ह्या दरम्यान भारताला ब्रिटनने कर्ज म्हणून ३०,०००,००० दशलक्ष पाँडचा आकडा दाखवण्यात आला, आणि हा कर्जाचा बोजा हळूहळू वाढत गेला. त्याचबरोबर भारतीय हिशोबात कायंबाजपणे हातचलाखी करून काटकर व वित्तीय कौशल्य दाखवल्याबद्दल ब्रिटिश मत्सद्यांची वाहवा झाली.

रेल्वेमार्गांची वाढ काही सरकारी खर्चाने तर काही खासगी कंपन्यांच्या सहकार्याने करण्यात आली. पुढे पुढे तर ती संपूर्ण सरकारी पेशाने करण्यात आली. ह्यामुळे लोक-ऋण प्रचंड प्रमाणात वाढले. रेल्वेच्या विकासासाठी अशी योजना आखली होती की, ब्रिटिश भांडवलदार जे भांडवल ह्या कामात गुंतवतील त्यांना त्यावर पाच टक्के व्याज मिळवे. ह्याचा परिणाम असा झाला की, पेशाची उधळपट्टी करण्यात आली. १८७२ पर्यंत जो पहिला सहा हजार मैलांचा रेल्वेमार्ग तयार करण्यात आला त्याला शंभर दशलक्ष पाँड

खर्च झाला ह्याचाच अर्थ दर मैलाला सोळा हजार पाँड खर्च आला. १८७२ साली भारतीय वित्तव्यवस्थेवर (इंडियन फायनान्सवर) विचार करण्यासाठी पार्लमेंटची जी चौकशी समिती नेमण्यात आली होती, तिला रेल्वेच्या माजी लेखापरीक्षकाने (ऑर्डिटरने) असे स्पष्टपणे सांगितले की, "आर्थिक गुंतवणूक करणाऱ्या इंग्लिश भांडवलदारांवर कडक नियंत्रणे घातली जाणार नाहीत, असे सरकार व भांडवलदार ह्यांच्यामध्ये ठरले होते. हिशोबाचे कागद तयार होईपर्यंत, किती पैसा खर्च झाला, ह्या गोष्टीची कोणालाही कल्पना नव्हती." ह्याच चौकशी समितेला एव्यू. एन. मॅसे ह्या भारताच्या माजी अर्थमंत्रीने सांगितले की, "प्रचंड रकमांची उधळपट्टी करण्यात आली. कंत्राटदारांला काटकर करण्याची इच्छाच नव्हती. सर्व पैसा इंग्लिश भांडवलदारांकडून येत होता आणि जांपर्यंत त्याला, त्याने पुरविलेल्या भांडवलावर पाच टक्के व्याज देण्याचे सरकारने आश्वासन दिले होते, तोपर्यंत, ह्याचे भांडवल हुगळी नदीत फेकले जात होते, किंवा त्याच्या साहाय्याने बांधकाम केले जात होते, ह्या गोष्टीची त्याला काहीच पर्वा नव्हती. मला वाटते, आजपर्यंत कधीही झाली नसेल अशी उधळपट्टी करून ही कामे केली गेली."

एकौणिसाव्या शतकाच्या अखेरीपर्यंत रेल्वेवर २२६ दशलक्ष पाँड खर्च करण्यात आले त्यामुळे फायदा होण्याऐवजी चाळीस दशलक्ष पाँडचे नुकसान झाले आणि ते भारतीय अर्थसंकल्पावर (बजेटवर) पडले. विसावे शतक सुरू झाल्यावर रेल्वेमधून फायदा काढण्यात आला आणि १९४३-४४ पर्यंत, पाँडच्या रूपात रेल्वेला असलेले कर्ज जेव्हा इंग्लंडला परत करण्याचे ठरले, तेव्हा ते दरवर्षी दहा दशलक्ष पाँड ह्या प्रमाणात परत केले गेले. जेव्हा रेल्वे, व चहा, कॉफी आणि रबर यांचे मळे सुरू झाले तेव्हापासून म्हणजे एकौणिसाव्या शतकाच्या उत्तरार्धात ब्रिटिश भांडवल भारतात झपाट्याने येऊ लागले. ह्याच सुमारास, ब्रिटिश इस्ट इंडिया कंपनीचे प्रभुत्व संपुष्टात आल्यावर व बँकिंगवरील निबंध उठल्यावर, खासगी ब्रिटिश बँकांची भारतात प्रगती होऊ लागली. १८७६ च्या प्रेसिडेन्सी बँक्स अॅक्टमुळे तीनही प्रेसिडेन्सी बँकांना सरकारी संरक्षण मिळून त्यांच्या व्यवहारांना व्यवस्थितपणा आणण्यात आला व पुढे १९२१ मध्ये इंपिरियल बँक ऑफ इंडिया ह्या प्रचंड बँकेत वरील तीनही बँकांचे विलीनीकरण करण्यात आले. भारताबाहेर प्रमुख केंद्र असणाऱ्या घलनविनिमय बँकांचा (एक्सचेंज बँका) व्यवहार वाढीस लागला. चाटर्ड बँक ऑफ इंडिया, ऑस्ट्रेलिया आणि चीन ह्यांना १८५३ साली सनद (चार्टर) मिळाली. ह्याच साली मर्कंटायल बँक ऑफ इंडियाला सनद मिळाली. नेशनल बँक ऑफ इंडिया व होगकॉग अँड शॉपथय बँकिंग कॉर्पोरेशन ह्यांनी भारतात बँकिंगचे व्यवहार वाढवले. त्यांनी प्रेसिडेन्सी बँकांशी सहकार्य करून ब्रिटिश संरक्षणाखाली वित्तव्यवस्था (फायनान्स),



नाविक दलावर झालेल्या खर्चापैकी काही भाग वगैरे भारतावर अशा प्रकारचे लोक-ऋण सोयीस्करपणे लादण्यात यावे हा गोष्ट लांडनास्पद आहे आणि अशा किती गोष्टी नमूद कराव्या? भारतातील उद्योगाचा खर्च; कंपनीचे हक्क ब्रिटिश पार्लमेंटकडे सुपूर्द करण्यात आले, त्यासाठी झालेला खर्च; चीन आणि अंबोर्सिनिया ह्यांच्याबरोबर एकाच वेळी केलेल्या युद्धांचा खर्च; ज्याचा भारताशी दुरान्वयहो संबंध नाही असा लंडनमध्ये केलेला खर्च; उदा. इंडिया ऑफिसमधील घरकामासाठी ठेवलेला बायकांचा खर्च किंवा जो लडाऊ जहाजे युद्धात भाग घेण्यासाठी पाठविलेले होते; पण ज्यांना भाग घ्यावा लागला नाही, अशा युद्धनौकांवर झालेला खर्च, किंवा ज्या भारतीय पलटणी युद्धावर पाठवण्यासाठी त्यांना सहा महिने प्रशिक्षण देण्यात आले त्यांचा खर्च. हे सर्व खर्च, ज्या भारताला प्रतिनिधित्वही नव्हते अशा भारताच्या नावावर लादण्यात आले. तुर्कस्तानच्या सुलतानाने १८६८ साली लंडनला सरकारी भेट दिली, त्याच्या सन्मानार्थ इंडिया ऑफिस (लंडन) येथे नृत्याचा कार्यक्रम सरकारी खर्चाने आयोजित केला होता, त्याचा खर्च भारताच्या नावेच दाखवण्यात आला. इलिंगमधील वेडग्राच्या इरिस्पटव्हाचा खर्च, इंग्लिशारच्या शिष्टमंडळाकडे दिलेल्या देणगी, चीन व पर्शिया येथील ब्रिटिश वकिलातीचा खर्च, भूमध्य समुद्रावरील नाविक दलाच्या कायम खर्चापैकी काही भाग, आणि इंग्लंड व भारत ह्यांमध्ये टाकण्यात आलेला टेलिग्राफ लाइनचा संपूर्ण खर्च, ह्या सर्व खर्चांचा बोजा भारतीय खर्चान्यावर १८७० पूर्वी टाकण्यात आला होता. ब्रिटिश सरकारने भारताचे शासनयंत्र आपल्या ताब्यात घेतल्यापासून पहिल्या तेरा वर्षांत भारतीय महसूल, वर्षाला ३३ दशलक्ष पाँडांवरून ५२ दशलक्ष पाँडांवर गेला, ह्यांत आश्चर्य करण्यासारखे काहीच नाही आणि १८६६ ते १८७० मधील नुटीचा आकडा ११.५ दशलक्ष पाँडांवर गेला. १८५७ ते १८६० ह्या दरम्यान भारताला ब्रिटनने कर्ज म्हणून ३०,०००,००० दशलक्ष पाँडांचा आकडा दाखवण्यात आला, आणि हा कर्जाचा बोजा हळूहळू वाढत गेला, त्याचबरोबर भारतीय हिशोबात कावेबाजपणे हातचलाखी करून काटकसर व वित्तीय कौशल्य दाखवल्याबद्दल ब्रिटिश मत्सर्गांची वाहवा झाली.

रेल्वेमार्गांची वाढ काही सरकारी खर्चाने तर काही खासगी कंपन्यांच्या सहकार्याने करण्यात आली. पुढे पुढे तर ती संपूर्ण सरकारी पैशाने करण्यात आली. ह्यामुळे लोक-ऋण प्रचंड प्रमाणात वाढले. रेल्वेच्या विकासासाठी अशी योजना आणली होती की, ब्रिटिश भांडवलदार जे भांडवल ह्या कामात गुंतवतील त्यांना त्यावर पाच टक्के व्याज मिळवे. ह्याचा परिणाम असा झाला की, पेशाची उधळपट्टी करण्यात आली. १८७२ पर्यंत जो पहिला सहा हजार मैलांचा रेल्वेमार्ग तयार करण्यात आला त्याला शंभर दशलक्ष पाँडा

खर्च झाला ह्याचाच अर्थ दर मैलाला सोळा हजार पाँडा खर्च आला. १८७२ साली भारतीय वित्तव्यवस्थेवर (इंडियन फायनान्सवर) विचार करण्यासाठी पार्लमेंटची जी चौकशी समिती नेमण्यात आली होती, तिला रेल्वेच्या माजी लेखापरीक्षकाने (ऑडिटरने) असे स्पष्टपणे सांगितले की, "आर्थिक गुंतवणूक करणाऱ्या इंग्लिश भांडवलदारांवर कडक नियंत्रणे घातली जाणार नाहीत, असे सरकार व भांडवलदार ह्यांच्यामध्ये ठरले होते. हिशोबाचे कागद तयार होईपर्यंत, किती पैसा खर्च झाला, ह्या गोष्टीची कोणालाही कल्पना नव्हती." ह्याच चौकशी समितीला एक्यू एन. मॅसे ह्या भारताच्या माजी अर्थमंत्रीने सांगितले की, "प्रचंड रकमांची उधळपट्टी करण्यात आली. कंत्राटदारांना काटकसर करण्याची इच्छाच नव्हती. सर्व पैसा इंग्लिश भांडवलदारांकडून येत होता आणि जोपर्यंत त्याला, त्याने पुरविलेल्या भांडवलावर पाच टक्के व्याज देण्याचे सरकारने आश्वासन दिले होते, तोपर्यंत, ह्याचे भांडवल हुगळे नदीत फेकले जात होते, किंवा त्याच्या साहाय्याने बांधकाम केले जात होते, ह्या गोष्टीची त्याला काहीच पत्ता नव्हती, मला वाटते, आजपर्यंत कधीही झाली नसेल अशी उधळपट्टी करून ही कामे केली गेली."

एकोणिसाव्या शतकाच्या अखेरीपर्यंत रेल्वेवर २२६ दशलक्ष पाँडा खर्च करण्यात आले त्यामुळे फायदा होण्याऐवजी चाळीस दशलक्ष पाँडांचे नुकसान झाले आणि ते भारतीय अर्थसंकल्पावर (बजेटवर) पडले. विसावे शतक सुरू झाल्यावर रेल्वेमधून फायदा काढण्यात आला आणि १९४३-४४ पर्यंत, पाँडांच्या रूपात रेल्वेला असलेले कर्ज जेव्हा इंग्लंडला परत करण्याचे ठरले, तेव्हा ते दरवर्षी सहा दशलक्ष पाँडा ह्या प्रमाणात परत केले गेले, जेव्हा रेल्वे, व चहा, कॉफी आणि रबर यांचे मळे सुरू झाले तेव्हापासून म्हणजे एकोणिसाव्या शतकाच्या उत्तरार्धात ब्रिटिश भांडवल भारतात झपाट्याने येऊ लागले. ह्याच सुमारास, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीचे प्रभुत्व संपुष्टात आल्यावर व बँकिंगवरील निबंध उठल्यावर, खासगी ब्रिटिश बँकांची भारतात प्रगती होऊ लागली. १८७६ च्या प्रेसिडेन्सी बँक अॅक्टमुळे तीनही प्रेसिडेन्सी बँकांना सरकारी संरक्षण मिळून त्यांच्या व्यवहारांना व्यवस्थितपणा आणण्यात आला व पुढे १९२१ मध्ये 'इंपीरियल बँक ऑफ इंडिया' ह्या प्रचंड बँकेत वरील तीनही बँकांचे विलीनीकरण करण्यात आले. भारताबाहेर प्रमुख केंद्र असणाऱ्या चलनाविनियम बँकांचा (एक्सचेंज बँका) व्यवहार वाढीस लागला. चाटर्ड बँक ऑफ इंडिया, ऑस्ट्रेलिया आणि चीन ह्यांना १८५३ साली सनद (चार्टर) मिळाली. ह्याच साली मर्केटाईल बँक ऑफ इंडियाला सनद मिळाली. नॅशनल बँक ऑफ इंडिया व हौगकॉग अँड शॉपाय बँकिंग कॉर्पोरेशन ह्यांनी भारतात बँकिंगचे व्यवहार वाढवले. त्यांनी प्रेसिडेन्सी बँकांशी सहकार्य करून ब्रिटिश संरक्षणवादी वित्तव्यवस्था (फायनान्स),



वाणिज्य (कॉमर्स) आणि उद्योगधंदे ह्यांवर आपलो हुकुमत ठेवली. इंडियन जॉइंट स्टेट बँकेने वरील बँकांना मागे टाकण्याचा प्रयत्न केला तरीही तो यशस्वी झाला नाही. कारण ह्या परदेशी बँकांना काही खास सवलती होत्या. १९१३ च्या सुमारास प्रिंसिपॅन्सी बँक व एक्सचेंज बँक ह्या परकीय बँकांकडे एकूण बँकांच्या ठेवांच्या २/३ हिस्सा जमा झाला होता. याउलट इंडियन जॉइंट स्टेट्स बँकसकडे १/४ पेक्षाही कमी ठेवी होत्या.

१९९१ साली रॉयल स्टॅटिस्टिकल सोसायटीत सर जॉर्ज पेश ह्यांनी एक लिखाण (पेपर) वाचून दाखवले. त्यात त्याने भारत आणि सिलोन ह्या देशांत १९०९-१० सालांत ब्रिटिशांची भांडवली गुंतवणूक ३६५ दशलक्ष पाँड होती, असे म्हटले आहे. त्या गुंतवणुकीचे तपशीलवार स्वरूप खाली दिले आहे.

(भांडवली गुंतवणूक)	(दशलक्ष पाँडांत)
गव्हर्नमेंट अँड म्युनिसिपल	१८२.५
रेल्वेज	१३६.५
प्लेन्टेशन्स (टो, कॉफी, रबर) (मळे)	२४.२
ट्रेम व न (ट्रेम)	४.१
माइन्स (खाने)	३.५
बँका	३.४
ओईल (तेल)	३.२
कमीशन्स अँड इंडस्ट्रियल (वाणिज्यिक व औद्योगिक)	२.५
फर्निचर, वॉड अँड इनव्हेस्टमेंट (वित्तव्यवस्था, शेत व गुंतवणूक)	१.८
मिसलनिअस (संकोण)	३.३

वरील माहितीपूर्ण यादीवरून एवढे स्पष्ट होते की, ब्रिटिश भांडवलाच्या भारतातील गुंतवणुकीमुळे, भारतातील आधुनिक उद्योगधंद्यांचा विकास झाल्याचे दिसत नाही. १९१४ च्या महायुद्धापूर्वी भारतात ज्या ब्रिटिश भांडवलाची गुंतवणूक करण्यात आली, त्यापैकी ९७ टक्के सरकार, वाहतुकीची साधने, मळे आणि वित्तीय व्यवस्था ह्यांसाठी खर्च करण्यात आले.

ह्याचाच अर्थ भारतात वाणिज्यिक घुसवणुकीला पूरक अशा क्षेत्रात गुंतवण्यात आले. ह्या मार्गाने कच्च्या मालाचा पुरवठा करणारे एक प्रचंड साधन व तयार ब्रिटिश मालाला एक मोठी बाजारपेठ म्हणून भारताचा उपयोग व्हावा, हा त्यामागील हेतू होता. त्यात भारतातील उद्योगधंद्यांचा विकास व्हावा असा हेतू मुळीच नव्हता.

सर जॉर्ज पेश ह्याने केलेले विधान भीत भीत केलेले होते. त्याने काही सहज न कळणाऱ्या गोष्टी उजेडत आणल्या नव्हत्या. १९१४ पूर्वी भारतात इतर क्षेत्रांत झालेली ब्रिटिश भांडवली गुंतवणूक विचारात घेता एकूण भांडवलाचा आकडा ४५० दशलक्ष पाँडांपर्यंत

जातो. आणि इकोनॉमिस्टच्या म्हणण्याप्रमाणे तो आकडा ४७५ दशलक्ष पाँड झाला होता, असे दिसते.

आधुनिक भारतात बहुराष्ट्रीय कंपन्यांच्या माध्यमातून भारताचे आर्थिक शोषण दिसून येते. इतिहासाचा पुनरावृत्ती होऊ नये याची काळजी घेतली पाहिजे. तरच आर्थिक शोषणाला पायबंद घालता येईल.

उपरोक्त शोध निबंध वरील उद्दिष्टांचे पूर्ण करत

### Consolidated Bibliography :

१. "India Today". Rajani Pam Datt. Trans. Y. N. Devdhar (Indian Council of Historical Research, Delhi.) ISBN : ८१-८९७२४-००-२. Edition : First. २००६. Diamond Publication, Pune-४११०३०.

२. "Report Of The Indian Fiscal Commission" : १९२२, P. २०

३. "Minute On Railways". १८५३. Lord Dalhousie, Governor General of India. १८४८ to १८५६)

४. "The Migration of British Capital to १८५७". L. H. Jenks, P. २२३-२४

५. "Journal of The Royal Statistical Society". Vol. ७४, Part-I, January, १९११, P.१८६.

६. "India and The Gold Standard": १९११. H. E. Harvard.

७. Article Titled by the "Our Investment Abroad" Published in "The Economist", on February २०, १९०९.

८. "History of Modern India & Indian Culture", Chief Editor : J. K. Chopra Punjab University, Chandigarh, Edition : २००८, Unique Publishers. M-५१, Lajpat Nagar-II, New Delhi-११००२४. ISBN : ८१-८३५७-०६०-७

९. R. C. Dutt and Dadabhai Naoroji cited the "Drain of Wealth Theory". Naoroji brought it to light in his book "Poverty And Un-British Rule in India". R.C. Dutt blamed the British policies for "Economic History of India"

१०. "COLONIALISM AND INDIAN ECONOMY". In review, by Amiya Kumar Bagchi. Oxford University Press.



Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College, Khamgaon established in the year 2000, caters predominantly to students from rural areas around khamgaon. Accredited with C grade by NAAC in 2016, we realized the need to take up quality enhancement initiatives in all aspects of our institutional life. Committed to our vision for providing employability skills to students, the college has also started UGC approved vocational degree courses B.VOC affiliated to Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati. Besides UG & PG Course in Library Science, The college has recognized research centers in English & History.

  
  
  
Principal,  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera



**Publisher & Owner**  
Archana Rajendra Ghodke  
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.  
At Post Limbaganesh, Tq Dist Beed-431 126  
(Maharashtra) Mob.09850203295  
E-mail. vidyawarta@gmail.com  
www.vidyawarta.com



ISSN 2319 9318

Peer Reviewed Journal

ISSN 2319-8648

Impact Factor (SJIF)

Impact Factor - 7.139

# Current Global Reviewer

International Peer Reviewed Refereed Research Journal Registered & Recognized  
Higher Education For All Subjects & All Languages

## Changing Religious Movements in Pre-Medieval Indian History

17-18 January 2020

Special Issue - 101 Vol. II

Chief Editor  
Mr. Arun B. Godam

Guest Editors  
Dr. B. G. Gaikwad  
Principal  
Shivaji College, Hingoli (MS)

Co-Editor  
Dr. Balasaheb Shankarrao Kshirsagar  
Head, Department of History  
Shivaji College, Hingoli (MS)

Co-Editor  
Dr. Sandeep G. Londhe  
Department of History  
Shivaji College, Hingoli (MS)





Shri Shivaji Shikshan Prasarak Mandal, Hingoli

# SHIVAJI COLLEGE, HINGOLI - 431513 (MS)

NAAC Accredited with 'B' Grade

Affiliated to - Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded

Organized by - DEPARTMENT OF HISTORY

Sponsored by - ICSSR, New Delhi

## TWO DAY NATIONAL SEMINAR

CHANGING RELIGIOUS MOVEMENTS IN PRE-MEDIEVAL INDIAN HISTORY

*Certificate*

This is to certify that **Dr. Bansod Santosh** Narayanrao Rana College, Badnera has participated in Two Day National Seminar on **Changing Religious Movements in Pre-Medieval Indian History** organized by Department of History, Shivaji College, Hingoli Tq. Dist. Hingoli, Maharashtra, India on 17-18 January 2020. He presented research paper entitled **तथागत बुद्ध की सामाजिक क्रांती और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता : एक ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विश्लेषणात्मक अध्ययन**



Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera



*[Signature]*

Palasahab S. Kshirsagar

*[Signature]*

Dr. Sandeep G. Londhe  
Co-convenor

*[Signature]*

Dr. B. G. Gaikwad  
Principal

**CURRENT GLOBAL REVIEWER**  
Multidisciplinary International Research Journal  
**PEER REFREED & INDEXED JOURNAL**

**SPECIAL ISSUE - 101 Vol. II**

Title of the issue :

**Changing Religious Movements in  
Pre-Medieval Indian History**

**● SHAURYA PUBLICATION**

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 300/-

**PRINTED BY**

Shaurya Offset  
Old MIDC , kalamb Road, Latur

**EDITION :**

**17-18 Jan. 2020**

**PRICE : 300 /-**

● या अंकाचे सर्व अधिकार प्रकाशकांनी स्वतःकडे राखून ठेवलेले आहेत. लेखांचे प्रकाशन व पुनप्रकाशनाचे अधिकार प्रकाशक आणि संबंधित लेखकाधीन समान असून शोध निबंधातील मते ही संबंधित लेखाच्या लेखकांची वैयक्तिक मते आहेत त्या मताशी संपादक व प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही.



**Principal**  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera







- प्रा.डॉ. शिंदे अनंत नामदेवराव 102
39. वीर शैव संप्रदाय आणि म. बसवेश्वर  
प्रा. आसेगांवकर कैलास कमलाकर 104
40. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि सामाजिक सुधारणा चळवळ  
प्रा.डॉ.शिवाजी गाढे 107
41. मुस्लीम सुफी संतांचे मराठी लेखन  
डॉ.शत्रुघ्न जाधव 109
42. महिलांच्या मानव अधिकाराच्या संवर्धनासाठी करण्यात आलेले अधिनीयम व न्यायालयीन  
सक्रियता : एक अभ्यास  
डॉ. डी.ए. पाईकराव 112
43. जैनधर्म आणि तत्वज्ञान  
प्रा.डॉ. नितीन बावळे 115
44. भारतीय स्वातंत्र्याचे स्वप्न दाखविणारे आद्यक्रांतीकारक - उमाजी नाईक  
प्रा.डॉ.गणेश गोविंदराव माने 117
45. सुफी पंथावर भक्तीमार्गाचा प्रभाव  
प्रा.डॉ.अशोक गंगाराम साबणे 119
46. महात्मा बसवणांची धर्मक्रांती : एक चिकित्सा  
डॉ. अनिता व्यंकटराव शिंदे 121
47. संत साहित्याचे धार्मिक चळवळीत योगदान  
प्रा. डॉ. श्रीराम मारोतराव कन्हाळे 124
48. मध्यपूर्व काळातील कर्तृत्ववान स्त्रिया  
संशोधक. सिंधु लोणकर 127
49. ऐतिहासिक भक्ती आन्दोलन द्वारा समाज उत्थान  
प्रा.वाय.एस.राजपूत 130
50. "मध्ययुगीन कालखंडातील साहित्य आणि लोकप्रबोधनात्मक जागृती एक  
ऐतिहासिक अध्ययन"  
डॉ. एन. आर. वर्मा 132
51. "भक्ति आन्दोलन और महाराष्ट्र धर्म"  
डॉ.विवेकानंद लक्ष्मण चव्हाण 137
52. भारतातील समाज सुधारणांमध्ये विविध संतांचे योगदान : ऐतिहासिक अभ्यास  
प्रा.डॉ. नितीन उल्हासराव सराफ 139
53. संस्कृती संघर्ष- श्रमण और ब्राह्मण  
डॉ. मोहन मिसाळ 142
54. तथागत बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता : एक ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक  
विश्लेषणात्मक अध्ययन  
प्रा. डॉ. संतोष बनसोड



# तथागत बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता : एक ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रा. डॉ. संतोष बनसोड

विभाग प्रमुख, इतिहास विभाग, श्री. नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा (रेल्वे), अमरावती.

डाई हजार वर्ष पूर्व 563 ईसा पूर्व में सिद्धार्थ गौतम बुद्ध का उदय भारत की इस पवित्र भूमि पर हुआ। उन्होंने निर्वाण का जो मार्ग मानव मात्र को सुझाया था, वह आज भी प्रासंगिक है। म. बुद्ध का धम्म मानव-मानव के बीच के संबंधों को दर्शाता है, न को ईश्वर और मानव के। गौतम बुद्ध ने तत्कालीन रूढ़ियों और अन्धविश्वासों का खंडन कर एक सहज मानव धर्म की स्थापना की।

बुद्ध ने ईश्वर के अस्तित्व को नकारा, बुद्ध ने आत्मा के अस्तित्व को नकारा, बुद्ध ने वेद, कर्मकांड इ. को नकारा। बुद्ध ने चमत्कार इ. अलौकिक शक्तों को नकारा। बुद्ध ने वर्णव्यवस्था को ध्वस्त किया और प्रजा, शील, करुणा, स्वातंत्र्य, समानता, बंधुत्व, सामाजिक न्याय इ. तत्वों का प्रचार समस्त जीवन भर किया।

483 ईसा पूर्व में 80 वर्ष की आयु में म. बुद्ध का कुशीनारा (उ.प्र.) में महापरिनिर्वाण हुआ। बुद्ध की सही शिक्षा का विश्लेषण करना प्रस्तुत शोध निबंध का मूल उद्देश्य है।

## तथागत बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति

ऐतिहासिक दृष्टि से यदि देखा जाए तो बुद्ध ने कभी भी जाति व्यवस्था के विरोध में लड़ाई नहीं लड़ी। यह बात लोगों को चौकाने वाली हो सकती है, मगर यह सच है। बुद्ध ने कभी भी जाति व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई नहीं लड़ी क्योंकि बुद्ध के समय जाति व्यवस्था ही नहीं थी। बुद्ध के समय वर्ण थे, वर्ण व्यवस्था थी। लिखित इतिहास उपलब्ध है जो यह दर्शाता है कि बुद्ध की समुची लड़ाई वर्ण व्यवस्था के खिलाफ में थी। इस इतिहास को भी जानने की जरूरत है कि बुद्ध गणतंत्र प्रणाली की पैदाइश थे।

बुद्ध गणप्रथा और परंपरा की पैदाइश थे। गणतंत्र और गणप्रथा वर्ण व्यवस्था को मान्यता नहीं देते थे। गणतंत्र को माननेवाले जो लोग थे, वो लोग भी वर्ण व्यवस्था को मान्यता नहीं देते थे। बुद्ध पर आरोप किया जाता है कि बुद्ध क्षत्रिय थे, मगर बुद्ध वास्तव में क्षत्रिय नहीं थे। जो गणतंत्र और गणप्रथा वर्ण व्यवस्था को मान्यता नहीं देती थी उस गणतंत्र की पैदाइश बुद्ध क्षत्रिय थे, यह किस आधार पर कहा जाए?

बुद्ध मूलतः वर्ण व्यवस्था के क्यों विरोधी थे? क्योंकि बुद्ध के पहले जो गणतंत्र था उसकी विरासत बुद्ध ने आगे बढ़ाई। वर्ण व्यवस्था का विरोध बुद्ध का नहीं गणतंत्र का है। गणतंत्र की विरासत को बुद्ध ने आगे बढ़ाया। इतिहास यही कहता है। इसलिए यह समझना बहुत जरूरी है कि बुद्ध का संघर्ष जाति व्यवस्था के विरोध में इसलिए नहीं था क्योंकि बुद्ध के समय में 'जाति' ही ही नहीं। बुद्ध के समय में 'वर्ण व्यवस्था' थी इसलिए बुद्ध की समस्या लड़ाई वर्ण के खिलाफ में थी और वर्ण व्यवस्था के खिलाफ जो लड़ाई बुद्ध ने लड़ी उसके आधार पर बुद्ध ने वर्ण व्यवस्था को ध्वस्त किया और देश में सामाजिक क्रान्ति हुई।

## सामाजिक क्रान्ति का परिणाम

वर्ण व्यवस्था के विरोध में बुद्ध ने जो सामाजिक क्रान्ति की इस सामाजिक क्रान्ति ने भारत के इतिहास में तीन महत्वपूर्ण बातें निर्माण की। 1) ज्ञान और विज्ञान में क्रान्ति हुई, 2) जिन्हें वर्ण व्यवस्था ने रूढ़ घोषित किया था, नीच घोषित किया था, उन्होंने अपने अंदर राजा और राज्य पैदा किया। मौर्य सम्राट और साम्राज्य इसी क्रान्ति के तहत पैदा हुआ। 3) स्वीयों को पूर्णतः आजाद किया गया। यह तीन बातें सबसे बड़े पैमाने पर बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति ने पैदा की। और इस क्रान्ति की वजह से दुनिया के इतिहास में पहली बार इस देश में विश्वविद्यालयों का निर्माण हुआ।

ज्ञान और विज्ञान भारत में पैदा हुआ। शून्य का शोध भारत में लगा। शून्य भारत से अरब में गया और अरब से यूरोप में गया। यूरोप ने शून्य को आधार बनाकर गणित शास्त्र विकसित किया। और उस गणित शास्त्र को हमने यूरोप से भारत में लाया। आज की जो तकनीकी है वो गणित शास्त्र पर खड़ी है। बहुत सारे लोगों को लगता है कि शून्य का कोई महत्व नहीं है। मगर उदाहरण के तौर पर देखा जाए तो अगर शून्य के पहले एक रखो तो कहना पड़ेगा दस। इसका मतलब जो एक आप ने बाद में रखा उसकी किममत नऊ हो गई।

उस एक की किममत नऊ उस शून्य की वजह से हुई। यह बात जानने और समझने की है कि बुद्ध की जो सामाजिक क्रान्ति हुई उस क्रान्ति की वजह से भारत सारे विश्व में सबसे समृद्ध और शक्तिशाली बन गया था।

बाबा अम्बेदकर ने "बुद्ध और उनका धम्म" नामक ग्रंथ (अंग्रेजी में) लिखकर बुद्ध की सही शिक्षा प्रस्तुत की है जो संक्षेप में निम्नप्रकार से है।

बुद्ध के अनुसार हर चीज परिवर्तनशील है। प्रत्येक परिवर्तन का कोई न कोई कारण जरूर होता है। सृष्टी स्वयं भी उत्क्रांति अवस्था से गुजर रही है इसलिए सृष्टी स्वयं भी परिवर्तनशील है। सृष्टी में होने वाला परिवर्तन कैसा होगा यह सृष्टी के घटकों के बीच विद्यमान कार्य-कारण (Cause & effect) संबंधों के अध्ययन से समझा जा सकता है। मनोविज्ञान ने मानसिक घटकों के कार्य-कारण संबंधों को समझकर जीवन के कई क्षेत्रों जैसे शिक्षा, व्यापार, व्यक्तित्व-विकास, असामान्य व्यवहार का उपचार, बच्चों की परवरिश इ. क्षेत्रों में जीवन को बेहतर बनाया है। उसी तरह समाज घटकों प्रक्रियाओं के बीच के कार्य-कारण संबंधों को समझ कर समाज को इच्छित दिशा





देकर बहुजनों के समाज-जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है। शोषित-बहुजनों के हित और मन के सच्चे सुख को हासिल करना ही धर्म है। "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" के सिवा बुद्ध का 'धम्म' कुछ भी नहीं है। बुद्ध के अनुसार दुख के कारण है इसलिये दुख है। दुख के कारणों को दूर करने से दुख दूर किये जा सकते हैं। लालच तथा आसक्ति न सिर्फ शोषण कि मानसिक बुनियाद है बल्कि वह दुखों का मूल कारण भी है।

**बुद्ध के अनुसार ये आसक्तियाँ तीन वर्गों में रखी जा सकती है।**

1) लालच, सुख के पीछे भागने की वृत्ति तथा अनावश्यक लगाव। 2) अज्ञान, अंधविश्वास, झूठी धारणाओं, धर्मों को अपने मन में पनाह देना, तथा निबुद्धता। 3) अनिष्टकारी भावनायें जैसे घृणा, क्रोध, चिड़चिड़ाहट, या किसी के प्रति असहनीयता की भावना।

मन के सच्चे सुख का अपार धन से कोई संबंध नहीं है। एक छोटा बच्चा मिट्टी के खिलौने से खेलकर अपार खुशी हासिल करता है। आपसो प्रेम, विश्वास, सहयोग और त्याग की भावना तथा मानवी मूल्यों को मन में विकसित करके, समाज को समृद्ध करनेवाले जीवन-दर्शन को अपनाकर ही सबको सच्ची खुशी हासिल होगी है। इसके विपरीत अपने बाँबी-बच्चों, मित्रों, रिश्तेदारों इ. के प्रति अताईक अपेक्षायें रखना, उनपर अपनी इच्छा-अपेक्षायें थोपना, उन पर गैरजरूरी अधिकार जताना इ. आसक्ति के प्रकार है जिनसे अंततः दुख ही निर्माण होता है। आसक्ति के पीछे भागने वाला व्यक्ति अंततः अपनी आसक्ति का गुलाम बन जाता है क्योंकि लालच और आसक्ति कम होने की बजाये लगातार बढ़तेही जाती है। इन्सान अपने पास क्या है इमें पहचानने की बजाये अपने पास क्या नहीं है, दूसरे के पास क्या है यही सोचते हुये अभाव में जीता है। प्रतिस्पर्धा करते हुये रातों को नोद और मन का चैन खो देता है।

अपनी आसक्तियों को समझकर उनपर नियंत्रण हासिल करना ही निर्वाण (सच्ची खुशी) को हासिल करना है। इसका मतलब दरिद्रता को निमंत्रण देना या शरीर को प्रताड़ित करना नहीं है। बुद्ध के अनुसार शरीर की आवश्यकताओं को पुरा करने जितनी संपत्ति को अर्जित करना हम सबका कर्तव्य है क्योंकि स्वास्थ्य अच्छा रखकर ही आप अपने मन और शरीर को दृढ़, मजबूत तथा मस्तिष्क में ज्ञान की ज्योति को सदा जलाये रख सकेंगे।

लालच और आसक्ति "शोषण-व्यवस्था" को जन्म देती है। लालची व्यक्ति इच्छित चीजों को जैसे भी हो हासिल करना चाहते हैं। शोषक यह तर्क देते हैं कि वे सक्षम हैं इसलिये ओरों पर हुकुमत (शोषण) करने के हकदार हैं। जब प्रकृति में अपने आपको जिन्दा रखने के लिये दूसरों का खून बहाना जरूरी था तब तो "Survival of the fittest" इस नियम की सार्थकता थी लेकिन आज संसाधनों की प्रचुरता के युग में इस नियम की कोई सार्थकता नहीं है क्योंकि शोषित मेहनतकश जनता ने ही सुख सुविधा की सारी वस्तुयें बनायी हैं।

नैतिकता का उद्देश्य तथाकथित "शोषक सबल-सक्षम" लोगों पर मेहनतकश बहुजन जनता के हित में अंकुश लगाना है। इसलिये प्रजातांत्रिक मूल्यों पर आधारित नैतिकता को समाज में विकसित करना बुद्ध के धर्म का मूल उद्देश्य है। जनतंत्र यह सामाजिक व्यवस्था से भी बड़ी चीज है, वह मन की वृत्ति तथा जीवन-दर्शन है। शिक्षित और संगठित तो शोषक भी हैं लेकिन शोषक बहुजन समाज को उनके हक देने का नहीं बल्कि उनके हक छिनने का काम करत है। तेज बुद्धी और अच्छे चरित्र का व्यक्ति निरुपद्रवी इन्सान जरूर हो सकता है लेकिन जरूरी नहीं की वो ओरों के काम आये ही। अच्छे चरित्र तथा इन्सानियत का दर्द (करुणा) होने वाला व्यक्ति सेवाभावी बन सकता है लेकिन जरूरी नहीं की उसमें जुल्म को मिटाने की सलाहियत होगी ही। इसलिये प्रज्ञा, शील और करुणा इन तीनों के विकसित हुये बिना नैतिकता खोखली साबित होती है। इन्ही गुणों के विकास से "सामाजिक प्रजातंत्र" विकसित होता है। हमारे मूलभूत अधिकार कानून द्वारा नहीं बल्कि अधिकारों के अनुरूप नैतिक मूल्य समाज में विकसित होने से ही सुरक्षित होते हैं। हमारे मूलभूत अधिकारों का विरोध खुद समाज द्वारा किया जाय तो देश का कानून, संसद और न ही न्याय-व्यवस्था उन अधिकारों को सुरक्षित रख सकती है। मूलभूत अधिकारों का अमेरिका के निग्रो समुदाय को, तथा भारत के अछूतों को क्या उपयोग हुआ है?

इसलिये हर शोषक अपने शोषण के अनुकूल अंधविश्वास समाज में निर्माण करते रहे हैं। शोषक की राजकीय सत्ता को भले ही आप नष्ट कर दें लेकिन उनके द्वारा विधाकृत किये समाज में बहुजनवाद, या सच्चे सामाजिक लोकतंत्र के बीज उग ही नहीं सकते। इसलिये केवल शोषक बदलते रहे हैं, शोषकों के चंहे बदलते रहे हैं लेकिन आम लोगों का शोषण समाप्त नहीं हुआ है क्योंकि होने वाले परिवर्तन केवल उपरी सतह के रहे हैं।

जैसी हमारी सोच बनती है वैसा ही हमारा व्यवहार होता है। हमारा मन मस्तिष्क ही हमें अच्छा या बुरा बनाता है इसलिये बहुजन समाज के हितों की बातों को कायम करने के मकसद के प्रति अपने मन मस्तिष्क को प्रशिक्षित करना ही सदाचार की ओर पहला कदम बढ़ाना है। इसलिये बुद्ध के अनुसार तर्क से विकसित समझ (प्रज्ञा), अच्छा चरित्र (शील) तथा इन्सानियत के दर्द की अनुभूति (करुणा) इन तीनों का समाज में विकसित होना जरूरी ही नहीं बल्कि यह अनिवार्य है तभी बहुजन समाज के हर घटक को उसका अधिकार मिलने की नैतिक अनिवार्यता समाज में विकसित की जा सकती है। ऐसे ही लोगों से न बिकने वाला, न झुकने वाला और सबके साथ न्याय करने वाला "बहुजन समाज" बन सकता है।

हमारे मन की भावनाओं के असर से हमारा माहौल कभी मिथुन नहीं रह सकता। इसलिये सही दृष्टिकोण रखना, सही उद्देश्य कायम करना, सही संभाषण करना, जीवनयापन का सही तरीका अपनाना, सही दिशा में प्रयत्न करना, सही मानसिकता निर्माण करना, और सही एकाग्रता रखना 'अष्टांग मार्ग' है जिसका ज्ञान करने की सीख बुद्ध ने दी है। अष्टांग मार्ग से जीवन-यापन करना ही निर्वाण (सच्चा सुख) प्राप्त करना है। बुद्ध का उद्देश्य आम इन्सान को शोषण से मुक्त कराना ही नहीं बल्कि उन्हें एक परिपूर्ण जीवन जीने के लिये हर किस्म की जंजीरों से आजाद करना है। बुद्ध ने हमारे अज्ञान, अंधविश्वास, अज्ञानों का सपना साकार करने की कोशिश की है। बुद्ध ऐसी समाज व्यवस्था चाहते





देकर बहुजनों के समाज-जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है। शोषण-बहुजनों के हित और मन के सच्चे सुख का हासिल करना ही धम्म है। "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" के सिवा बुद्ध का 'धम्म' कुछ भी नहीं है। बुद्ध के अनुसार दुख के कारण है इर्सायित दुख है। दुख के कारणों को दूर करने से दुख दूर किये जा सकते हैं। लालच तथा आसक्ति न सिर्फ शोषण कि मानसिक दुनियावाद है बल्की वह दुखों का मूल कारण भी है।

बुद्ध के अनुसार ये आसक्तियों तीन वर्गों में रखी जा सकती है।

1) लालच, सुख के पोछे भागने की वृत्ति तथा अनावश्यक लगाव। 2) अज्ञान, अभावविशवास, झूठी भावनाओं, धर्मों का अपने मन में पनाह देना, तथा निबुद्धता। 3) अनिष्टकारी भावनाये जैसे घृणा, क्रोध, चिढ़ाचिढ़ाहट, या किमो के प्रांत अग्रहानोपना की भावना।

मन के सच्चे सुख का अपार धन से कोई संबंध नहीं है। एक छोटा बच्चा मिट्टी के गिड़गिड़ाने में खुलकर अपार खुशी हासिल करता है। आपसी प्रेम, विश्वास, सहयोग और त्याग की भावना तथा मानवी मूल्यों को मन में विकसित करके, समाज को समृद्ध करनेवाले जीवन-दर्शन को अपनाकर ही सबको सच्ची खुशी हासिल होती है। इसके विपरीत अपने बीबी-बच्चों, मित्रों, रिश्तेदारों इ. के प्रांत अनाधिक अपेक्षाये रखना, उनपर अपनी इच्छा-अपेक्षाये धोपना, उन पर गैरजरूरी अधिकार जताना इ. आसक्ति के प्रकार है जिनमें अंततः दुख ही निर्माण होता है। आसक्ति के पोछे भागने वाला व्यक्ति अंततः अपनी आसक्ति का गुलाम बन जाता है क्योंकि लालच और आसक्ति कम होने को बनाये लगातार बदलतेही जाते है। इन्सान अपने पास क्या है इसे पहचानने की बजाये अपने पास क्या नहीं है, दुसरे के पास क्या है वहाँ सांचते रूप अभाव में जीता है। प्रतिस्पर्धा करते हुये रातों की नींद और मन का चैन खो देता है।

अपनी आसक्तियों को समझकर उनपर नियंत्रण हासिल करना ही निर्वाण (सच्ची खुशी) को हासिल करना है। इसका मतलब दरिद्रता को निमंत्रण देना या शरीर को प्रताड़ित करना नहीं है। बुद्ध के अनुसार शरीर की आवश्यकताओं को पूरा करने जितनी संपत्ति को अर्जित करना हम सबका कर्तव्य है क्योंकि स्वास्थ्य अच्छा रखकर ही आप अपने मन और शरीर को दृढ़, मजबूत तथा मज्जित्क में ज्ञान की ज्योति को सदा जलाये रख सकेंगे।

लालच और आसक्ति "शोषण-व्यवस्था" को जन्म देती है। लालपी व्यक्ति इच्छित चीजों को जैसे भी हो हासिल करना चाहते है। शोषक यह तर्क देते है कि वे सक्षम है इसलिये औरों पर हुकुमत (शोषण) करने के हकदार है। जब प्रकृति में अपने आपको जिन्दा रखने के लिये दुसरो का खून बहाना जरूरी या तब तो "Survival of the fittest" इस नियम की सार्थकता ही लॉकन आज संसाधनों की प्रचुरता के युग में इस नियम की कोई सार्थकता नहो है क्योंकि शोषित मेहनतकश जनता ने ही सुख सुविधा को सारी वस्तुयें बनायी है।

नैतिकता का उद्देश्य तथाकथित "शोषक सबल-सक्षम" लोगों पर मेहनतकश बहुजन जनता के हित में अंकुश लगाना है। इसलिये प्रजातांत्रिक मूल्यों पर आधारित नैतिकता को समाज में विकसित करना बुद्ध के धम्म का मूल उद्देश्य है। जनतंत्र यह सामाजिक व्यवस्था से भी बड़ी चीज है, वह मन की वृत्ति तथा जीवन-दर्शन है। शिक्षित और संगठित तो शोषक भी है लेकिन शोषक बहुजन समाज को उनके हक देने का नहीं बल्कि उनके हक छिनने का काम करत है। तेज बुद्धी और अच्छे चरित्र का व्यक्ति निरुपद्रव्य इन्सान जरूर हो सकता है लेकिन जरूरी नहीं की वो औरों के काम आये ही। अच्छे चरित्र तथा इन्सानियत का दर्द (करुणा) होने वाला व्यक्ति सेवाभावी बन सकता है लेकिन जरूरी नहीं की उसमें जुल्म को मिटाने की सलाहियत होगी ही। इसलिये प्रजा, शील और करुणा इन तीनों के विकसित हुये बिना नैतिकता खोखली साबित होती है। इन्ही गुणों के विकास से "सामाजिक प्रजातंत्र" विकसित होता है। हमारे मूलभूत अधिकार कानून द्वारा नहीं बल्कि अधिकारों के अनुरूप नैतिक मूल्य समाज में विकसित होने से ही सुरक्षित होते है। हमारे मूलभूत अधिकारों का विरोध खुद समाज द्वारा किया जाये तो देश का कानून, संसद और न ही न्याय-व्यवस्था उन अधिकारों को सुरक्षित रख सकता है। मूलभूत अधिकारों का अमेरिका के निग्रो समुदाय को, तथा भारत के अछुतों को क्या उपयोग हुआ है?

इसलिये हर शोषक अपने शोषण के अनुरूप अधविशवास समाज में निर्माण करते रहे है। शोषक की राजकीय सत्ता को धमने ही आप नष्ट कर दे लेकिन उनके द्वारा विधाक्त किये समाज में बहुजनवाद, या सच्चे सामाजिक लोकतंत्र के बीज उग ही नहीं सकते। इसलिये केवल शोषक बदलते रहे है, शोषकों के चहरे बदलते रहे है लेकिन आम लोगों का शोषण समाप्त नहीं हुआ है क्योंकि होने वाले परिवर्तन केवल उपरो सतह के रहे है।

जैसी हमारी सोच बनती है वैसा ही हमारा व्यवहार होता है। हमारा मन मज्जित्क ही हमे अच्छा या बुरा बनाता है इसलिये बहुजन समाज के हितों की बातों को कायम करने के मकसद के प्रांत अपने मन मज्जित्क को प्रशिक्षित करना ही सदाचार की ओर पहला कदम बढ़ाना है। इसलिये बुद्ध के अनुसार तर्क से विकसित समग्र (प्रजा), अच्छा चरित्र (शील) तथा इन्सानियत के दर्द की अनुभूति (करुणा) इन तीनों का समाज में विकसित होना जरूरी ही नहीं बल्कि यह अनिवार्य है तभी बहुजन समाज के हर घटक को उसका अधिकार मिलने की नैतिक अनिवार्यता समाज में विकसित की जा सकती है। ऐसे ही लोगों से न बिकने वाला, न झुकने वाला और सबके साथ न्याय करने वाला "बहुजन समाज" बन सकता है।

हमारे मन की भावनाओं के असर से हमस माहोल कभी अछुत नहीं रह सकता। इसलिये सही दृष्टिकोण रखना, सही उद्देश्य कायम करना, सही संभाषण करना, जीवनयापन का सही तरीका अपनाना, सही देश में प्रयत्न करना, सही मानसिकता निर्माण करना, और सही एकाग्रता रखना 'अष्टांग मार्ग' है जिसका फलन करने को लोभ बुद्ध है ही है। अष्टांग मार्ग से जीवन-यापन करना ही निर्वाण (सच्चा सुख) प्राप्त करना है। बुद्ध का उद्देश्य आम इन्सान को तब शोषण से मुक्त कराना ही नहीं बल्कि उन्हें एक परिपूर्ण जीवन जीने के लिये हर किस्म की जंजीरों से आजाद करना है। बुद्ध ने हमेशा अज्ञान इन्सानों का मयना माकार करने का कोशिश की है। बुद्ध ऐसी समाज व्यवस्था चाहते





थे जिसमें प्रत्येक व्यक्ति खुद में जो भी क्षमतायें हैं उनका विकास करके "स्व" के वास्तविककरण का आनन्द (Self Actualization) अनुभव करेंगे। इसीलिये अशोक इ. बौद्ध सम्राटों के शासन में हर व्यक्ति के गुण-कौशल्य को उभारने तथा सामाजिक जीवन को समृद्ध बनाने के प्रयास किये गये, इसीलिये अशोक के काल में हर तरह की कलायें विकसित हुईं।

दुःख को तकलीफ से बचने की प्रेरणा है इसी लिये हम दुःख से बचने के लिये सदा प्रयत्नशील रहते हैं। दुःख का संभावना ही न हो तो कुछ भी करने की प्रेरणा नहीं रहेगी। नंकी-बंदी, प्यार-नफरत इ. परस्पर विरोधी चीजों के कारण ही हमारा जीवन परखत-नशील है। **वर्धस्व-वृत्ति, शोषण-प्रवृत्ति, मतलब परस्ती, आलस, डर, इ. जन्म से पायी जानेवाली मूलभूत प्रवृत्तियाँ हैं। जिस तरह हम रोज नहाकर मैल गंदगी से छुटकारा पाकर तरोताजा होते हैं उसी तरह तर्क की सहायता से सदैव आत्मनिरीक्षण करके हम अपने मन की शोषण-वृत्ति इ. मूलभूत प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रख सकते हैं, अन्यथा मन में इन समाज-विरोधी वृत्तियों को बढ़ते देर नहीं लगेगी।** इसलिये बूढ़े ने अपनी बूढ़ी-तर्क से अपने मस्तिष्क की आसक्ति, मस्तिष्क में डाले गये धार्मिक - गैरधार्मिक, अंधविश्वासों, अताकिक प्रेरणा, आसक्तियों, धारणाओं को खोज-समझकर उन्हें त्यागने और खुद में नेक अखलाख (अच्छा चरित्र), इन्सानियत का दर्द, और तर्क से विकसित समझ (Insight) विकसित करने को जरूरी बताया है।

सिमंड फ्राइड ने भी मनोवैश्लेषकों को खुद की अताकिक अंधेलेन प्रेरणाओं को समझने की अनिवार्यता बताया है तार्किक व मनोरागीणों का उपचार करते करते कहीं खुद ही अपनी भावनाओं में उलझ न जाये।

प्रकृति को प्रत्येक घटना का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। जब कारण और परिणाम करीब-करीब होते हैं तब हम उन दोनों के बीच के संबंधों को स्पष्ट रूप से पहचान कर सकते हैं जैसे आग का जलना और धुँये का निकलना। लेकिन जब घटना का कारण हमारी नजरों से ओझल रहता है तब हमें वह घटना अद्भुत या दैवी शक्ति से घटित हुई जान पड़ती है। मानव ने अपनी बुद्धि के सहारे आज तक प्रकृति के अनेक रहस्य खोले हैं जो हमें कभी अद्भुत लगते थे। इसलिये बुद्धि-तर्क के इस्तेमाल से कभी न कभी हम उस घटना का कारण भी जान लेंगे जो आज हमें अर्थात् करती है। जादुगरी का व्यवसाय करने वाले जादुगर के कारनामों हमें हैरत में डाल देते हैं लेकिन जैसे ही उसको "ट्रिक" (चालाकी) का पता चलता है हमारी हैरानी खत्म हो जाती है। इसलिये किसी स्पष्ट कारण के अभाव में किसी घटना के पीछे किसी दैवी शक्ति की व्यर्थ ही कल्पना करके उसपर विश्वास कायम करना यानि अपने मन में अंधविश्वास कायम करना है। जिस चीज को हम सिद्ध ही नहीं कर सकते उसकी व्यर्थ ही कल्पना करके उसको सच नहीं मानना चाहिये। इसलिये ईश्वर पर आधारित धर्म "कल्पना" पर आधारित धर्म है, ऐसे धर्मों ने अंततः अंधविश्वासों की ही निर्मिति की है।

ईश्वर को किसने बनाया इस का किसी के पास जवाब नहीं है। सब यह मानकर चलते हैं कि ईश्वर पहले से ही अस्तित्व में है। जमीन, पथर, आकाश, तारे इ. आप को नजर आते हैं इसलिये सृष्टि के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिये तो आपको कोई भी काँटिनाई नहीं है। ईश्वर पहले से ही ऐसी कोरी कल्पना करने की बजाय "यह सृष्टि पहले से ही अस्तित्व में है" यह बात ज्यादा तर्कपूर्ण लगती है। ज्यादा से ज्यादा कोई इतना ही कह सकता है कि सृष्टि के अस्तित्व का कारण फिलहाल कोई खोज नहीं पाया है।

हमें अपनी आँखों से आकाश में जितने तारे दिखायी देते हैं वह हमारी गैलेक्सी का मामूली सा हिस्सा मात्र है। हमारी गैलेक्सी में कई तारे सूर्य से कई गुणा बड़े और उससे कई हजार गुणा प्रकाशमान हैं। प्रकाश की किरण एक वर्ष में जितनी दूरी तय कर सकती है उतनी दूरी को एक प्रकाश वर्ष कहते हैं। एक प्रकाश वर्ष की दूरी 5,865,696,000,000 मील की होती है। सूर्य गैलेक्सी के केंद्र में स्थित है यह मानकर हमारी अपनी गैलेक्सी के एक छोर से दूसरे छोर का अंतर 60,000 प्रकाश वर्ष में आता है।  $(30,000) \times 2 = 60,000$  यानी हमारी गैलेक्सी के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचने में 40176,000,000 वर्ष यानी चालीस हजार एक सौ छहतर लाख वर्ष लग जायेंगे। जैसे साग समंदर असंख्य रेत के कणों से भरा पड़ा है उसी तरह सारी कायनात (सृष्टि) असंख्य गैलेक्सियों से भरी पड़ी है। जब हमारी गैलेक्सी एक रेत के कण जैसी है तब आप अन्दाजा लगा सकते हैं की सारी कायनात कितनी विशाल है? उसको तुलना में पृथ्वी और उस पर रहने वाले इन्सानों की हिसाबत कितनी मामूली है?

इतनी नगण्य हैसियत रखने वाले इन्सानों से मान्यता हासिल करने के लिये, उनसे अपने अस्तित्व को मनवाने के लिये धर्म - ग्रंथों का तथाकथित काल्पनिक ईश्वर इतना परेशान क्यों है? इतना असहाय क्यों है? इससे भी यह साबित हो जाता है की ईश्वर काल्पनिक अंधविश्वास के सिवा कुछ नहीं है। इसे कई तरह से साबित किया जा सकता है।

हर धर्म का विश्वास है की ईश्वर ने सारे जीव जन्तुओं का निर्माण किया है लेकिन हकीकत में जीव जन्तुओं का निर्माण ईश्वर के कारण नहीं बल्कि प्रकृति में जीव निर्मिति के लिये आवश्यक घटकों तथा विशेष परिस्थितियों का मौजूद होना है। दुध को गर्म करके या बहुत अधिक दुध में किचन सा साँहा डाल देने से दुध फटना ही नहीं यानी उसमें विशिष्ट जीव-किटाणुओं का विकास होकर दही बन ही नहीं पाता। दुध में कब जीव निर्मिति होगी यह ईश्वर के नहीं आपके हाथ में है क्योंकि आपको इसका "कार्य-कारण" संबंध मालूम हो चुका है। कार्य-कारण संबंध स्पष्ट होने से ही आजकल अंडों पर बैठने का काम मृगियों से नहीं कराया जाता बल्कि मशीन अंडों से कुछ ही मिनिट में चुजाँ का निर्माण कर देती है। गर्भ धारण करने में अक्षम स्त्री के अंडकोष को अलग टेस्ट ट्यूब में पुरुष शक्लणु से पॉलिनट करके उसके स्त्री गर्भाशय में पहुँचाकर बच्चे पैदा हो रहे हैं। पहले पंड-पोष बीजाँ से पैदा होते हैं इन्सान ने न सिर्फ पहले पंड को धारण के कालम बनाकर पेटों को उगाना शुरू किया, फिर एक ही पंड पर तरह तरह के गुलाब उगाये, एक ही पंड से तरह तरह के फल उगाये, "Tissue Culture" पद्धती से छोटी सी कलम को पोंस से असंख्य पंड पैदा किये हैं। जैनेटिक

Principal Narayanrao Rana Mahavidyalaya





विज्ञान पैदा होने वाले बच्चे के गुणधर्म तक निर्धारित कर सकता है। समगुणधर्मिय प्रतिरूपी बछड़ों (Clones) को वैज्ञानिक पैदा कर हो चुके हैं।

इसी तरह जब अनुकूल परिस्थिती और आवश्यक भिन्न-भिन्न रसायनिक घटक उपलब्ध हुये तो अलग-अलग प्रकार के असंख्य एकपेशिय जीवों की निर्मिती हुई है। रोग के जंतुओं को हमारा शरीर प्रतीरोध करता है। लॉकन हमारे पेट में असंख्य कीटाणुओं की बस्ती है। हमारा शरीर इन कीटाणुओं का इसलिये प्रतीरोध नहीं करता क्योंकि ये कीटाणु हमारे शरीर के लिये आवश्यक विटामिन पैदा करते हैं। इस तरह जीव यंत्रणा उत्क्रांती की कई यंत्रणाओं से जुडी है। प्रतिकूल माहोल से तालमेल के प्रयासों से शरीर में परिवर्तन होते गये और जीवों की शरीर-यंत्रणा और जटिल होती गयी। मानव शरीर-यंत्रणाजटिलतम मानी जाती है। यह जटिलता लाखों-करोड़ों सालों की उत्क्रांती का नतीजा है। शरीर की प्रणालियों को अपने निरीक्षण और तर्क से समझने के कारण ही मानव ने दिल में कृत्रिम दाल्ब लगाकर, धर्मानियों के अयरोधों को दूर करके, गुद का प्रत्यारोपण इ. सैकड़ों तरीकों से शरीर की प्रक्रिया को मौत की बजाय जीवन की ओर मोड़ दिया है।

अलौकिक शक्ति को नकारने के बुद्ध के तीन उद्देश्य थे। 1) इन्सानों को वे तार्किक-बुद्धि के रास्ते पर लाना चाहते थे, 2) वे इन्सानों को सत्य की खोज के लिये स्वतंत्र करना चाहते थे, 3) उनका मकसद मन के अंधविश्वास को ही समाप्त करना था क्योंकि अंधविश्वास इन्सान की "जानने-समझने" की मूल-प्रवृत्ति की हत्या कर देता है। बौद्धिक-तर्कवाद के सिवा बुद्ध धम्म की शिक्षा में कुछ भी नहीं बचेगा।

म. ज्योतिराव फुले का मानना है कि मानवता पर आधारित सारे धर्म ग्रंथ जनता के दुखों के प्रति संवेदनशिल भले इन्सानों ने बनाये हैं। किसी ईश्वर ने धर्मग्रंथ इ. नहीं भेजे हैं। ऐसे भले इन्सानों ने अपनी अभूतपूर्व कामयाबी देखकर कईयों को लगने लगा कि उससे यह सब ईश्वर ही करा रहा है। वह तो जरीया या ईश्वर-दुल मात्र है।

बुद्ध के अनुसार ईश्वर में विश्वास कायम करना यानि पूजा-अर्चना में विश्वास कायम करना है जिससे पुजारी वर्ग ही शक्तिशाली होकर उभरता है। पुजारी ही वह धूर्त वर्ग है जिसने अंधविश्वासों की निर्मिती करके व्यक्ति के तार्किक विकास को नष्ट किया है। इसलिये "कल्पनाओं पर आधारित विश्वास" सही रास्ता नहीं है।

बुद्ध के अनुसार 'आत्मा' के अस्तित्व पर विश्वास करना ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करने से भी अधिक खतरनाक है क्योंकि इससे न सिर्फ पंडे पुरोहितों का वर्ग निर्माण होकर अंधविश्वासों की निर्मिती होती है बल्कि आत्मा की कल्पनायें व्यक्ति को जन्म से मृत्यु तक पंडो-पुजारियों के नियंत्रण में कर देती हैं। इसलिये प्रत्येक धर्म का पुजारी लोगों को बिना कोई तर्क किये आत्मा, ईश्वर इ. के अस्तित्व को मान लेने की जतन रखता है। स्वर्ग, नर्क, आत्मा पर विश्वास करना याने मन में अंधविश्वास कायम करना है। बुद्ध किसी भी धार्मिक प्रथाओं, उत्सवों तथा कर्म-कांडों के सख्त खिलाफ थे क्योंकि ये कर्मकांड अंधविश्वास के घर या आश्रयस्थान हैं।

व्यक्ति के स्वभाव में होने वाले बुनियादी परिवर्तन (Basic Changes) से व्यक्ति पुरी तरह बदल जाता है इसलिये यह परिवर्तन व्यक्ति का पुनर्जन्म (बुनियादी परिवर्तन) है। इसमें आत्मा जैसी किसी चीज का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। प्रज्ञा, शील, करुणा के विकास के कारण व्यक्ति में होने वाले पुर्ण परिवर्तन को बुद्ध ने पुनर्जन्म माना है। शरीर और मस्तिष्क के कारण ही हम विभिन्न संवेदनाओं को ग्रहण करते हैं, विचार, तर्क करते हैं। मृत्यु के बाद शरीर और मस्तिष्क भी नष्ट हो जाता है। इसलिये मृत्यु के उपरांत किसी भी अनुभूती के होने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। मरने के बाद शरीर के नष्ट होते ही व्यक्ति का अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है।

डॉ. अम्बेदकर के अनुसार मानवता का उद्देश्य पशु-प्रवृत्तियों जैसे कही भी खाना, पीना, सोना, गुस्सा आने पर हिंसा करना, जबरन संभोग करना, दूसरों की वस्तुयें छीनना इ. पर नियंत्रण रखने के लिये नैतिकता, प्रजातांत्रिक मूल्यों पर आधारित व्यवस्था को कायम करके समाज को खुशहाल और समृद्ध बनाना है। प्रज्ञा, शील और करुणा के विकास से व्यक्ति अपनी पशु प्रवृत्तियों पर नियंत्रण कायम कर सकता है। समाज को समृद्ध बनाने के लिये यह भी जरूरी है कि हर व्यक्ति को उसके गुणों का विकास करने के लिये उचित खाली समय यानि फुर्सत हासिल हो। तार्किक वे अपने उन व्यक्तित्व गुणों और खुबीयों का विकास कर सकें जो औरों के काम आते हैं और समाज को समृद्ध बनाने में मदद देते हैं। मशीनों के उपयोग से खाली समय उपलब्ध हो सकता है। प्रत्येक जनतांत्रिक समाज का यह कर्तव्य है कि वह अपने हर सदस्य के लिये पर्याप्त खाली समय उपलब्ध कराये।

दरअसल शोषकों ने मशीनों को शोषण और मुनाफाखोरी के साधन के रूप में इस्तेमाल किया है। इसमें दोष मशीनों का नहीं बल्कि मशीनों के सामाजिक इस्तेमाल का है। मशीन से काम अगर जल्दी होता है तो कर्मचारी के वास्तविक काम के घंटे कम करके (क्योंकि उत्पाद में तो कमी नहीं हुयी है) उन्हें अपनी उन खुबीयों के विकास का अवसर देना चाहिये जिससे समाज समृद्ध होता है।

बुद्ध हिंसा के विरोधी थे लेकिन वे न्याय के समर्थक थे और अपने बुनियादी हकों की रक्षा करने, या न्याय प्राप्त करने के लिये जब हिंसा ही एक रास्ता बचा हो तो उन्होंने हिंसा को जायज माना है। बुद्ध के अनुसार हमने कभी दुष्ट ताकतों के आगे आत्म-समर्पण नहीं करना चाहिये फिर चाहे हमें बुद्ध ही क्यों ना करना पड़े। मगर किया जाने वाला बुद्ध व्यक्तिगत स्वाध के लिये नहीं होना चाहिये।

कठोर दंड या दमनकारी नियमों से समाज में आवश्यक परिवर्तन नहीं लाये जा सकता। दंड को दमन के डर से व्यक्ति भले ही गलत काम न करे लेकिन जैसे ही उसे गलत काम करके दंड से बचे रहने का अवसर मिलता है वह अपने आपको गलत काम करने से नहीं रोक पाता। यही हमेशा होता रहा है। इसलिये शक्ति का उपयोग तत्कालीन होता है। कुछ समय के लिये किसी का दमन भले ही किया जाये





जोकिन दमन से दोबारा दमन करने की संभावना समाप्त नहीं होती। धम्म के माध्यम से ही व्यक्ति में मानवतावादी संस्कारों तथा आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित किया जा सकता है।

वॉल डुरन्ट के अनुसार बुद्ध के समय राजाओं द्वारा पौरुषवादी में रखे गये बड़े बड़े पौरातामिक जीवन के लिये विद्वानों तथा दार्शनिकों में कठोर प्रतिस्पर्धा होती हुआ करता था जिसमें बाल की खाल निकालने में भाहिर विद्वान भाग लेते थे। एक जगह से दूसरे जगह पर घूमते रहने वाले इन लोगों ने अपने-तक-कुतक से किसी भी बात को सिद्ध करने को अपना पेशा बनाया हुआ था। इसलिये बुद्ध के अनुसार किसी भी शिक्षा को प्रमाण मानने का यह आधार नहीं है कि उस शिक्षा को किसी धार्मिक किताब से लिया गया है, न ही हमने तर्क की बारीकियों से प्रभावित होना है, न ही उपरी दिखावे से प्रभावित होना है, न ही देखना है कि वे कितने स्वोकार्य है, न ही इस बात पर जाना है कि बताया जाने वाली बातें सच्ची प्रतीत हो रही है। न ही इस बात पर जाना है कि बातों को कहने वाले व्यक्ति का ओहदा क्या है। बल्कि यह देखना है कि बताया जा रहे विश्वास या दृष्टिकोण आप बहुजनों के लिये उपयोगी है या उससे उनका नुकसान होने वाला है? यानी "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" की कसौटी से बातों की उपयोगिता को जांचना-परखना है।

शोधकों का मकसद शोध-व्यवस्था को कायम रखना है। सारा शब्दों का जाल, सारा धार्मिक, गैर-धार्मिक दर्शन, तर्कों और कृतकों का ताना बाना इसलिये बुना जाता है ताकि बहुजन इसी में उलझकर अपने हकों की बातें भूल जाये। इसका तोड़ यही है कि आप उन्हें अंततः यही सवाल करे कि : "हमारे छीने गये अधिकार हमें वापस करो, हमारा शोषण बन्द करो"। इस बात पर सारा धमजाल टूट जाता है क्योंकि बहुजन अपने हकों की बात अपने दिमाग और ओठों पर नहीं लाये यही तो उनके इस "ताने-बाने" का मकसद होता है।

बुद्ध के अनुसार किसी सिद्धान्त को मनवाने के लिये उसके निर्माता के नाम के प्रभाव का उपयोग करना पड़े तो वह सच्चा सिद्धान्त या सच्ची सीख नहीं है। उन्होंने खुद को शिक्षा को मानव द्वारा मानव को दिया जाने वाला संदेश बताया और अपना कोई उत्तराधिकारी भी नियुक्त नहीं किया।

उपरोक्त शील द्वारा नियंत्रित शक्ति हो समाज में नैतिकता स्थापित कर सकती है और इसीसे सच्चा सामाजिक, राजनितिक लोकतंत्र कायम हो सकता है तथा समाज सुखी, समृद्ध और शक्तिशाली बन सकता है।

इसलिये वर्तमान समय में बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति की बहुत जरूरत है।

## Consolidated Bibliography

- 1 Ambedkar, Dr. B. R. "The Buddha And His Dhamma"; Buddha Bhoomi Publication, Nagpur, (Reprinted by The Corporate Body of The Buddha Educational Foundation 11<sup>th</sup> Floor, 55, Hang Chow S. Rd. Sec 1, Taipei, Taiwan, R.O.C. (ENO79-1141.)
- 2 Encyclopedia of Religion & Ethics, Vol. X.
- 3 वामन, मेश्राम. "जाति समाज को तोड़ने का वास्तविक हथियार", पृष्ठ क्र.03-05, संस्करण चौथा, प्रकाशक, मूलनिवासी पब्लिकेशन ट्रस्ट, 4765/46, तीसरी मंजिल, रैगरपुरा, करोल बाग, नई दिल्ली-05.
- 4 तपाने, म. वि. आवृत्ती (1982). "बौद्ध तत्त्वज्ञान काळाची गरज", त्रिलोक प्रकाशन, कृष्ण नगर, नागपूर-27.
- 5 Ambedkar, Dr. B. R. Vol. 5, P-137.
- 6 Ibid, P-249-251.
- 7 Ibid, P-137, 119, 117.
- 8 David Bergamini.
- 9 महात्मा फुले, P-501-202.
- 10 Ambedkar, Dr. B. R., Vol. 11, P-254-255.
- 11 Ibid, Vol. 11, P-259, 261.
- 12 Ibid, Vol. 11, P-254.
- 13 Ambedkar, Dr. B. R., Vol. 9, P-283-284.
- 14 Ibid, Vol. 11, P-346, Vol. III, P-451.
- 15 Ibid, Vol. III, P-453.
- 16 Will Durant, P-417-418.
- 17 Ambedkar, Dr. B. R., Vol. 11, P-278.
- 18 The Pali Tripitaka, Pali Texts.
- 19 Stanford Encyclopedia of Philosophy.
- 20 Gethin, Rupert, 1998, The Foundations of Buddhism, Oxford University Press.
- 21 Access to Insight, Readings in Buddhism.

  
Principal  
Narayanrao Datta Mahavidyalaya





Peer Reviewed Referred and UGC  
Listed Journal (Journal No. 40776)



ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY  
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

# AJANTA



Volume-IX, Issue-I  
January - March - 2020  
Marathi Part - III

IMPACT FACTOR / INDEXING  
2019 - 6.399  
[www.sjifactor.com](http://www.sjifactor.com)

Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Bednera



**Ajanta Prakashan**





An International Multidisciplinary  
Quarterly Research Journal

ISO 9001:2008 QMS  
ISBN / ISSN

# AJANTA

Volume - IX, Issue - I, January - March - 2020

ISSN - 2277 - 5730

Impact Factor - 6.399 ([www.sjifactor.com](http://www.sjifactor.com))

Is Hereby Awarding This Certificate To

**डा. डॉ. विनीत हातोले**

In Recognition of the Publication of the Paper Entitled

**राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज व महान्या गांधी**

Peer Reviewed Refereed  
and UGC Listed Journal

Ajanta Prakashan, Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004

Mob. No. 9579260877, 8390984760 Tel. No.: (0240) 2400877.

[ajanta5050@gmail.com](mailto:ajanta5050@gmail.com), [www.ajantaprakashan.com](http://www.ajantaprakashan.com)

Editor : Vinay S. Hatole



Principal  
Narayanrao Bhausaheb Chavan  
2020

ISSN 2277 - 5730  
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY  
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

# AJANTA

Volume - IX

Issue - I

January - March - 2020

MARATHI PART - III

Peer Reviewed Referred  
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2019 - 6.399

[www.sjifactor.com](http://www.sjifactor.com)

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),  
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

**Ajanta Prakashan**  
Aurangabad. (M.S.)



Princ  
Narayanrao Bona  
L...



## ❧ CONTENTS OF MARATHI PART - III ❧

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
२५	राष्ट्रसंतांच्या खंजरी भजनांद्वारे समाजप्रबोधन प्रा. गजानन एम. लोहटे	९५-९७
२६	वंदनीय राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज : एक जीवप्रवास प्रा. डॉ. हरिचंद्र नांगसु नरेटी	९८-१००
२७	वंदनीय राष्ट्रसंतानी स्त्रीशक्तीचा घेतलेला शोध व बोध प्रा. डॉ. कौकिका अनंतराव गावंडे	१०१-१०५
२८	राष्ट्रसंतांच्या साहित्यातून डोकावणारी जीवनमूल्ये सहा. प्रा. डॉ. रमेश एम. राठोड	१०६-१०९
२९	मराठी साहित्यातील अक्षरलेणे ग्रामगीता प्रा. रेखा दिगंबर अडाव	११०-११२
३०	वंदनीय राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे संगीत चिंतन डॉ. अनिरुध्द खरे	११३-११५
३१	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज व महात्मा गांधी प्रा. डॉ. संतोष बन्सोड	११६-११९
३२	राष्ट्रसंताची भाषा व साहित्यविषयक दृष्टीकोन प्रा. कार्तिक रामदास पाटील	१२०-१२३
३३	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांची ग्रामस्वराज्य संकल्पना प्रा. किशोर चौरे	१२४-१२८
३४	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे दलित चळवळीतील योगदान प्रा. प्रफुल एम. राजुरवाडे	१२९-१३२
३५	तुकडोजी महाराजांचे जीवन शिक्षण विशाल शिवाजी इंगळे	१३३-१३७
३६	राष्ट्रसंतांचे स्त्री सबलीकरण व महिलोन्नती विषयक विचार प्रा. साजिद के. शाह	१३८-१४३



## ३१. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज व महात्मा गांधी

प्रा. डॉ. संतोष बन्सोड

### सारांश

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज एक यूगद्रष्टये संत होते. जनमानसात राष्ट्रधर्माची ज्योत पेटविली. त्यांनी सर्वसामान्य माणसाच्या वैयक्तिक भावनांना धक्का न लावता त्यांचे मतपरिवर्तन करण्याचा प्रयत्न केला. त्यांच्यात देशभक्तीची प्रेरणा जागृत केली. स्वातंत्र्याच्या चळवळीतील धिमुर्, आष्टी, यावली, बेनोडा या गावाचा इतिहास यांची साक्ष आहे.

1920 ते 1948 हा कालखंड गांधीयुग म्हणून ओळखला जातो. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांवर गांधीजींच्या सत्य, अहिंसा, समता, मानवता, प्रेम, वैज्ञानिक दृष्टीकोनाचा प्रभाव होता. त्यांच्याच विचाराने 1936 ते 1942 पर्यंत राष्ट्रसंतानी लोकजागृती कार्याला वाहून व पारतंत्र्यात पडलेल्या समाजाला जागृत केले. लोकांना, देशाला स्वातंत्र्य मिळवून देण्यासाठी प्रेरित केले. राष्ट्रसंताची भजने युगसंवाद साधणारी होती. राष्ट्रसंत दररोज हजारों लोकांना आपल्या भजन भाषणातून राष्ट्रीयत्वाची दिक्षा देत होते. राष्ट्रसंताचा भजन प्रभाव स्वातंत्र्यापूर्वी होता तसाच स्वातंत्र्यानंतरही होता. प्रत्यक्ष रणांगणार जावून आपल्या खजिरी भजनाने जवानात जोश निर्माण करणारे राष्ट्रसंत तुकडोजी एकमेव संत होते. राष्ट्रसंतानी आपली ईश्वरभक्ती राष्ट्रभक्तीकडे वळविली. म्हणून त्यांच्या मुखातून राष्ट्रगिते बाहेर येऊ लागले. त्या काळात विदर्भात संत गाडगेबाबांचा 'खराटा' डॉ. पंजाबराय देशमुखांचा शिक्षा विस्तार करणार 'खडू' आणि राष्ट्रसंताची 'खंजेरी' असे समाजजीवनाचा महामंत्र देऊन गेले.

अल्बर्ट आईन्स्टाईन नावाचा तत्वनेता महात्मा गांधीजींबद्दल असे म्हणत असे की, असा हाडामासाचा माणूस या पृथ्वीतलावावर होऊन गेला यावर पुढील पिढ्यांचा विश्वास बसणार नाही. गांधीजींचे मोठेपण केवळ शब्दात मांडण्याइतके ते मोठे नव्हते तर एकंदर भारताच्या सामाजिक, राजकीय, आर्थिक क्षेत्राच्या जडणघडणीत गांधीजींचे स्थान एकमेव द्वितीय होते.

**Keyword :** यूगद्रष्टये, राष्ट्रधर्म, मानवता, खजिरी भजन, ईश्वरभक्ती, आईन्स्टीन.

### महात्मा गांधी व राष्ट्रसंताचे विचारातील स्थळे

महात्मा गांधीजींवर जॉन रस्कीन यांच्या 'अन्डू द लास्ट' या पुस्तकांचा आणि रशियन विचारवंत टॉलस्टॉय यांचा प्रभाव कायम होता. ग्रामगितेतील 'भू वैकुंठ' या 39 व्या अध्यायात राष्ट्रसंत तुकडोजी लिहीतात. ग्रामराज्याचे रामराज्य। स्वावलंबन हेथि स्वराज्य। बोलिले महात्मा विश्वपूज्य। विकास त्यांचा सुंदर हा- ग्रामनीता.

गरीब-श्रीमंत दारिद्र्य रोगराई, पंथ, पक्ष, जातिभेदविरहीत समाजरचना जेथे परकेपनाची भावना नाही. अशी ग्रामरचना असलेले ग्रामराज्य तुकडोजींना अपेक्षित होते. त्यासाठी त्यांनी परखड व प्रखर विचार मांडले. अन्न, वस्त्र, निवारा, आरोग्य, शिक्षण यासहीत सर्व जीवनाश्यक वस्तूंची निर्मिती गावातच झाली पाहीजे. यासाठी ग्रामराज्य ही संकल्पना तुकडोजी महाराजांनी मांडली. त्यांनी 'चल चल अपुल्या गावाला। राहु नको शहराला।' असा संदेश दिला.





गांधीजीने सुध्दा खेडयाकडे चला असा संदेश दिला. त्यासाठी व्यक्तीगत, आध्यात्मिक आणि राजकीय स्वातंत्र्याचा विचार मांडून गांधीजीनी रामराज्य संकल्पना मांडली. सत्याग्रह आणि उपोषण या शस्त्राचा वापर आयुष्यभर त्यांनी केला. सर्व कुटुंब ग्राम-राज्य-राष्ट्र विश्वांचे हित ज्यामध्ये अपेक्षित आहे. त्यासाठी जबाबदारीने वागण्याची अपेक्षा करतात. गांधीजीनी सुध्दा सर्वोदयवादी विचार मांडला. सर्वांनी सर्वांसाठी झटावे। सर्वांच्या हितात स्वहित पाहावे। हाच सर्वोदयवादी विचार राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज मांडतात. या दोन महापुरुषांचे विचार प्रत्यक्ष अवलंब केल्यास ग्रामराज्य येऊ शकते. सामुदायिक प्रार्थनेच्या माध्यमातून दोन्हीही महापुरुषांनी सर्वधर्मसमभावाची व प्रेमधर्माची चळवळ जनमाणसात रुजविली. प्रेम आणि मानवता हेच दोन श्रेष्ठ धर्म आहे असे त्यांनी सांगितले. आपण 02 ऑक्टोबर गांधीजीचा जन्मदिवस आंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस तर 30 एप्रिल हा तुकडोजीचा जन्मदिवस ग्रामजयंती म्हणून साजरा केला जातो. कारण गाव हा 'विश्वाचा नकाशा' हे महाराजांना अभिप्रेत होते.

गांधी गितांजली नावाच्या पुस्तकत तुकडोजी महाराजांनी गांधीजींच्या जीवनावर 150 भजने लिहून गांधीजींच्या चौफेर व्यक्तीमत्त्वाचा चौफेर वेध घेतला आहे. गांधीनी आपल्या उभ्या आयुष्यात सत्य, अहिंसा, समता, सत्याग्रह या मूल्यांचा पुरस्कार करून स्वतः जसे निःस्पृह व निःस्वार्थ जीवन जगले. गांधीजींच्या याच मूल्यांचा संदर्भ देत 'सत्य अहिंसा पर मर मिटने। दे निर्भयता मन में। जग-जग चालक पालकदाता अशी आळवणी करतात. अन्याये पीडा न होवो कोणास। न व्हावा मुंगीलाही त्रास। या गांधीजींच्या हिंसाविषयक मूल्यांचा ग्रामगितेत पुनरुच्चार करत समर्थन करतात.

### सेवाग्राम आश्रम व राष्ट्रसंत तुकडोजी

अमरावती गांधीजींना भेटायला म्हणून तुकडोजी महाराज सेवाग्राममध्ये आले आणि महिनाभर राहिले. या दोघांच्या स्नेहांच्या घाग्यातून राष्ट्रभक्तीचे पवित्र वस्त्र विणले गेले.

अमरावती जिल्ह्यात मीशी तालुक्यात सातपुडा पर्वताच्या पायथ्याशी सालबडी नावाचे प्रसिद्ध तिर्थक्षेत्र आहे. तिथे महाराजांनी 5 मार्च 1935 ला महायज्ञ केला. प्रचंड प्रतिसाद मिळाला. त्यानंतर तुकडोजी महाराजांची माहिती बापूंना देण्यात आली होती. त्यातूनच बापू आणि राष्ट्रसंतांच्या सन्नक्ष भेटीचे नियोजन झाले होते. महात्मा गांधींना संतवचनाविषयी आदर होता. संत तुकाराम महाराजांचे काही अभंग त्यांनी इंग्रजीत भाषांतर केले होते. त्यावेळी तुकडोजी महाराजांचे भजन लोकप्रियतेच्या शिखरावर होते. अवघ्या 27 वर्षांचा तरुण राष्ट्रसंत सेवाग्राम आश्रमात दाखल झाला. 14 जुलै 1937 जमनालाल बजाज हे वीर बाबूराव हरकारे, नारायणराव बोडखे अशी मंडळी घेऊन सेवाग्राम आश्रमात दाखल झाली. जमनालाल बजाज यांनी गांधींना राष्ट्रसंताविषयी माहिती दिली. तुम्ही आमच्यासोबत आदिनिवासात थांबा असे सुचविले.

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज सरहद्द गांधींसोबत राहिले. सेवाग्राम आश्रमात ते 13 ऑगस्ट 1938 पर्यंत होते त्यांची ओजस्वी मूर्ती उर्ध्वदृष्टी सेवाकृती सोबत एकतारीवर तल्लीनतेने गायीली जाणारी भजने गांधींना मोहीत करून गेले. महात्मा गांधी त्यांना 'बुवा' म्हणायचे. अनेकजण राष्ट्रसंतांच्या भेटीला याचवे साहजिकच गांधीकडे लोक विचारत असत. तेव्हा गांधीजी लोकाना सांगायचे. "बुवा एखादे देहात मे ग्रामसफाई करते होणे" तुकडोजी महाराजांचा मितव्यय, अपरिग्रह, भजनात तल्लीन होणारी कृती सेवाकृती पाहून गांधींनी त्यांचा मुक्काम बांधविला. राष्ट्रसंत

Principal

सेवाग्राम आश्रमात सूतकटाई करीत होते. त्यांची देवमक्तीला देशभक्तीची दिलेली जोड, स्वावलंबी आचरण गांधीना प्रमावीत करून गेली.

राष्ट्रसंतानी सेवाग्राम आश्रमात राहुन समाजसेवा, सहभोजन, सहकार्य, जातपात न मानने, ग्रामसफाई, सर्वधर्मसमभावाने नित्यक्रम त्यांनी सुरु केले. त्यांच्यातील अशी लक्षणे पाहुन हा एक आपल्याच मार्गावर चालणारा जनकल्याण करणारा अवलिया संत आहे हे गांधीजीनी ओळखले. एकदा राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज भजन तन्मयतेने गात असताना गांधीजीचे मीन व्रत तुटले होते. भजन होते "किस्मत से राम मिला जिनको, उसने यह जगह पायी" राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांच्या भजनाची मोहिनी जबरदस्त होती. गांधीजी त्यांना म्हणत होते की, "महाराज इस भारत देश में सिर्फ धर्म की भाषा करनेवाले बहुत साधु संत हैं। लेकिन पंथ, पक्ष और सभी संप्रदायको इक्कठा करने का मानवता को आवाज देनेवाला कार्य आपही मन से कर रहे हैं। ऐसा विश्वास ही गया।" महात्मा गांधींच्या भेटीला येणाऱ्या देश-विदेशातील लोकांना 'ये हमारे तुकडोजी महाराज हैं। असा परिचय करून देत असत. राष्ट्रसंताचा गांधीनी डॉ. राजेंद्रप्रसाद, पं. नेहरू, सरदार पटेल, लालबहादुर शास्त्री, मौलाना आझाद अशा नामवंत व्यक्तींचा परिचय करून दिला.

सेवाग्राम आश्रमात राज प्रार्थना, भजन योग, जनप्रबोधनात्मक कार्य महाराजांनी केले. "लहर की बरखा" हे पुस्तकही लिहीले. एक महिण्याचा कालावधी संपला. या काळात महात्मा गांधी आणि त्यांच्यातील सहवासाच्या स्नेहसंबंधाची गाठ बळकट होत गेली. महाराज मोझरीत गेले. तेथील भाविकांनी भव्य स्वागत केले. तुकारामदादा, मारोतराव कडींकर, शामराव दादा मोकदम मंडळी हजर होती. गांधीजींच्या सहवासातील सर्व वृत्तांत महाराजांनी त्यांना सांगितला. गांधीजी त्यांच्याविषयी म्हणत "गजब का बूवा है, भजन की ही नहीं, आचरण सहित की भी मोहनी छोड गया। 30 जानेवारी 1948 मध्ये महात्मा गांधीवरती एका माथेफिरुने गोळ्या झाडल्या. त्यांच्या स्मृतीला अभिवादन करण्यासाठी त्यांच्या राजघाट या स्मृतीस्थळासमोर भजन म्हटले. ते भजन होते "पूरी करो कामना बापू को। तबही किरत बडे आपकी।। त्यांनी अनेक भजनाची मालिका लिहीली. आकाशवाणीच्या कार्यक्रमात अनेक भजन म्हटले.

### निष्कर्ष

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज यांनी ग्रामविकास ग्रामोद्धार आणि स्वावलंबनाचा मूलमंत्र समाजाला दिला. तर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी यांनी स्वच्छता स्वदेशी आणि गावातून विकासाचा मंत्र देत विदर्भाच्या भूमितीन स्वराज्याच्या अहिंसक यज्ञाला सुरुवात केली. या दोन्ही महापुरुषांचे विचार समकालीन वाटतात. दोन्ही महापुरुषांनी देशाला महान मूल्ये दिली. या मूल्यांची जपणुक आणि संवर्धन करता आली पाहिजे. नागपूर येथील गांधीबागला ऐतिहासिकता आहे. देशात जेव्हा तणावाचे वातावरण होते. तेव्हा राष्ट्रसंत आठवडाभर येथे मुक्कामी होते. शांतता प्रस्थापित करण्यासाठी वातावरण निर्माण केले. 30 जानेवारी 1963 ला राष्ट्रसंतानी गांधीजींच्या स्मृतीदिनी नागपूरात स्वच्छता केली आहे. 1500 स्वयंसेवकांच्या मदतीने हा तलाव स्वच्छ केला. या ठिकाणी गांधीपुतळा असावा अशी महाराजांची इच्छा होती. वर्तमानात ही इच्छा पूर्ण होताना दिसते.

*(Handwritten Signature)*



संदर्भ ग्रंथ

1. सिंह ब्रिजेश (संपा) : महाराष्ट्र आणि महात्मा गांधी, माहिती जनसंपर्क, महाराष्ट्र शासन, मंत्रालय मुंबई, 2018.
2. गवाणकर रोहिणी : 1942 च्या आंदोलनातील गांधी मार्गातील तरुण, प्रभात प्रकाशन, मुंबई.
3. शिखरे दा. न. : महाराष्ट्रात महात्माजी भाग 10, महाराष्ट्र गांधी स्मारक निधी, पूणे.
4. रक्षक ज्ञानेश्वर : जनकांतीच्या पाऊलवाटा, नाथे प्रकाशन, नागपूर 2017.
5. श्री गुरुदेव : श्री गुरुदेव प्रकाशन विभाग, अमरावती, जानेवारी 2016.
6. रक्षक ज्ञानेश्वर : राष्ट्रसंताची जनचेतना, नाथे प्रकाशन, नागपूर 2001.
7. श्री गुरुदेव (मासिक पत्रिका) : पुण्यतिथी दिवाळी विशेषांक, श्री गुरुदेव प्रकाशन विभाग, अमरावती, 2014.
8. कामडी, खुशालदास : मानवतेचे महान पुजारी : राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज, वत्स विनायक प्रकाशन नागपूर 2016.
9. पिंजरकर, सुलभा : वंदनीय राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे शैक्षणिक तत्वज्ञान, नभ प्रकाशन, अमरावती 2016.



  
Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Boshra



*[Signature]*  
Principal  
Marayanas Rana Mahavidyalaya



## CONTACT FOR SUBSCRIPTION

AJANTA ISO 9001: 2008 OMS/ISSN/ISSN

Vinay S. Hatole

Jalsingpura, Near University Gate, Aurangabad (M.S) 431 004,

Call : 9379260877, 9822620877 Ph: 0240 - 2406877

E-mail : [ajanta5050@gmail.com](mailto:ajanta5050@gmail.com) Website : [www.ajantapublication.com](http://www.ajantapublication.com)





## भारतीय संस्कृतीमधील मुलभूत तथ्यांचे ऐतिहासिक अध्ययन

<sup>1</sup>डॉ. एस. पी. बनसोड

<sup>1</sup>सहयोगी प्राध्यापक,

नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा जि., अमरावती महाराष्ट्र

Received November 05<sup>th</sup>, 2018; Revised November 25<sup>th</sup>, 2018; Accepted December 30<sup>th</sup>, 2018

सारांश :

प्रस्तुत संशोधनामध्ये भारतीय संस्कृतीमधील आधारभूत तथ्यांचे ऐतिहासिक अध्ययन करण्यात आले आहे. भारतीय संस्कृती अनेक प्रकारच्या मुलभूत तथ्यांचे एकत्रीकरण आहे आणि ही तथ्ये आज सुद्धा आपल्या संस्कृतीमध्ये दिसून येतात. कालानुरूप संस्कृतिक प्रतिगमनाची प्रवृत्ती समाजव्यवस्थेमध्ये दिसून येते अपरिहार्य असले तरी ज्या मुलभूत तत्वावर भारतीय संस्कृतीची निर्मिती झाली ती तत्वे आज सुद्धा दृष्टीगोचर होतांना दिसून येतात. शिवाय ज्या बाबी नामशेष होण्याच्या मार्गावर असतांना समाजाच्या बदलत्या जीवनमानामुळे निर्माण झालेल्या समस्यांची सोडवणूक करण्यासाठी या प्राचीन संस्कृतीक तत्वांना पुन्हा प्रस्थापित करण्यात येत आहे ही बाब भारतीय संस्कृतीच्या संबंधनासाठी महत्वाचा पैलू आहे.

संस्कृती व्यापक स्वरूपामध्ये ज्ञान, कला, साहित्य, विचारधारा, सामाजिक धार्मिक प्रथा, नियम आणि अन्य क्षमता आणि सवयी यांचे मिश्रित रूप आहे. या सर्व बाबी व्यक्ती आपल्या समाजाचे अजित करतो. संस्कृती ही एक प्रकारे सामूहिक ज्ञान प्रणाली आहे जी व्यक्तीमध्ये संस्काराची रचना करण्यास मदत करते आणि या संस्काराच्या माध्यमातून व्यक्ती आपल्या व्यक्तिगत आणि सामाजिक जीवनामध्ये आदर्श निर्माण करतो.

प्रत्येक व्यक्तीचा आपला एक सामाजिक सांस्कृतिक परीप्रेक्ष्य असतो ज्यामध्ये तो आपला विकास साध्य करतो. व्यक्ती ज्या समाजामध्ये आणि परिवेशामध्ये जीवन जगत असतो ते त्याचे सांस्कृतीक पर्यावरण असते आणि हे सांस्कृतीक पर्यावरण व्यक्तीच्या विकासात महत्वाची भूमिका पार पाडत असते.

संस्कृती ही समाजाचा आत्मा आहे ती व्यक्तीच्या सामाजिक जीवनाचा प्राण आहे यामध्ये मानवी जीवनाचे विविध क्रियाकलाप, आचार विचार तसेच जे महत्त्वपूर्ण बाबी ज्या मानव समाजामध्ये सार्वत्रिक स्वरूपात असल्या

तरी एका विशिष्ट समाजामध्ये त्या विशिष्ट स्वरूपामध्ये दिसून येतात. त्या विशिष्ट समाजामधील व्यक्ती आपल्या जीवनामध्ये त्या उदात्त गुणांवर सर्वाधिक भर देतात कारण हे गुण त्यांच्या समाजाची अमूल्य बाब आहे.

संस्कृती व्यक्तीला संस्कारीत करते आणि या संस्कारामुळे व्यक्ती सामान्य कडून असामान्याकडे वाटचाल करतो असतो. व्यक्ती आणि समाजाचा सर्वांगीण विकास त्यांच्या संस्कृतीमध्ये निहित असतो आणि ही संस्कृती त्यांच्या विकासाची ओढाख असते.

संस्कृती आणि संस्कार हे दोन्ही शब्द परस्पर संबंधित आहेत. संस्कृतीला साध्य आणि संस्काराला साधन मानल्या जाते. संस्कृतीमुळे जीवनाच्या पूर्णत्वाच्या बोध होतो. संस्कार एक विधे आणि विधान आहे, जे मनुष्य जीवनाला पूर्णत्वाकडे घेऊन जाते. यावरून स्पष्ट होते की, संस्कृती ही संस्काराचे संगठन आहे.

यासंदर्भात डॉ. विद्यानिवास मिश्र यांचे विधान महत्त्वपूर्ण आहे त्यांच्या मते, "संस्कृति एक प्रकार की संस्कारात्मक परिणति हे वस्तु हो, मनुष्य हो, मनुष्य का कोई



व्यवहार हो, सबका विशिष्ट उद्देश्य से जब परिष्कार किया जाता है या परिष्कार की संकल्पना की जाती है, तो वह वस्तु, वह मनुष्य या उसका व्यवहार सभी सुसंस्कृत हो जाते हैं" संस्कृतीची रचना व्यक्तीकडून होते हे जेवढे सत्य आहे तेवढेच संस्कृती व्यक्तीची रचना करते ही बाब सुध्दा सत्य आहे.

### संस्कृतीची संकल्पना :

संपूर्ण विश्वामध्ये ज्या बाबी सर्वोत्तम म्हणून ओळखल्या जातात त्या सर्वोत्तम बाबीशी व्यक्तीचा परिचय करून देणे म्हणजे संस्कृती होय. संस्कृती शारीरिक आणि मानसिक क्षमतांचे प्रशिक्षण, दृढीकरण आणि विकास अथवा त्यामुळे निर्माण झालेली अवस्था आहे. जी मन, आचार आणि आवडीची परिष्कृती आहे. सामान्यता समाजामधील सर्व प्रकारचे साहित्यिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, नैतिक, अध्यात्मिक तसेच कलात्मक विचार आणि कार्यकलाप यांना संस्कृतीच्या अंतर्गत सहभागी करण्यात येते.

व्यक्ती एक सामाजिक प्राणी असून व्यक्तिगत आणि सामाजिक प्रगतीसाठी तो सतत प्रयत्न करीत असतो तसेच आपल्या विचारांच्या माध्यमातून तो स्वतःला, परिवाराला, समाजाला, समुदायाला, देशाला आणि संपूर्ण विश्वाला कल्याणाच्या मार्गाकडे अग्रसर करण्याचा प्रयत्न करतो. त्याचे नविन विचार आणि शारीरिक, भौतिक आणि अभौतिक जगाची निर्मिती करण्यासाठी प्रवृत्त करतात. इतिहासाच्या आरंभापासूनही व्यक्ती या कर्तव्याचे पालन करून स्वस्थ परंपरांची निर्मिती करीत आला आहे. व्यक्तीचे विचार आणि त्यांवर स्थापित करण्यात आलेली परंपरा, विशिष्ट संस्कृतीला जन्म देते आणि त्याच्या विकास करत. थोडक्यात कोणत्या देशातील, समुदायातील, अथवा समाजातील विशिष्ट पुरुषांचे विचार, कार्य, आचार, व्यवहार आणि त्यांच्याकडून स्थापित परंपरा त्या देशाच्या संस्कृतीची निर्माती करत असते. सामान्यता भौगोलिक दृष्टीने विविध प्रदेशांमध्ये राहणा-या व्यक्तींच्या प्रवृत्तीमध्ये सुध्दा एक प्रकारची समानता असते. या प्रदेशांमध्ये राहणा-या व्यक्तीमध्ये प्रवृत्तीची ही एकता दिसून येते.

संस्कृतीचे मुलभूत तत्त्व सर्व ठिकाणी आणि कालखंडांमध्ये समान भावनांच्या माध्यमातून अनुप्राणित होतात परंतु कालखंड आणि ठिकाण यांच्या विभोजनेमुळे त्यांच्यामध्ये भिन्नता दिसून येते. अशा प्रकारे संस्कृतीमध्ये वैशम्य दिसून येते विभिन्न देश आणि समूहांचे राहणीमान आणि आचार विचार विभिन्न सांस्कृतिक परंपरांना स्थापित

करीत असते. तात्पर्य कोणत्याही देशातील समुदाय अथवा समाजामधील विशिष्ट व्यक्तीचे विचार, आचार व्यवहार, कार्य आणि त्यांच्याकडून स्थापित परंपरा ही त्या देशाची आणि समाजाची संस्कृती होय.

### संस्कृतीमधील आधारभूत तथ्य :

- व्यक्ती आपल्या आवडी निवडी सामाजिक आवडी निवडी नुसार निश्चित करतो यावरून स्पष्ट होते की, संस्कृती व्यक्ती आणि समाज यांच्यामधील सर्वकालीन परस्पर संबंध आहे.
- संस्कृती ही मानवी वृत्ती, व्यक्तीचे राहणीमान, आचार विचार, शिष्टाचार, परंपरागत संस्कार आणि जीवन पध्दतीचे एकत्रित प्रतीक आहे.
- संस्कृतीचा संबंध व्यक्तीच्या भूतकाळाशी, त्यांच्या वर्तमानाशी आणि भविष्यकालीन जीवन पध्दतीशी असतो. याला व्यक्तीच्या श्रेष्ठ परंपराशी असलेली त्यांची निष्ठा सुध्दा म्हणता येते जी व्यक्तीच्या वर्तमान व्यवस्थेला अनुशासित करते आणि भविष्यकाळाला सर्वमंगल भावनांच्या माध्यमातून अनुप्राणित करते.
- संस्कृतीची निर्माता मनुष्य आहे आणि मनुष्याची रचना संस्कृती करत असते. मनुष्य आपल्या महान रचनात्मक कार्य आणि विचारांच्या माध्यमातून सामाजिक परिप्रेक्ष्यामध्ये संस्कृतीच्या तत्त्वाची वृद्धी करत असतो. मनुष्याच्या या योगदानाला समाज आपली स्विकृती आणि श्रद्धा अर्पण करत असतो. अशाप्रकारे मनुष्य संस्कृती आणि समाज यांचा नियमित संबंध आहे त्यांचा विकास परस्परांवर निर्भर आहे.
- संस्कृतीचे प्रथम आणि अंतिम ध्येय जीवनाच्या विकासाकरीता आणि प्रगतिकरीता अनुकूल वातावरण निर्माण करणे आहे. ही सार्वजनिक हिताची मानवीदृष्टी आहे जी राष्ट्रीय जीवनाची निर्माती करत असते.
- संस्कृतीचा सामाजिक जीवनाशी घनिष्ठ संबंध आहे. जेव्हा मनुष्याचा एक समूह अथवा समाज एकाच पध्दतीने काही करीत असेल, एकाच बाबीवर विश्वास ठेवत असेल, एकाच प्रकारचे आदर्श संपोर ठेवत असेल, आपल्या पूर्वजांच्या कार्यांचा आदर करीत असेल आणि त्यांच्या कार्यांचा गौरव करीत असेल तर या बाबी संस्कृतीमध्ये रूपांतरित होतात. यामुळेच संस्कृतीला मनुष्याच्या सामाजिक जीवनाचा प्राण म्हणून संबोधण्यात आले आहे.





ज्यामुळे भारतीय समाजामध्ये अराजकता आणि अव्यवस्था निर्माण झाली नाही संयुक्त परिवाराच्या संकल्पनेने भारतीय समाजाला संगठित ठेवण्याचे कार्य केले आहे ते वाखाण्णायजोगे आहे.

- भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये प्राचीन काळापासून अनेक धर्म आणि विचार आहेत या धर्मांची आणि विचारांची विचारधारा यामध्ये परस्पर मतभेद आहे परंतु सर्व धर्म आणि सर्व विचार कर्म सिध्दांतावर विश्वास ठेवतात. या धार्मिक मतभेदानंतर सुध्दा त्यांच्यामध्ये काही प्रमाणात का होईना एकता होती.
- भारतीय समाजव्यवस्थेच्या संपूर्ण इतिहासामध्ये सामाजिक आणि सांस्कृतिक एकता टिकून राहलेली आहे याच एकतेमुळे भारतामध्ये वेळोवेळी होणारे राजकीय परिवर्तनामुळे भारतीय संस्कृती अप्रभावीत राहलेली आहे शिवाय जी प्रजाती विदेशामधून भारतामध्ये आली ती सुध्दा भारतीय संस्कृतीमध्ये काही प्रमाणात समाविष्ट झालेली आहे.

#### निष्कर्ष :

भारतीय संस्कृतीमध्ये प्राचीन काळापासून विविध मुलभूत स्वरूपाची तथ्ये होती ती त्यांच्या आधारावरच भारतीय संस्कृतीचा सतत विकास होत गेला परंतु संस्कृतीच्या विकासाबरोबरच काही प्राचीन बाबी नामशेष झाल्या आहेत आणि काही होण्याच्या मार्गावर आहे याला भारतीयांचा जगाशी झालेला संपर्क, दळणवळणाच्या साधनांचा मोठ्या प्रमाणात झालेला विकास, मिडीच्या माध्यमातून जवळ झालेले जगा या बाबी जबाबदार आहेत त्यामुळे निर्माण झालेली भारतीय संस्कृतीमधील दरी आणि त्याचे वर्तमान भारतीय समाजव्यवस्थेवर पडत असलेले प्रभाव याची प्रचित आज समाजाला दिसून येत आहे. एकेकाळी आपुर्वेदाच्या माध्यमातून होणारे उपचार त्यासाठी लागणार वेळ विचारात घेऊन ऑलोपॅथीला महत्व आले परंतु नंतर ऑलोपॅथीचे शरीरावरील दुष्परिणाम विचारात घेता आज भारतीय समाज पुन्हा आपुर्वेदाकडे वळला आहे. अशा किती तरी बाबी आहे ज्या काळाच्या ओघात नामशेष होण्याच्या मार्गावर असतांना त्यांना नवसंजिवनी या आधुनिक युगामध्ये प्राप्त झाली आहे. तालपर्यंत हेच की, भारतीय संस्कृती ही अत्यंत प्राचीन अशी अभेद्य संस्कृती असून या संस्कृतीच्या माध्यमातून सामाजिक कल्याण, सामाजिक विकास, आणि वैश्विक शांती आणि वैश्विक कल्याणाला हातभार लावण्यात महत्त्वाची भूमिका आहे अशा स्थितीत भारतीय संस्कृतीमधील प्राचीन मुलभूत

तथ्यांचे संगोपन करणे ही वर्तमान व्यवस्थेची गरज निर्माण झाली आहे त्यासाठी समाजामधील प्रत्येक घटकाने त्याकडे विशेष लक्ष देण्याची नितांत गरज आहे.

#### संदर्भ :

सिंह, दिनकर रामधारी. संस्कृति के चार अध्याय. इलाहाबाद सिंह एवं यादव. प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृती. आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन.

कृष्णकुमार. भारतीय संस्कृती के आधार तत्त्व. दिल्ली : मिनाक्षी प्रकाशन.

दुबे एच. एन. भारतीय संस्कृती. इलाहाबाद विद्यालंकार सत्यकेतु. भारतीय संस्कृती और उसका इतिहास. दिल्ली.



*(Signature)*  
Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera



*(Signature)*  
Librarian  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera





## प्राचीन भारतीय सामाजिक मूल्यांचे ऐतिहासिक अध्ययन

<sup>1</sup>डॉ. एस. पी. बनसोड

<sup>1</sup>सहयोगी प्राध्यापक,

नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा जि. अमरावती महाराष्ट्र

Received: Feb 09, 2019; Revised: Feb 28, 2019; Accepted: Mar 25, 2019

### Article Info

ISSN: 2348-4349  
Volume -6, Year-(2019)  
Issue-01  
Article Id:-  
KIJAHS 2019/V-6/ISS-1/A26

© 2019 Kaav Publications.

### Abstract

प्रस्तुत संशोधनामध्ये प्राचीन भारतीय सामाजिक मूल्यांचे ऐतिहासिक अध्ययन वर्तमान परिप्रेक्ष्याच्या संदर्भात करण्यात आले आहे. सामाजिक मूल्य हे समाजाच्या गरजा आणि आवश्यकता यांच्या आधारावर समाज स्वतः त्याचा स्विकार करित असतो यासंदर्भात नियम अथवा कायदा याचा आधार घेऊन कोणतेही सामाजिक मूल्य रूजवता येत नाहीत त्याकरीता समाजाच्या अंतर्मनाची तयारी आवश्यक असते. कोणत्याही समाजाची सामाजिक व्यवस्था ही मूल्य आधारीत आहे नियम आणि कायद्याच्या आधारावर व्यक्तीच्या वर्तनाला लगाम घालता येत असला तरी त्यामध्ये जोरजबरजस्ती करून सामाजिक मूल्यांचे रोपण करता येत नाही ही वस्तुस्थिती आहे. प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्थेपासून ही सामाजिक मूल्य एका पिढीकडून दुस-या पिढीकडे हस्तांतरित होत आलेली आहेत. आजच्या आधुनिक भारतीय समाजामध्ये सुद्धा आमच्या प्राचीन भारतीय समाजामधील काही सामाजिक मूल्य प्रत्यक्ष अप्रत्यक्षरीत्या दृष्टीगोचर होताना दिसून येतात आणि या सामाजिक मूल्यांच्या आधारावर आजची समाज व्यवस्था टिकून आहे.

सामाजिक मूल्य व्यक्तीच्या वर्तन व्यवहारावराला प्रभावित करतात. सामाजिक मूल्यांच्या अनुसारच व्यक्ती व्यवहार करतांना दिसून येतात. सामाजिक मूल्य हे व्यक्ती आणि समाजाच्या व्यवहाराला नियंत्रीत करित असतात. ज्यामध्ये आई-वडिलांचा आदर हे गुण प्राचनी काळापासून आजतयागत भारतीय समाजव्यवस्थेमध्ये दिसून येत आहेत. अशाच प्रकारची कार्य हे सामाजिक मूल्य होत जे व्यक्ती आणि समाजाच्या व्यवहाराला निर्देशित आणि नियंत्रीत करित असतात. परंतु समाजामधील प्रत्येक व्यक्ती सामाजिक मूल्यांच्या अनुरूपच कार्य करेल असे म्हणता येणार नाही कारण प्राचीन काळातसुद्धा समाजामध्ये विविध प्रकारचा

विरोधाभास दिसून येतो परंतु सामाजिक मूल्य सामाजिक नियंत्रणाचे महत्वपूर्ण कार्य करते हे सुद्धा तेवढेच खरे आहे.

समाजामधील स्वीकृत व्यवहार ज्यांना सर्वाधिक महत्व दिल्या जाते त्यांना सामाजिक मूल्य म्हणून संबोधण्यात येते. सामाजिक मूल्य हे समाजाचे आदर्श आहे त्यावर समाजामधील सदस्य विश्वास ठेवतात, या मूल्यांच्या प्रती श्रद्धा ठेवतात आणि या मूल्यांच्या अनुरूप कार्य करण्यासाठी तत्पर राहतात. कधी कधी ही सामाजिक मूल्यांच्या संदर्भातील तत्परता निर्धारित सिमेच्या पुढे जाऊन व्यक्ती या सामाजिक मूल्यांचे संरक्षण करण्यासाठी आपल्या प्राणाची आहुती देण्यास सुद्धा तयार होतात प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्थेमध्ये



अशा प्रकारचे संदर्भ दृष्टिगोचर होतात. यावरून स्पष्ट होते की, प्रत्येक व्यक्ती आणि समाजासाठी सामाजिक मूल्यांचे सर्वाधिक महत्त्व आहे.

सामाजिक मूल्यांमध्ये व्यक्ती अथवा समाजाची अनुभूती, विचार, क्रिया, गुण, विषय, व्यक्ती, समाज, उद्देश आणि साधने यांचा समावेश होतो. प्राचीन भारतामध्ये विविध कालावधीमध्ये वेगवेगळे मूल्य राहलेले आहे. त्यामध्ये ऋग्वेदिक काळामध्ये संयुक्त कुटुंब प्रणाली, एक वर्गीय समाज व्यवस्था होती परंतु उत्तर वैदिक काळामध्ये वर्णव्यवस्थेचा उदय झाला आणि कालांतराने जाती प्रथा, अस्पृश्यता या बाबींनी समाजामध्ये प्रवेश केला. मुस्लिम आक्रमणानंतर पर्दाप्रथा आणि बाल विवाह या बाबी उदयास आल्या.

प्राचीन भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये आश्रम व्यवस्थेपासून बाल विवाहा पर्यंत अनेक सामाजिक मूल्य विद्यमान होते या मूल्यांचे त्या विशेष काळामध्ये महत्त्व राहले असेल कारण कोणत्याही मूल्याला महत्त्वहीन संबोधणे योग्य होणार नाही तात्कालीन परिस्थितीनुसार ती मूल्य अस्तित्वात आली आणि टिकून राहली ती सदासर्वकाळ तशीच टिकून राहतील आणि त्याचे महत्त्व सर्वकालावधीमध्ये सारखेच राहिल हे म्हणता येत नाही अशा स्थितीत कोणत्याही सामाजिक मूल्याची सार्वभौमिकता स्थापित करणे योग्य होणार नाही कारण कोणतेही एक सामाजिक मूल्य ज्याला आपण सर्वाधिक प्रमाणात मान्यता देतो परंतु काही कालावधीनंतर सामाज्यामध्ये या मूल्यांचे तेवढेच महत्त्व राहिल याची शाश्वती देता येणार नाही. परंतु सामाजिक मूल्य ही एक विस्तृत संकल्पना आहे आणि मूल्यांचा आदर्शाशी घनिष्ठ संबंध असतो. त्यामुळे प्राचीन भारतामध्ये विद्यमान सामाजिक मूल्य तात्कालीन सामाजिक सरंचनेचे निर्णायक तत्व राहलेले आहेत.

प्राचीन भारताच्या प्रमुख सामाजिक मूल्यामध्ये संयुक्त कुटुंब व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, जाती व्यवस्था, संस्कार, पुरूषार्थ आणि धर्म यांना प्रामुख्याने सहभागी केलेले आहे आणि या मूल्यांपैकी अपवादात्मक परिस्थितीत काही मूल्यांच्या व्यतीरीक्त अन्य मूल्यांना वर्तमान भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये काही आवश्यक परिवर्तनाच्या स्वरूपात लागू करून पाहता येते. मानवाची मानसशास्त्रीय आणि सामाजिक गरज विचारात घेऊन या मूल्यांची आरंभ करण्यात आला असेल आणि त्यांचा उद्देश सामाजिक व्यवस्था आणि संगठन यामध्ये स्थापित प्रस्थापित करणे होते. यामुळे समाजाची प्रगती झाली आणि त्यामुळेच आर्थिक व्यवस्था सुध्दा सुदृढ झाली त्यामुळे समाज

समृद्ध होण्यास मदत झाली. सामाजिक मूल्यामुळेच साहित्य आणि संस्कृतीची सुरक्षा झाली आणि तीच्या प्रगतीला हातभार लागला आहे.

प्राचीन भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये विद्यमान सामाजिक मूल्यांना पुढीलप्रमाणे वर्गीकृत करण्यात येते. त्यामध्ये प्रामुख्याने आर्थिक मूल्य, नैतिक मूल्य, कला विषयक मूल्य, धार्मिक मूल्य आणि तार्किक अथवा सैध्दांतीक मूल्य यांचा समावेश होतो.

**प्राचीन भारतातील प्रमुख सामाजिक मूल्य :**

वर्ण व्यवस्था भारतीय संस्कृतीचा सामाजिक मुलाधार आहे. वर्णव्यवस्था हिंदू सामाजिक जीवनाच्या दोन व्यवस्थेचे नाव आहे त्यामध्ये प्रथम वर्ण व्यवस्था आणि द्वितीय आश्रम व्यवस्था. यामध्ये वर्णव्यवस्थेच्या अंतर्गत वर्णासाठी निर्धारित आश्रम व्यवस्था. आपल्या वर्णाच्या नियमाचे पालन करणे या बाबी महत्त्वाच्या होत्या. सामाजिक व्यवस्थेला प्रभावीपणे कार्यन्वीत होण्यासाठी श्रम विभाजन करणे आवश्यक मानल्या जाते आणि योग्य प्रकारचे श्रम विभाजन नैसर्गिक स्वरूप, गुण आणि प्रवृत्ती या आधारवरच शक्य आहे. यासंदर्भात पी. वी. काणे यांनी स्पष्ट केले की, प्राचीन काळामध्ये वर्ण शब्दाचा उपयोग रंग भेदाला स्पष्ट करण्यासाठी केला जात होता. त्यानंतर वर्णांचे विभाजन प्रमुख चार भागांमध्ये करण्यात आले आणि हे वर्ण सामाजिक व्यवस्थेचे स्तंभ बनले. तात्कालीन सभ्यता आणि संस्कृतीमध्ये कार्य विभाजनाची निर्मिती झाली आणि त्यामुळे विविध जातीची उत्पत्ती झाली होती.

सामाजिक विकासाच्या संतुलनासाठी सामाजिक संगठनाच्या अंतर्गत आश्रम व्यवस्थेची निर्मिती करण्यात आली होती. त्यामध्ये चारही पुरुषार्थांची पूर्तता करण्यासाठी अशी व्यवस्था करण्यात आली होती. त्यामध्ये ब्रह्मचार्यांमध्ये ज्ञानार्जन, गृहस्थाआश्रमांमध्ये गृहस्थ जीवन जगणे, वानप्रस्थ आश्रमांमध्ये अलिप्त राहणे आणि सन्यासामध्ये वैराग्यी होणे अशी व्यवस्था होती. तात्कालीन परिस्थितीमध्ये आश्रम व्यवस्था आणि त्यामधील नियमांचे पालन करणे हे सामाजिक मूल्य होते. परंतु समाजाचा जसजसा विकास होत गेला दळणवळणाच्या साधनांचा विकास होत गेला आणि पाश्चात्य संस्कृतीच्या प्रभावामुळे आश्रम व्यवस्थेमधील सामाजिक मूल्यांच्या ठिकाणी नवीन व्यवस्थेच्या अनुशंगाने सामाजिक मूल्यांचे स्थान झाले आहे.



मानव जीवनाला संगठित, अनुशासित आणि सुसंस्कृत करण्यासाठी संस्कारांची व्यवस्था करण्यात आली होती त्यामुळे व्यक्ती समाजामध्ये राहून सखमय जीवन व्यतीत करू शकेल यामुळे व्यक्ती आणि समाज या दोहोचे हित साध्य होत होते ही परंपरा आजसुध्दा अस्तित्वात आहे. आज सुध्दा संस्कारांचे रोपन करण्यासाठी विविध माध्यमांचा वापर आधुनिक समाज व्यवस्थेमध्ये होतांना दिसून येतो. त्यामध्ये प्रामुख्याने बालकाच्या जल्मापूर्वीचे संस्कार, बाल्यावस्थेमधील संस्कार, अभ्यासाच्या संदर्भातील संस्कार, गृहस्थ आश्रमामधील संस्कार, वानप्रस्थ संस्कार, सन्यासाश्रम संस्कार आणि अंतिम संस्कार यांचा समावेश होतो यापैकी बहुतांश संस्कार आजसुध्दा अवलंबले जातात प्रत्येक सामाजिक व्यवस्थेमध्ये त्याचे स्वरूप मात्र भिन्न आहे.

परिवार ही एक सामाजिक संस्था म्हणून हळू हळू तीचा विकास झालेला आहे व्यक्तीच्या सामाजिक आणि मानसशास्त्रीय गरजांची पूर्तता करणे हे प्रमुख कार्य परिवाराच्या माध्यमातून होते. याशिवाय विविध धार्मिक आणि सामाजिक कार्य हे सुध्दा त्याचे कार्य आहे. प्राचीन भारतीय व्यवस्थेमध्ये मुख्यतः संयुक्त कुटुंब पध्दती होती परंतु प्रत्येक काळामध्ये या कुटुंब व्यवस्थेची वेगळी वैशिष्ट्ये दिसून येतात. प्राचीन आर्य व्यवस्थेमध्ये संयुक्त कुटुंब प्रथा होती तीचा संकेत वैदिक युगाशी असल्याचे दिसून येते. पूर्वं वैदिक काळामध्ये पितृसत्ताक कुटुंब प्रणाली होती परंतु उत्तर वैदिक काळामध्ये पितृसत्ताकाचे अधिकार कमी होऊन संयुक्त कुटुंबाच्या विघटनाचे काही पुरावे मिळतात या विघटनाचे प्रमुख कारणे म्हणजे आर्य समुदायाचा प्रसार झाला त्यामुळे कुटुंबातील विविध सदस्य देशातील विविध भागामध्ये गेले तसेच कौटुंबिक भांडणे यामुळे कुटुंबातील सदस्य संपत्तीचे विभाजन करून स्वतंत्र राहणे पसंत करीत होते. प्रामुख्याने हिंदू कुटुंब हे पितृसत्ताक होते कुटुंबामध्ये अधिकार, जबाबदारी आणि आदर यामध्ये सर्वाधिक महत्वाचे स्थान वडिलांना होते. वडिल कुटुंबाच्या प्रती आपल्या कर्तव्यांचे पालन करीत असे पालन पोषण करीत असे शिक्षण आणि विवाहाची व्यवस्था करीत असे अशाप्रकारे वडिलाबरोबरच आईचे सुध्दा भारतीय कुटुंब व्यवस्थेमध्ये महत्वाचे स्थान राहलेले आहे. कुटुंबाचा प्रारंभ विवाहाच्या माध्यमातून होतो आणि विवाहाचे मुख्य कारण संतान उत्पत्ती आहे. भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये मुलाचे स्थान सर्वाधिक होते त्यामध्ये तीन ऋणाच्या ऋत्पत्तीनेसुध्दा मुलाला महत्त्व दिले आहे. कुटुंब व्यवस्थेच्या संदर्भातील बहुतांश

सामाजिक मूल्य आजसुध्दा दिसून येतात काही कौटुंबिक सामाजिक मूल्यांमध्ये काळानुरूप बदल झालेले असले तरी त्याचे महत्त्व आधुनिक भारतीय समाजामध्ये दुर्लक्षित होऊ शकत नाही.

भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये विधवा स्त्रीयांची सामाजिक स्थितील प्राचीन काळामध्ये इतकी वाईट नव्हती जीतकी ती नंतरच्या काळामध्ये निर्माण झाली. विधवा स्त्री आपल्या इच्छेनुसार आजीवन विधवा राहून संयम आणि सदाचाराचे जीवन व्यतीत करू शकत होती. ती पुनर्विवाहाच्या प्रयेचा आश्रय घेऊन पुन्हा विवाहित होऊन जीवन व्यक्तीत करू शकत होती.

भारतीय परिवेशामध्ये प्राचीन काळापासून चरीत्र निर्माणामध्ये शिक्षणाला सर्वाधिक महत्त्व दिलेले आहे. त्यासाठी विशेष शिक्षण प्रणाली आणि शिक्षण संस्थांची योजना प्राचीन काळामध्ये होती. आश्रम व्यवस्थेमध्ये राहून ब्रह्मचार्यांचे पालन करून या शिक्षण संस्थामध्ये आणि विद्यापीठांमध्ये राहून शिक्षण प्राप्त केले जात होते. ज्ञानाची प्रापत करण्यासाठी शिक्षण याव्यतीरीक्त चारीत्र्य निर्माणासाठी शिक्षण याला सर्वाधिक महत्त्व देण्यात आले आहे. शिक्षणाला प्राचीन काळापासूनच प्रकाशाचा स्रोत म्हणून संबोधण्यात येत होते ज्यामुळे व्यक्ती विविध क्षेत्रामध्ये सत्य मार्गाचे प्रदर्शन करेल. प्राचीन भारतीय विद्यार्थ्यांना प्राचीन भारतीय शिक्षणाचे अध्ययन करणे आवश्यक होते. शिक्षण प्राचीन भारतीय संस्कृतीचा आत्मा मानला जात होता. वैदिक काळामध्ये प्रत्येक व्यक्तीला वैदिक शिक्षण दिले जात होते. या काळामध्ये स्त्री शिक्षणावर विशेष भर देण्यात येत होता. शिक्षणाच्या वेळी मुला सोबतच मुलीचा सुध्दा उपनयन संस्कार होत असे. सूत्रकालावधीमध्ये पुस्तकीय शिक्षणाचे प्रचलन नव्हते विद्यार्थी गुरूगृही राहूनच विद्याभ्यास करीत असत. भारतातील प्रमुख भारतीय शिक्षण संस्थामध्ये तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी, विक्रमशिला, काशी, ही शिक्षण केंद्र प्रसिध्द होती.

**निष्कर्ष :**

प्राचीन काळापासून भारतीय समाज व्यवस्थेला सामाजिक मूल्यांची जोड लाभलेली आहे. व्यक्तीचा सर्वांगीण विकास करण्यासाठी सामाजिक व्यवस्थेच्या अंतर्गत विविध प्रकारच्या संस्थांची स्थापन प्राचीन समाज व्यवस्थेमध्ये झालेली आहे या व्यवस्थेच्या माध्यमातून विशिष्ट सामाजिक मूल्यांचा विकास व्यक्तीमध्ये करावा जेणेकरून सामाजिक व्यवस्था षोड्य पध्दतीने कार्यन्वीत होऊ शकेल ही त्यामागील हेतू होता

तोच हेतू आजच्या सामाजिक व्यवस्थेमध्ये सुध्दा आम्हास दिसून येते आजच्या सामाजिक व्यवस्थेमध्ये सामाजिक मूल्यांच्या अंतर्गत प्राचीन काही सामाजिक मूल्यांचा अंतर्भाव झालेला आहे आज भारतीय व्यवस्थेमध्ये सामाजिक मूल्यांचा आधार भारतीय संविधान आहे तरी सुध्दा ज्या बाबी लिखित स्वरूपामध्ये नाही अथवा त्यासंदर्भात काही नितीनिर्देश नाहीत तरी सुध्दा प्रत्यक्षामध्ये ती मूल्य अमलात आणली जातात त्या प्राचीन मूल्यांच्या आधारावर आजची समाज व्यवस्था टिकून आहे.

संदर्भ ग्रंथ :

१. काणे पी. वी., धर्म शास्त्र का इतिहास भाग १ ते ५ लखनऊ
२. पाण्डेय विमलचंद्र, (१९६०), भारत वर्ष का सामाजिक इतिहास, इलाहाबाद
३. शर्मा रामशरण, (१९७५), पूर्वमध्यकालीन भारत मे सामाजिक परिवर्तन, दिल्ली.
४. अवस्थी शशि, (१९९३), प्राचीन भारतीय समाज, दिल्ली.
५. मिश्र जय शंकर, (२००६), प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पटना
६. नयन राजीव, (२००५), भारतीय समाज और संस्कृती, वाराणसी.
७. जैन के. सी. प्राचीन भारत की सामाजिक एवं आर्थिक संस्थाएँ, भोपाल.
८. अहिरवार रामकुमार (२००५), सामाजिक संरचना के विविध चरण, जयपूर



Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera



Librarian  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera



# INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED & MULTILINGUAL STUDIES

UGC Approved Research Journal (Sr. 47674)

Volume V  
Issue II

ISSN : 2394-207X (Print)  
IMPACT FACTOR : 4.205

February 2018



  
Principal  
Narayanrao Rana Mahavidyalaya  
Badnera

Chief Editor  
Dr. V. H. Mane

Executive Editor  
Prof. M. P. Shaikh

[www.ijmms.in](http://www.ijmms.in)

Email : [ijmms14@gmail.com](mailto:ijmms14@gmail.com)

**VOLUME-V, ISSUE-II**

**ISSN (Print): 2394-207X**

**IMPACT FACTOR: 4.205**

**INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES**

---



**INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL  
STUDIES**

**UGC Approved Research Journal (Sr. 47674)**

**Editors: Dr. V. H. Mane, Prof. M. P. Shaikh**

**Language: Multilingual**

**Published by**

**INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL  
STUDIES**

**Sneh Apartment,  
Flat No. 001, Samarth Nagar, New Sangvi,  
Pune- 411027**

**Copyrights: Editors 2014**

**All rights reserved**

**ISSN: 2394-207X (Print)  
IMPACT FACTOR: 4.205**

**VOLUME-V, ISSUE-II**

**February -2018**



## अनुक्रमणिका

अ.क.	शोध निबंधाचे नाव	नाव	पान नंबर
1.	शिवकालीन आरमार व्यवस्था	प्रा. चारुशिला उत्तम लोखंडे	1-5
2.	शिवकालीन समाज व्यवस्था - प्रोसेसुरल प्रतिमानानुसार अन्वयार्थ	प्रा. डॉ. जाधव बबन भिवसेन	6-12
3.	हिंदवी स्वराज्य स्थापनेत शहाजी भोसले यांचे योगदान	प्रा. डॉ. संतोष पां. बनसोड	13-15
4.	सातारचे प्रतापसिंह महाराज व ग्रँट डफ संबंध	प्रा.डॉ.आर.व्ही.देरे	16-18
5.	छत्रपती शिवाजी महाराजांची लष्करव्यवस्था	प्रा. लवडे अर्चना बाळासाहेब	19-20
6.	मराठेकालीन जमीन महसूल पद्धती : एक अभ्यास	प्रा. देवकाते बी. एन.	21-24
7.	रामचंद्र गणेश कानडे १७६८ ते १७८०	गाभणे हेमा गजानन	25-29
8.	मराठा सरदार ग्वाल्हेरचे शिंदे	प्रा.डॉ.रघुराज मुगुटराव कुरुमकर	30-31
9.	अलिबागचे आंगे घराण्याचा मराठा आरमारातील विकास व विस्तार	कविता कारभारी मते	32-34
10.	फलटणचे लोकदैवत श्रीराम मंदिराचे ऐतिहासिक महत्व	प्रा.डॉ.संतोष तुकाराम कदम	35-38
11.	सरलष्कर सिदोजी नाईक निंबाळकर यांच्या मोहिमा	प्रा.डॉ.एस.पी.शिंदे	39-41
12.	'स्वराज्य स्थापनेत मराठा सरदारांचे योगदान'-पवार घराणे	प्रा. सौ. श्रेया संजीव दाणी	42-43
13.	शिवकालीन व्यवसाय व व्यापार	श्री. जगताप बा.भि.	44-46
14.	शिवाजी महाराजांच्या न्यायनितीचे गुणविशेष- एक अभ्यास	प्रा.तानाजी जाधव	47-49
15.	छत्रपती शिवाजी महाराज आणि सिद्दी	सौ. कविता सु. पाटील	50-52
16.	सरदार गोदाजी जगताप व सरदार सूर्यराव काकडे यांचे स्वराज्य स्थापनेतील योगदान	प्रा. डॉ. देविदास वायदंडे	53-55
17.	स्वराज्य स्थापनेत गुप्तहेर खात्याचे योगदान	प्रा.डॉ.संजय जिभाऊ पाटील प्रा.संजय बाबुराव शिंगाणे	56-58
18.	शिवकालीन मंत्रिमंडळ व मंत्रालय	प्रा. श्री. आर. के. सुर्यवंशी	59-64
19.	मराठेकालीन आरमार : एक अभ्यास	प्रा.डॉ.अशोक कहुभाऊ कानडे	65-67
20.	मराठा सरदार इंदूरचे मल्हारराव होळकर	प्रा.डॉ.मनिषा माणिकराव जगदाळे	68-69
21.	स्वराज्य निर्माण कार्यातील बहिर्जी नाईक व त्यांच्या गुप्तहेर खात्याचे योगदान	प्रा. निळे एस व्ही.	70-73
22.	स्वराज्य स्थापनेत मराठा सरदारांचे योगदान	प्रा.महेश वसंत कुलकर्णी	74-75
23.	मराठेकालीन तोफखाना व तोफगोळ्यांच्या अभ्यास	डॉ.नंदकुमार ज्ञानोबा जाधव	76-78
24.	मराठी आरमारी सत्तेचा जनक-छत्रपती शिवाजी महाराज	डॉ.विरुदेव महादेव कोकरे	79-82

## हिंदवी स्वराज्य स्थापनेत शहाजी भोसले यांचे योगदान

प्रा. डॉ. संतोष पां. बनसोड

इतिहास विभाग प्रमुख,

नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा जि. अमरावती

भारतातील हिंदवी स्वराज्याची निर्मिती ही मराठी मुलखाचीच नव्हे तर अखिल भारतीय हिंदूना प्रेरणास्थान राहिली आहे. यादव घराण्याच्या पतनानंतर भारतात हिंदूंची स्वतंत्र अशी सत्ता नव्हती. सर्वत्र मुस्लिम सत्तेचा अमल होता. मुळात भारत हा हिंदूंचा देश असला तरी २४ जुन १२०६ ला स्वतंत्र मुस्लिम सत्तेची स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक याने केली. इ. स. १२०६ ते १५२६ या ३२० वर्षांच्या कालखंडात अनेक घराण्यांनी शासन केले. याच दरम्यान स्वतंत्र हिंदूंची सत्ता विजयनगर येथे स्थापन झाली. या राज्यात हिंदू माणूस सुखावला होता. त्याच्या घरात आर्थिक सुवत्ता होती. स्त्रीया सुद्धा मनसोक्त संचार करित होत्या. मात्र या राज्याच्या पतनानंतर मराठी मानसांची अतिशय वाताहत झाली.

संपुर्ण भारतात मुस्लिम सत्तेचा अमल असतांना या कठिण व प्रतिकूल परीस्थितीत शिवाजी महाराजांनी हिंदवी स्वराज्याची स्थापना केली. या करीता त्यांना अतिशय कष्ट करावे लागले. त्यांनी निर्माण केलेले हिंदवी स्वराज्य हे सामान्य जनतेच्या कल्याणसाठी अतिशय उपयुक्त ठरले. त्यांनी आपल्या स्वराज्यात बतनदार अथवा जहागिरदार यांच्या सुख-समृद्धीचा विचार केला नाही. त्यांनी साडेतीनशे वर्षांपूर्वी आपल्या साम्राज्यातील प्रशासनात निर्माण केलेले दंडक हे आज भारत लोकशाही प्रधान असतांना सुद्धा प्रेरणादायी व आदर्शभूत वाटतात. त्यांच्या या हिंदवी स्वराज्य स्थापनेच्या प्रक्रियेत शहाजी भोसले यांचे महत्वपूर्ण योगदान राहिलेले आहे.

शहाजी राजे भोसले हे छत्रपती शिवाजी महाराजांचे वडील होते. त्यांच्या जन्म दिनांकाबाबत विद्वानांमध्ये मतभेद असले तरी सर्वसाधनांचा अभ्यास केल्यास दि. १८ मार्च १५९४ हा त्यांचा जन्म दिनांक निश्चित होता. या भोसल्यांचे मुळगाव वेरूळ होय. वेरूळ हे मराठवाड्यातील औरंगाबाद शहरापामून खुलताबाद-दौलताबाद मार्गे अवघ्या २७ किलोमीटर अंतरावर आहे. २० उत्तर अक्षांश आणि ७५.२० पूर्व रेखांशावर वेरूळ वसलेले आहे. येथिल शिल्परत्न हे जगप्रसिद्ध आहे. शहाजी राजे यांच्या घराण्याचा थेट संबंध हा मेवाडच्या शिसोदे घराण्याची जोडला जातो. शहाजी काळातील जयराम पिण्डे यांनी आपल्या राधामाधवविलासचंपू या ग्रंथामध्ये शहाजीचे कुळनाम भोसले असल्याचे स्पष्ट उल्लेख केला आहे. तसेच वंशनाम हे शिसोदे असल्याचे दर्शविले आहे. या घराण्यातील भोसाजी यांच्या नावावरून त्यांच्या वंशजाना महाराष्ट्रात भोसले हे कुळनाव प्राप्त झाल्याचे मांडलेले आहे.

शहाजीचे वडील मालोजी भोसले यांचा इदापूरच्या लढाईत मृत्यू झाला. त्यानंतर निजामशाहाने २ ऑगस्ट १६०६ रोजी शहाजी राजांना पंचहजारी मनसबदारी दिली. वयाच्या १२ व्या वर्षी त्यांना मनसबदारीची सुत्रे हातात मिळाल्याने त्यांना लहानपणीच राज्य कारभाराची ओळख झाली. एवढेच नव्हे तर ते लष्करी व राजकारण यामध्ये निष्णात झालेत. परीणामी निजामशाहीचा वजीर मलिक अंबर याने मालोजीची जहागिरी शहाजीकरीता कायम ठेवली. मलिक अंबरचा हा विश्वास शहाजीने कायम ठेवला. कारण मोगलांनी निजामशाहीवर आक्रमण केले असता, भातवडी या ठिकाणी घनघोर युद्ध झाले. झालेल्या लढाईत शहाजी राजे यांनी विशिष्ट प्रकारची व्यवस्था करून आदिलशाही व मोगलशाहीचा दारूण पराभव केला. परीणामी शहाजी भोसले यांची प्रतिष्ठा वाढली. त्यानंतर त्यांनी नवरसपूरचा संपुर्ण विध्वंस केला. सोलापूरला वेढा दिला. त्यानंतर त्यांनी आदिलशाही व मोगलशाहीमध्ये सुद्धा चाकरी केली. त्यामुळे त्यांना शिवाजीच्या या तिन्ही शत्रूंचा जवळून अभ्यास करता आला. या अभ्यासाचा फायदा हा शिवाजीला निश्चितच झाला असावा. मलिक अंबर यांच्या मृत्यूनंतर शहाजीने आदिलशाही सोडून परत निजामशाहीत प्रवेश केला. यावेळेस त्यांना सुपे, पुणे, इदापूर परगणे व मावळचा काही भाग जहागीर



म्हणून प्राप्त झाला. त्यानंतर त्यांनी कर्नाटकामध्ये आपला जम बसविला. या कर्नाटकामध्ये सुद्धा त्यांना २५ नोव्हेंबर १९३७ रोजी च्या फर्मानानुसार कर्नाटक, कन्हाड व वाई परगण्यातील निम्मेगांवाचा पंचहजारी संरजाम मिळाला.

शहाजी भोसली यांनी कर्नाटक व महाराष्ट्रात जहांगिरी प्राप्त केल्यानंतर शिवाजी महाराजांच्या हिंदवी स्वराज्य स्थापनेकरीता महत्वपूर्ण योगदान दिले. त्यानुसार सर्व प्रथम त्यांनी शिवाजीला शिक्षण दिले. या शिक्षणाकरीता दादोजी कोंडदेव यांची नियुक्ती केली. लष्करी व शैक्षणिक दृष्ट्या शिवाजीला परिपूर्ण केल्यानंतर अनेक भाषांचे ज्ञान दिले. योग्य असे संस्कार दिलेत. त्यामुळे शिवाजीच्या व्यक्तिमत्त्वास आकार आला. परिणामी शिवाजी राजे भोसले यांनी शहाजीच्या ९० मैल लांब, १२ ते १४ मैल रुंद अशा जहांगिरीची योग्य अशी राखण केली.

शिवाजी महाराजांनी आपल्या स्वराज्याचा श्रीगणेश हा १६४३ ला मुरुबंगड जिंकून केला. त्यानंतर तोरणा किल्ला ताब्यात घेतला. त्यांच्या या कार्याने आदिलशाही नाराज झाली. परंतु त्यांनी शिवाजी विरोधात कार्यवाही केली नाही. याचे मुळे कारण आदिलशाहास शहाजी राजे भोसले यांची भिती वाटत असावी. त्यानंतर १६४७ ला शिवाजीने आदिलशाहाचा पुरंदरचा किल्ला मिळविला. या पुरंदरचा किल्लेदार हा महादजी निळकंठराव सरनाईक हा होता. महादजी सरनाईक व शहाजी राजे भोसले यांचे अतिशय स्नेहाचे संबंध होते. त्यामुळेच महादजी निळकंठराव सरनाईक यांनी पुरंदरचा किल्ला शहाजी पुत्र शिवाजी यास हिंदवी स्वराज्य स्थापनेकरीता दिला असावा. परिणामी आदिलशाहावर शहाजीराजांवर संतप्त झाला आणि शहाजी बेसावध असतांना २५ जुलै १६४८ रोजी कैद केले.

शिवाजीचा बंदोबस्त करण्याकरीता आदिलशाहाची पत्नी बडी बेगम साहेब हिने अफजलखान यास १०००० सैन्य घेवून शिवाजीवर पाठविले १० नोव्हेंबर १६५९ ला अफजलखानाचा वध करण्यात आला. या मोहीमेमध्ये शिवाजीला शहाजीराजांची फौज घेवून सवराज्यावर झाला तेव्हाच शहाजी भोसले यांनी सतरा हजाराची फौज घेवून सिमेवर कडा पहारा दिला. जेणेकरून अफजलखानाच्या मदतीला आदिलशाहीने आणखी सैन्य पाठवू नये. त्यामुळेच अफजलखानाचा वध होताच शहाजी राजे आपली फौज घेवून पुढील स्वारीवर गेलेले दिसून येतात.

शिवाजी महाराजांच्या जिबनातील मोठ्या संकटापैकी पन्हाळ्याचा वेढा हा प्रसंग अत्यंत महत्त्वाचा आहे. आदिलशाहीचा सरदार सिददी जोहर या हबशी सरदाने शिवाजी बंदोबस्ताची मोहीम स्वतःहून स्विकारली. या स्वारीचा वृत्तांत हा ९१ कलमी बखरी च्या कलम ३६, ३७, ३८, ३९, ४० मध्ये दिलेला आहे. तसेच इंग्रजांच्या १० जून व १६ डिसेंबर १६६० च्या पत्रव्यवहारात सुद्धा दिसतो. या नुसार सिददी जोज या हबशी अंब्रेसिनिसन गुलामासोबत शहाजी भोसले यांचे अत्यंत स्नेहाचे संबंध होते. त्याने शहाजीच्या सल्ल्यानुसारच कर्नाटकातील कर्नुल येथिल जहांगिरी जबरदस्तीने हडप केली होती. आपण आदिलशाहीच्या विरोधात केलेल्या बंडखोरीमुळे आदिलशाही सैन्य कर्नुल घेण्यास निश्चित येईल याची त्याला खात्री होती. याच परिस्थितीत आदिलशाही हि प्रचंड अडचणीस होती. अशा अडचणीच्या समयी आदिलशाहीस मदत केल्यास आपल्या कर्नुल येथिल जहांगिरीस आदिल शाही मान्यता देईल असे त्यास वाटत असावे. याचवेळी आदिलशाहीकरीता बंडखोर सरदार म्हणून शहाजी भोसले हे सुद्धा चर्चेत होते. या दोन्ही बंडखोर सरदारांचा कर्नाटकातील मुक्काम, त्यानंतर सिददी जोहरचा पन्हाळा किल्ल्यास वेढा व शिवाजीची वेढयातून सुटका ह्या बाबी अनेक प्रश्न उपस्थित करतात.

मोगली सरदार शाहीस्तेखान हा स्वराज्यावर चाल करून आला असतांना, सिददी जोहर याने २ मार्च १६६० रोजी पन्हाळा किल्ल्यास वेढा दिला. या किल्ल्यावर शिवाजी महाराज असल्यामुळे स्वराज्यावर आलेले हे फार मोठे संकट होते. या संकटावर मात करतांना शिवाजीस शहाजीची निश्चितच मदत झाली. पन्हाळा किल्ल्यावरील जनावरांचे वैरण संपले होते. अन्नधान्याच्या टंचाईमुळे लोक, अडचणीत आले होते.



त्यामुळे शिवाजीने सिददी जोहरकडे दूत पाठविले, नजराणा पाठविला. त्यानंतर शहाजी महाराजांच्या मदतीने बोलणी सुद्धा केली असावी. कारण १३ जुलै १६६० ला अंधाच्या रात्री भर पावसामध्ये शिवाजी महाराजांनी किल्यातून सुटका करून विशाळगडाकडे प्रयान केले. शिवाजी महाराज पन्हाळा किल्ल्यावरून एकटे बाहेर पडले नाहीत तर सोबत १००० शिपाई १५ उमदे घोडे व दोन पालख्या घेवून बाहेर पडलेले होते. याची कल्पना सिददी जोहर यास येवू नये हि अशक्य बाब आहे. तसेच शिवाजीच्या सुटकेनंतर अफजलखान पुत्र फाजलखान याने सिददी जोहर याचेवर केलेले आरोप, तसेच आदिलशहास सिददी जोहर याचेवर विश्वासघाताना केलेला आरोप तथा विजापूरवरून स्वतः आदिलशहा सिददी जोहर यामुळे शिक्षा देण्यास पन्हाळा किल्याकडे येणे. ह्या सर्व बाबी शहाजी व सिददी जोहर यांच्यातील समझोत्याकडे अंगुलीनिर्देश करतात. त्यानुसार शहाजी भोसले यांनी सिददी जोहर यांच्याशी संधान साधून त्यास कर्नाटकातील त्याच्या जहागिरीस संरक्षणाची हमी देवून तथा आगावूचा प्रदेश जिंकण्याची खात्री देवून शिवाजीची सुटका केली असावी. त्यामुळे या स्वारीत शहाजींनी अतिशय महत्वपूर्ण मदत ही शिवाजीस झाल्याचे स्पष्ट होते.

शिवाजी महाराजांच्या स्वराज्य निर्मिती मध्ये शाहीस्तेखानाची स्वारी ही फार मोठे स्वराज्यावरील संकट होते. कारण भारतातील मोगली सत्तेचे ते आव्हान होते. याचवेळी शिवाजी महाराज पन्हाळा किल्यावर अडकले होते. या पन्हाळा किल्यावरून शहाजींच्या मदतीने शिवाजीची सुटका झाली. त्यानंतर शिवाजीने लाल महालावर ५ एप्रिल १६६३ रोजी छापा टाकण्याचे ठरविले होते. या छाप्याच्या वेळी पुण्याच्या सिंगड मार्गावर मोगल सरदार जसवंतसिंह हा १०००० सैन्य घेवून तैनात होता. मात्र त्याने यावेळी शिवाजीचा पाठलाग केला नाही किंवा शिवाजीला विरोध सुद्धा केला नाही. तर तो शाहीस्तेखानाचा हितशत्रू सुद्धा नव्हता. या सर्व बाबींचा विचार केल्यास असे स्पष्ट होते की, शहाजी भोसले यांनी जसवंतसिंहाशी संधान साधून शिवाजीच्या शहिस्तेखान छापा मोहीमेकरीता जसवंतसिंहांस शांत केले असावे. या संदर्भात कोणतेही पुरावे उपलब्ध नसले तरी तत्कालीन सर्व प्रसंग व घटनाक्रमावरून हे अगदी स्पष्ट होते.

शिवाजीचे शिक्षण, बालपण, लाहनपणातच आपल्या जहांगीरीची सोपविलेली जबाबदारी, कर्नाटक व महाराष्ट्रातील जहागिरीचा वारसा, अफजलखानाची स्वारी, सिददी जोहरचा पन्हाळा वेढा, शाहीस्तेखान स्वारी व लाल महालावरील छापा या सर्व बाबींचा सुक्ष्मपणे अभ्यास केल्यास एक बाब स्पष्ट होते की, शिवाजी महाराजांच्या हिंदवी स्वराज्य निर्मितीमध्ये एक मराठा सरदार व वडील म्हणून शहाजी भोसले यांचे योगदान अतिशय महत्वाचे ठरते.

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Duff, Grant-The History of the Marathas, commonwealth publisher Delhi, 2002
2. Pagadl, Setu Madhavrao - Chhatrapati Shivaji, Contiene - Pune 1974
3. Sarkar, J.N.-Fall of the Mughal Empire, Vol. I publorient Blockswas, Delhi, 1991
4. कुटे, भ. ग. - अहमदनगरची निजामशाही, अनुवाद बुद्धाने मासिरी या फारसी ग्रंथाचा मराठी अनुवाद, १९६२
5. देशमुख, विजय - शककर्ते शिवराय, छत्रपती सेवा प्रतिष्ठान नागपूर २०१०
6. देशमुख, पी.एन. - मराठ्यांच्या इतिहासाचा मागोवा, पूर्वाभ, ऋचा प्रकाशन, नागपूर २००१
7. वेद्रे, वा. सी. - मालोजी राजे आणि शहाजी महाराज, पार्श्व पब्लिकेशन फोल्हापूर २०१३
8. सरदेसाई, गो. स. - मराठी रियासत शहाजी राजे भोसले, दुसरी आवृत्ती मुंबई १९७५
9. हेरवाडकर, र. बी. - श्री. शिवछत्रपतींचे सप्तप्रकरणालाक परीच, गल्हार रामराव चिटणीस विरचित बदलापूर, ठाणे १९६७
10. ११ कलमी बखर - शिवछत्रपतींची ११ कलमी बखर, वि. स. वाकराकर, विविध ज्ञान विस्तार, ऑगस्ट १९२९ ते सप्टेंबर ऑक्टोबर १९३०



*ISSN: 2394-207X (Print)*

*IMPACT FACTOR : 4.205*

**INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED  
AND MULTILINGUAL STUDIES**



**- Published by -  
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND  
MULTILINGUAL STUDIES**

Sneh Apartment, Flat No. 001,  
Samarth Nagar, New Sangvi, Pune- 411027.  
Mobile No. 919766076143/919766751104,  
Email: [ijmms14@gmail.com](mailto:ijmms14@gmail.com)  
Website: [www.ijmms.in](http://www.ijmms.in)